देश विदेश की लोक कथाऐं — जानवर–गाइड ः

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता
2022

Cover Title : Jab Janvaron Ne Rasta Dikhaya (When Animals Guided)
Cover Page picture : Birds Perched on a Tree
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया 7

1 हरा नाइट 9

2 शापित सॉप 36

3 रशैन कोटी 53

4 एक सुन्दर लड़की और सात दूसरी लड़कियॉ 63

5 श्वेत वसन्त की कहानी 77

6 राजकुमार शबर की कहानी 101

7 लॅगड़ा कुत्ता 122

8 अन्यायी राजा और नीच सुनार 140

9 नागरे और हीमाल 147

10 हीरामन की कहानी 173

12 बहादुर राजकुमारी 190

13 जादूगरनी और सूरज की बहिन 202

14 नहीं जानता 210

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया

साधारणतया इन्सान इन्सान से ही सलाह लेता है इन्सान ही उसको रास्ता दिखाता है और इन्सान ही एक दूसरे को उनकी मंजिल तक पहुँचाते हैं। पर यहाँ हम कुछ ऐसी लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें कुछ लोगों को इन्सानों ने नहीं बल्कि जानवरों या पक्षियों ने रास्ता दिखाया है। उन्होंने ही उनको बताया है कि उनकी मुसीबत कैसे दूर हो सकती है या फिर उनकी समस्या का हल क्या है। है न कुछ अजीब सी बात। तो लो इन कथाओं को पढ़ो और देखो कि जानवरों की सहायता से लोगों ने अपनी मुसीबतें कैसे दूर कीं या फिर अपनी समस्याओं का हल कैसे पाया।

ये इतनी सारी लोक कथाऐं "जब जानवरों ने रास्ता दिखाया" हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं। आशा है ये सब कहानियाँ तुम सबको पसन्द आयेंगीं।

1 हरा नाइट[1]

यह लोक कथा नौर्स देशों के पॉच देशों में से डेनमार्क देश में कही सुनी जाती है। यह लोक कथा यूरोप में सबसे ज़्यादा प्रचलित लोक कथा है और सिन्डरैला की लोक कथा से काफी मिलती जुलती है।

एक बार की बात है कि डेनमार्क में एक राजा और रानी अपनी बेटी के साथ रहते थे। उनकी बेटी अभी छोटी ही थी कि रानी बहुत बीमार पड़ गयी और उसी बीमारी में वह चल बसी।

जब रानी को यह पता चला कि अब वह ज़्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रहने वाली तो उसने राजा को बुलाया और उससे कहा — "प्रिये, ताकि मैं शान्ति से मर सकूँ इसके लिये तुम मुझसे एक वायदा करो। कि मेरी बेटी जो कुछ भी मॉगेगी अगर वह तुम उसको दे सकते होगे तो वह चीज़ उसको जरूर दोगे। किसी चीज़ के लिये मना नहीं करोगे।"

इस वायदे के लेने के कुछ समय बाद ही रानी चल बसी। रानी के जाने के बाद राजा का दिल टूट गया क्योंकि वह अपनी रानी को बहुत प्यार करता था। वह अपनी बेटी को भी बहुत प्यार करता था सो वह केवल अपनी बेटी को देख कर ही ज़िन्दा था।

---

[1] The Green Knight – a fairy tale from Denmark, Europe. This story taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/greenknight.html edited by DL Ashliman.
DL Ashliman took it from, "Danish Fairy Tales", by Svendt Grundtvig, translated by J Grant Cramer. Boston, Richard G Badger. 1912. pp. 22-37.

राजकुमारी अपनी मॉ के लिये हुए वायदे के साथ बड़ी होने लगी। राजा के लिये बेटी की मॉ के साथ किये हुए वायदे को निभाना कोई मुश्किल काम नहीं था।

पर इस वायदे को निभाने ने उसकी बेटी को थोड़ा बिगाड़ दिया था नहीं तो वह एक बहुत अच्छी बच्ची थी जिसको एक मॉ की जरूरत थी जो उसको प्यार कर सके। इस प्यार की कमी की वजह से वह कभी कभी उदास हो जाती और कभी बेकार में ही गुस्सा भी हो जाती।

उसको दूसरे बच्चों की तरह से खेलना अच्छा नहीं लगता बल्कि वह अकेली बागीचों और जंगलों में घूमती रहती। उसको फूलों और चिड़ियों से बहुत प्यार था और उसको कहानियॉ और कविताऐं पढ़ने का भी बहुत शौक था।

महल के पास ही एक काउन्ट[2] की पत्नी रहती थी। काउन्ट तो मर गया था पर उसके एक बेटी थी जो राजकुमारी से थोड़ी सी बड़ी थी। वह अब उसी के साथ रहती थी।

काउन्टैस की वह नौजवान बेटी कोई बहुत अच्छी लड़की नहीं थी। वह एक बहुत ही बेकार, स्वार्थी और बहुत ही पत्थर दिल लड़की थी। पर अपनी मॉ की तरह वह चतुर बहुत थी और जब

[2] Count - Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

भी वह देखती कि कहीं उसका कोई काम बनने वाला है तो वह अपने विचारों को छिपा भी लेती थी।

बड़ी काउन्टैस ने ऐसे ऐसे तरीके निकाल रखे थे जिससे कि उसकी अपनी बेटी राजकुमारी के साथ ही रहे इसलिये मॉ और बेटी दोनों ही राजकुमारी को खुश रखने में लगी रहतीं।

उन दोनों के बस में जो कुछ भी होता वे उसको खुश रखने के लिये उसके लिये किसी भी तकलीफ को उठा कर करतीं। उसकी परेशानी को दूर करने के लिये उन दोनों में से जल्दी ही उसके पास कोई न कोई पहुॅच जाता।

बड़ी काउन्टैस तो यही चाहती थी और इसके लिये वह मेहनत भी बहुत कर रही थी ताकि समय आने पर वह अपनी बात पर आ सके।

सो जब वह समय आ गया तो एक दिन बड़ी काउन्टैस ने अपनी बेटी से राजकुमारी से रोते हुए यह कहने के लिये कहा कि अब वे दोनों अलग हो जायेंगी क्योंकि वह अपनी मॉ के साथ किसी दूसरे देश जा रही है।

यह सुनते ही छोटी राजकुमारी बड़ी काउन्टैस के पास भागी गयी और बोली कि उसको अपनी बेटी को साथ ले कर वहॉ से नहीं जाना चाहिये।

छोटी राजकुमारी की बात सुन कर काउन्टैस ने उसके साथ बहुत सहानुभूति का बहाना किया और उससे कहा कि उसके वहॉ

उस देश में रुकने का अब केवल एक ही तरीका है और वह यह कि राजा उससे शादी कर ले। उसके बाद दोनों मॉ बेटी उसके पास हमेशा के लिये रह सकती थीं।

फिर उन्होंने उसको सब्ज़ बाग दिखाये कि जब वे वहॉ रहेंगी तो वे उसी की हो कर रहेंगी।

यह सुन कर राजकुमारी अपने पिता के पास गयी और उनसे उसने बड़ी काउन्टैस से शादी करने की प्रार्थना की। क्योंकि अगर उसने उससे शादी नहीं की तो वह अपनी बेटी के साथ चली जायेगी और उसकी अपनी बेटी की अकेली दोस्त भी चली जायेगी और उस दोस्त के बिना तो वह मर ही जायेगी।

राजा उसको समझाते हुए बोला — "अगर मैंने ऐसा किया तो बेटी यह कर के तुम बहुत पछताओगी। और साथ में मैं भी। क्योंकि मेरी शादी करने की कोई इच्छा नहीं है और मुझे उस धोखेबाज काउन्टैस और उसकी धोखेबाज बेटी का कोई भरोसा भी नहीं है।"

पर राजकुमारी का रोना नहीं रुका। वह उससे जिद करती ही रही जब तक कि वह काउन्टैस से शादी करने पर राजी नहीं हो गया और उसने राजकुमारी की इच्छा पूरी नहीं की।

राजा ने काउन्टैस से शादी करने के लिये पूछा तो काउन्टैस तो पहले से ही तैयार बैठी थी वह तुरन्त ही राजी हो गयी। जल्दी ही

उन दोनों की शादी हो गयी। अब काउन्टैस रानी बन गयी और छोटी राजकुमारी की सौतेली मॉ बन गयी।

पर जैसे ही काउन्टैस रानी बन कर महल में आयी सब कुछ बदल गया। रानी ने अपनी सौतेली बेटी यानी राजकुमारी को बजाय प्यार से रखने के उसको चिढ़ाना और तंग करना शुरू कर दिया। उसकी ज़िन्दगी दूभर करने के लिये वह जो कुछ कर सकती थी अब वह उसने सब करना शुरू कर दिया था।

राजा ने भी यह सब देखा। वह इस सबसे बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था।

एक दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "ओह मेरी प्यारी बेटी, तुम्हारी ज़िन्दगी तो बहुत ही खराब हो गयी। तुम भी यह सोच कर पछताती तो होगी कि तुमने मुझसे क्या मॉगा। देखो जैसा मैंने तुमसे पहले कहा था वैसा ही हुआ। पर अब तो हम दोनों की बदकिस्मती से बहुत देर हो चुकी है।

मुझे लगता है कि तुमको अब हमको कुछ दिनों के लिये छोड़ देना चाहिये। तुम ऐसा करो कि टापू पर बने मेरे गर्मी वाले महल में चली जाओ। वहॉ तुम कम से कम शान्ति से तो रह सकोगी।"

हालॉकि उन दोनों के लिये अलग होना बहुत मुश्किल था फिर भी राजकुमारी पिता की बात मान गयी।

यह बहुत जरूरी भी था क्योंकि वह अपनी नीच सौतेली मॉ और अपनी नीच सौतेली बहिन के बुरे व्यवहार को और ज़्यादा नहीं सह सकती थी।

उसने अपने साथ अपनी दो दासियॉ लीं और अपने पिता के गर्मी वाले महल में टापू पर रहने चली गयी। उसका पिता कभी कभी उससे मिलने के लिये वहॉ आ जाता था।

वहॉ आ कर वह देखता कि उसकी बेटी सौतेली मॉ के साथ घर में रहने की बजाय इस महल में रह कर ज़्यादा खुश थी।

इस तरह से वह एक बहुत सुन्दर, दयावान, भोलीभाली और दूसरों के बारे में सोचने वाली लड़की की तरह बड़ी होती रही। वह आदमियों और जानवरों सब पर दया करती।

पर वह सचमुच में खुश नहीं थी। वह हमेशा ही उदास रहती। उसके दिल में हमेशा ही यह इच्छा रहती कि उसके पास जो कुछ भी इस समय है उसको इससे कुछ ज़्यादा अच्छा मिल सकता है।

एक दिन उसका पिता उससे विदा लेने के लिये आया क्योंकि उसको किसी लम्बी यात्रा पर जाना था।

वहॉ उसको राजाओं और कुलीन लोगों की एक मीटिंग में हिस्सा लेना था जो कई देशों से आने वाले थे और वह मीटिंग काफी दिनों तक चलने वाली थी सो वह काफी दिनों तक लौटने वाला नहीं था।

राजा अपनी बेटी को खुश करने के लिये बोला कि वहाँ वह उसके लिये अगर कोई अच्छा राजकुमार मिलेगा तो ढूँढेगा जिससे वह उसकी शादी कर सके।

तो राजकुमारी ने जवाब दिया — "पिता जी, इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद। पर अगर आपको कहीं हरा नाइट[3] मिल जाये तो उसको मेरी तरफ से नमस्ते कहियेगा और उससे कहियेगा कि मैं उसको बहुत चाहती हूँ और उसका इन्तजार कर रही हूँ। क्योंकि केवल वही मुझे मेरे इस दुख से छुटकारा दिला सकता है और दूसरा कोई नहीं।"

जब राजकुमारी ने यह कहा तो वह चर्च के हरे ऑगन के बारे में सोच रही थी जिसमें बहुत सारे हरे हरे मिट्टी के ढेर[4] खड़े हुए थे क्योंकि उस समय वह मौत के बारे में सोच रही थी।

पर राजा यह बात नहीं समझ सका। उसको अपनी बेटी का इस अजीब से नाइट के लिये अजीब सा सन्देश सुन कर बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि उसने तो ऐसे नाइट का नाम पहले कभी नहीं सुना था।

[3] Green Knight - A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

[4] Translated for the words "Green Mounds" – small soil mounds on which grass was growing. In fact they were the graves.

पर क्योंकि वह अपनी बेटी की हर इच्छा पूरी करने का आदी था इसलिये उसने अपनी बेटी से कहा कि अगर उसको हरा नाइट कहीं मिल गया तो वह उसका सन्देश उसको जरूर दे देगा।

फिर उसने अपनी बेटी को विदा कहा और राजाओं की मीटिंग मे हिस्सा लेने के लिये अपनी यात्रा पर चल दिया।

उस मीटिंग में उसको बहुत सारे राजकुमार मिले, नौजवान कुलीन लोग और नाइट मिले पर हरा नाइट उसे कहीं नहीं मिला। इसलिये राजा अपनी बेटी का सन्देश भी उसको नहीं दे सका।

मीटिंग खत्म हो गयी थी सो राजा घर लौटने लगा। उसको ऊँचे ऊँचे पहाड़ पार करने थे, चौड़ी चौड़ी नदियॉ पार करनी थीं और घने जंगल पार करने थे।

एक दिन जब राजा अपने लोगों के साथ एक घने जंगल से गुजर रहा था तो वे सब एक बड़ी सी खुली जगह में आ गये जहॉ हजारों सूअर चर रहे थे। ये सूअर जंगली नहीं थे बल्कि पालतू थे। उनके साथ उनका चराने वाला भी था।

वह सूअर चराने वाला एक शिकारी की पोशाक पहने अपने कुत्तों से घिरा हुआ एक छोटे से टीले पर बैठा हुआ था। उसके हाथ में एक पाइप था जिसको वह बजा रहा था। सारे जानवर उसके संगीत को सुन रहे थे और उसका कहना मान रहे थे।

राजा को पालतू सूअरों के इस झुंड पर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उसने अपना एक आदमी उस सूअरों के रखवाले के पास यह जानने के लिये भेजा कि वे सारे सूअर किसके थे।

उस रखवाले ने जवाब दिया कि वे सारे सूअर हरे नाइट के थे। यह सुन कर राजा को अपनी बेटी की बात याद आ गयी सो वह खुद उस आदमी के पास गया और उससे पूछा कि क्या वह हरा नाइट कहीं पास में ही रहता था।

उस सूअर चराने वाले ने जवाब दिया "नहीं, वह पास में तो नहीं रहता। वह तो वहॉ से बहुत दूर पूर्व की तरफ रहता है।"

अगर राजा उस दिशा की तरफ चला जाये तो उसको जानवरों के दूसरे झुंड चराने वाले मिलेंगे वे उसको उस हरे नाइट के किले का रास्ता बता देंगे।

राजा यह सुन कर अपने आदमियों के साथ पूर्व की तरफ चल दिया। वह उधर की तरफ जंगल में हो कर तीन दिन तक चलता रहा। वह फिर से एक मैदान में आ निकला जिसके चारों तरफ जंगल ही जंगल था। वहॉ मूज़[5] और जंगली बैलों के बहुत बड़े बड़े झुंड चर रहे थे।

[5] The moose (North America) or elk (Eurasia) is the largest extant species in the deer family. Moose are distinguished by the palmate antlers of the males; other members of the family have antlers with a "twig-like" configuration. Moose typically inhabit in forests of the Northern Hemisphere in temperate to subarctic climates. See its picture above.

यहॉ भी उन जानवरों को चराने वाला शिकारी की पोशाक पहने था और उसके साथ भी कुत्ते थे।

राजा अपने घोड़े पर सवार उस रखवाले के पास गया और उससे पूछा कि वे जानवर किसके थे। उसने जवाब दिया कि वे हरे नाइट के थे जो पूर्व की तरफ और आगे की तरफ रहता था।

राजा फिर से पूर्व की तरफ तीन दिनों तक चला और फिर से एक मैदान में निकल आया जहॉ उसको बहुत सारे नर और मादा बारहसिंगा[6] चरते नजर आये। उनका रखवाला भी उनके साथ था।

जब राजा ने उससे पूछा कि वे जानवर किसके हैं तो उसने भी यही कहा कि वे जानवर हरे नाइट के हैं।

राजा ने पूछा कि हरे नाइट का किला कहॉ है तो उसने बताया कि वह वहॉ से पूर्व की तरफ ही एक दिन की दूरी पर है।

राजा वहॉ से हरे हरे जंगलों में से हो कर जा रहे हरे हरे रास्तों पर फिर पूर्व की तरफ चला तो एक दिन में ही एक बड़े से किले तक आ पहुॅचा। वह किला भी हरा था क्योंकि वह सारा किला बहुत सारी बेलों से ढका हुआ था।

जब राजा और उसके आदमी सब उस किले के पास तक पहुॅचे तो उस किले में से बहुत सारे आदमी शिकारियों की हरे रंग की

[6] Translated for the word “Stag”. It is a kind of deer (male) and doe (female) with a different horn structure. See its picture above.

पोशाक पहने बाहर आये और उनको किले के अन्दर ले गये। अन्दर जा कर उन्होंने घोषणा की कि फलॉ फलॉ राज्य के राजा आये हैं और वह वहॉ के राजा से मिलना चाहते हैं।

यह सुन कर उस किले का मालिक बाहर आया – एक लम्बा सुन्दर नौजवान हरे कपड़े पहने हुए। उसने अपने मेहमान का स्वागत किया और उसकी शाही तरीके से आवभगत की।

राजा बोला — "आप बहुत दूर रहते हैं और आपका राज्य भी बहुत बड़ा है। मुझको अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने के लिये बहुत दूर तक चलना पड़ा।

जब मैं राजाओं की मीटिंग में हिस्सा लेने के लिये चला था तो मेरी बेटी ने मुझसे कहा था कि मैं उसकी तरफ से हरे नाइट को नमस्ते करूॅ।

और यह भी कहा था कि मैं उसको कहूॅ कि वह उसको कितना चाहती है और वह उसका इन्तजार कर रही है क्योंकि केवल वही एक उसको उसके दुखों से छुटकारा दिला सकता है।

मैं अपनी बेटी का यह एक बहुत ही अजीब सा काम ले कर चला था, क्योंकि मुझे तो यह काम कम से कम अजीब सा ही लगा पर मेरी बेटी जानती है कि वह क्या कह रही थी।

इसके अलावा जब उसकी मॉ मर रही थी तब मैंने उसकी मॉ से यह वायदा किया था कि मैं उसकी बेटी की हर इच्छा पूरी करूॅगा।

इसलिये भी मैं अपनी रानी से किया गया अपना वायदा निभाने के लिये और उसका सन्देश देने के लिये यहाँ आया हूँ।"

यह सुन कर हरा नाइट बोला — "आपकी बेटी ने जब आपसे यह सब कहा तब वह बहुत दुखी थी और यह मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि जिस समय उसने आपको यह सन्देश दिया वह मेरे बारे में नहीं सोच रही थी। क्योंकि मेरे बारे में तो वह सोच ही नहीं सकती थी।

शायद वह चर्च के ऑगन में जो मिट्टी के हरे ढेर बने रहते हैं उनके बारे में सोच रही थी जहाँ वह खुद अकेले आराम करना चाहती थी। पर शायद मैं उसको उसके दुख को कम करने के लिये उसके लिये आपको कुछ दे सकता हूँ।

आप यह छोटी सी किताब ले जाइये और जा कर राजकुमारी को दे दीजियेगा। और उससे कहियेगा कि जब भी वह दुखी हो या उसका दिल भारी हो तो वह अपनी पूर्व की तरफ की खिड़की खोले और यह किताब पढ़े। मुझे यकीन है कि इस किताब को पढ़ कर उसका दिल जरूर खुश होगा।"

यह कह कर उस हरे नाइट ने राजा को एक छोटी सी हरी किताब थमा दी। राजा ने उस किताब को खोल कर देखा तो वह उसको पढ़ नहीं सका क्योंकि वह उसमें इस्तेमाल किये गये अक्षरों को ही नहीं पहचान सका जिसमें उसमें लिखे शब्द लिखे गये थे।

फिर भी उसने हरे नाइट से वह किताब ले ली और उसको उसके स्वागत और उसकी आवभगत के लिये धन्यवाद दिया। उसने नाइट को विश्वास दिलाया कि उसको वाकई बहुत अफसोस था कि उसने इस तरह आ कर उसको परेशान किया। राजकुमारी का ऐसी कोई इरादा नहीं था।"

हरे नाइट ने राजा से किले में रात भर ठहरने के लिये प्रार्थना की कि वह सुबह होते ही अपने राज्य चला जाये। असल में तो वह राजा को और ज़्यादा समय के लिये भी रखना चाहता था पर राजा ने उससे कहा कि वह और ज़्यादा नहीं रुक सकता था क्योंकि अगले दिन तो उसको जाना ही था।

सो अगले दिन सुबह राजा ने अपने मेज़बान को विदा कहा और उसी रास्ते से वापस चल दिया जिससे वह आया था। वह वहॉ तक आ गया जहॉ उसने सबसे पहले सूअर देखे था फिर वहॉ से वह सीधे अपने घर आ गया।

घर आ कर सबसे पहले वह उस टापू पर गया जिस पर उसकी बेटी रहती थी। वह वहॉ गया और जा कर राजकुमारी को वह हरी किताब दी।

जब राजा ने राजकुमारी को हरे नाइट के बारे में बताया और उसकी नमस्ते और हरी किताब दी तो उसका मुँह तो आश्चर्य से खुला का खुला रह गया क्योंकि उसने तो कभी यह सोचा ही नहीं

था कि हरा नाइट नाम का कोई आदमी भी होगा। और आदमी होना तो दूर वह इस धरती पर भी कहीं होगा।

उसी शाम जब उसके पिता चले गये तो उसने पूर्व की तरफ की खिड़की खोली और वह किताब पढ़नी शुरू की हालॉकि वह किताब उसकी अपनी भाषा में नहीं लिखी थी। उस किताब में बहुत सारी कविताऐं थीं और उनकी भाषा बहुत सुन्दर थी। सबसे पहले जो उसने पढ़ा वह यह था —

समुद्र पर हवा चल निकली है,
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है,
और जब धरती पर शान्त रात छाती है,
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बॉधेगा?

जब वह इस पहली कविता की पहली लाइन पढ़ रही थी तो उसको साफ साफ लगा कि समुद्र पर हवा चलने लगी थी। जब उसने उस कविता की दूसरी लाइन पढ़ी तो उसने पेड़ों की पत्तियों के हिलने की आवाज सुनी।

जब उसने उस कविता की तीसरी लाइन पढ़ी तो उसकी जो दासियॉ थीं और जो भी किले के आस पास थे सब गहरी नींद में सो गये। और जब उसने कविता की चौथी लाइन पढ़ी तो वह हरा नाइट खुद चिड़िया का रूप रख कर खिड़की में से अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर वह आदमी के रूप में आ गया और राजकुमारी को बहुत ही नम्रता से नमस्ते की। उसने राजकुमारी से कहा कि वह डरे नहीं।

उसने उससे यह भी कहा कि वह वही हरा नाइट था जिसके पास उसके पिता मिलने के लिये आये थे और जिसकी दी हुई किताब वह पढ़ रही थी।

उस कविता को पढ़ कर उसने उसको खुद ही वहॉ बुलाया था। वह उससे बेहिचक बात कर सकती थी। उससे बात करने से उसका दुख कुछ कम होगा।

यह सुन कर राजकुमारी को हरे नाइट के ऊपर कुछ विश्वास पैदा हुआ तो उसने उस हरे नाइट से अपने मन की सब बातें कह दीं।

उधर उस हरे नाइट ने भी उसके साथ इतनी सहानुभूति और प्यार से बातें कीं कि वह उसकी बातें सुन कर बहुत खुश हो गयी। इससे पहले वह इतनी खुश कभी नहीं थी।

बाद में हरा नाइट बोला कि जब भी वह किताब खोलेगी और वह पहली कविता पढ़ेगी तो वैसा ही होगा जैसा कि आज शाम को हुआ है।

राजकुमारी के सिवा टापू पर सारे लोग सो जायेंगे और वह वहॉ तुरन्त ही आ जायेगा जबकि वह वहॉ से बहुत दूर रहता था। राजकुमार ने कहा कि अगर वह उससे वाकई मिलना चाहेगी वह

उसके पास खुशी से आयेगा। अब वह उस किताब को बन्द कर के रख दे और जा कर आराम करे।

उसी समय राजकुमारी ने किताब बन्द कर दी। किताब बन्द करते ही वह हरा नाइट भी वहॉ से गायब हो गया और टापू वाले सारे लोग जो सो गये थे वे सभी जाग गये। फिर राजकुमारी भी सोने चली गयी।

रात को सपने में भी वह हरे नाइट को ही देखती रही और जो कुछ उसने उससे कहा था वही उसके सपने में भी आता रहा। जब वह सुबह को उठी तो उसका दिल बहुत हल्का था और वह बहुत खुश थी। इतनी खुश वह पहले कभी नहीं हुई थी।

अब वह पहले से ज़्यादा तन्दुरुस्त रहने लगी थी। उसके गालों का रंग गुलाबी हो गया था और अब वह बात बात पर हॅसती और मजाक करती थी।

उसमें यह बदलाव देख कर उसके आस पास के लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ कि राजकुमारी को यह क्या हो गया है। राजा ने कहा कि शाम की हवा और उस छोटी सी हरी किताब ने उसकी ज़िन्दगी में यह बदलाव ला दिया है। राजकुमारी ने कहा कि वह ठीक कह रहा है।

पर यह बात कोई नहीं जानता था कि हर शाम राजकुमारी वह छोटी हरी किताब पढ़ती और हर शाम वह हरा नाइट उसके पास

आता और फिर वे दोनों बहुत देर तक बातें करते रहते और यही उसकी खुशी का भेद था।

तीसरे दिन हरे नाइट ने उसको एक सोने की अँगूठी दी और उन दोनों ने अपनी शादी पक्की कर ली पर तीन महीने से पहले वह उसका हाथ माँगने के लिये उसके पिता के पास नहीं जा सका। उसके बाद ही वह अपनी प्रिय पत्नी को अपने घर ले जा सकता था।

इस बीच राजकुमारी की सौतेली माँ को पता चला कि राजकुमारी की तन्दुरुस्ती तो बहुत अच्छी हो रही है और वह बहुत सुन्दर भी होती जा रही है। वह पहले से कहीं ज़्यादा खुश है।

रानी को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उदास हो गयी क्योंकि वह तो हमेशा से ही यह उम्मीद करती थी कि वह धीरे धीरे दुबली हो जायेगी और फिर मर जायेगी। उसके बाद उसकी अपनी बेटी राजकुमारी बन जायेगी और राज्य की वारिस बन जायेगी।

सो एक दिन उसने अपने दरबार की एक दासी को उस टापू पर राजकुमारी के पास भेजा और उसको कहा कि वह राजकुमारी की इस तन्दुरुस्ती और खुश रहने का भेद पता लगा कर लाये।

अगले दिन वह दासी लौट आयी और उसने आ कर रानी को बताया कि यह सब इसलिये हो रहा था कि राजकुमारी रोज शाम को

अपनी खिड़की खोल कर बैठ जाती थी और एक किताब पढ़ती थी जो उसको किसी अजीब से राजकुमार ने दी थी।

फिर शाम की हवा ने उसको गहरी नींद में सुला दिया और यह हर शाम उसके दरबार की सब स्त्रियों के साथ होता था कि वे सब शाम को इसी तरीके से सो जाती थीं।

उन्होंने उससे यह शिकायत भी की कि यह सब हालात उनको बीमार बना रहे थे जबकि वे ही हालात राजकुमारी की हालत अच्छी कर रहे थे।

अगले दिन रानी ने अपनी बेटी को राजकुमारी के ऊपर जासूसी करने के लिये भेजा और उसको कहा कि वह उसकी सारी हरकतों पर नजर रखे और आ कर उसे बताये।

उसने यह भी कहा कि "इस खिड़की में ही शायद कोई भेद छिपा है। शायद कोई आदमी इसमें से आता है सो उस खिड़की पर ध्यान रखना।"

उसकी बेटी भी अगले दिन लौट आयी पर वह भी रानी को उससे ज़्यादा कुछ नहीं बता सकी जो उसकी दासी ने उसको बताया था। क्योंकि जैसे ही राजकुमारी ने अपनी खिड़की खोली और अपनी वह छोटी किताब पढ़नी शुरू की तो वह सो गयी।

यह सुन कर तीसरे दिन रानी खुद उससे मिलने के लिये गयी। वह राजकुमारी से बहुत ही मीठा व्यवहार कर रही थी। उसने

उसको दिखाया कि वह उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी देख कर कितनी खुश थी।

रानी ने उससे उतने सवाल पूछे जितने वह उससे पूछने की हिम्मत कर सकती थी। पर वह भी जितना उसको मालूम था उससे ज़्यादा और कुछ मालूम नहीं कर सकी।

उसके बाद वह उसकी पूर्व की खिड़की के पास गयी जहॉ वह राजकुमारी हर शाम बैठती थी और अपनी किताब पढ़ती थी। उस खिड़की की अच्छी तरह से जॉच की पर वहॉ भी उसको कोई ऐसी खास चीज़ नहीं मिली जिससे उसकी गुत्थी कुछ सुलझती।

वह खिड़की जमीन से काफी ऊपर थी और उसके आस पास बहुत सारी बेलें लगी हुई थीं जिससे उस पर किसी भी आदमी का चढ़ना नामुमकिन था।

सो रानी ने एक कैंची ली, उसकी नोकों में जहर लगाया और उसको उसकी नोकों को ऊपर कर के खिड़की में अटका दिया पर उसने उसको ऐसे अटकाया कि वह वहॉ किसी को दिखायी न दे।

जब शाम हुई तो रोज की तरह से राजकुमारी अपने हाथ में वह हरी किताब ले कर उस खिड़की के पास बैठी तो रानी ने सोचा कि वह ध्यान रखेगी कि वह किसी तरह भी सोने न पाये जैसा कि पहले दूसरे लोग कर चुके थे पर जब राजकुमारी ने वह किताब पढ़नी शुरू की तो उसके इरादे ने उसकी कोई सहायता नहीं की।

जैसे ही राजकुमारी ने वह किताब पढ़ना शुरू किया तो रानी की पलकें अपने आप ही झुकने लगीं और सबके साथ साथ वह भी गहरी नींद सो गयी।

उसी समय हरा नाइट एक चिड़िया के रूप में वहॉ आया। उसके आने का किसी को पता नहीं चला सिवाय राजकुमारी के। फिर दोनों ने इस बारे में खूब बातें कीं कि बस अब हरे नाइट के राजा के पास जाने का केवल एक हफ्ता ही बचा था।

फिर वह नाइट राजा के दरबार में जा कर उससे राजकुमारी से शादी के लिये उसका हाथ मॉग लेगा। शादी कर के वह उसे अपने घर ले जायेगा और फिर वह उसके हरे किले में हमेशा उसके पास रहेगी।

उसका यह हरा किला भी हरे हरे जंगलों के बीच में बना हुआ था जहॉ से उसका सारा राज्य दिखायी देता था और जिसके बारे में उसने राजकुमारी से कई बार बात की है। बात करने के बाद में हरे नाइट ने उस विदा ली, चिड़िया बना और खिड़की के बाहर उड़ गया।

पर उस समय वह इत्तफाक से उस खिड़की के ऊपर से इतना नीचे उड़ा कि रानी ने जो कैंची खिड़की में लगायी थी उसकी नोक से उससे उसकी एक टॉग में खरोंच आ गयी। उसके मुॅह से एक चीख निकली पर फिर वह जल्दी ही वहॉ से उड़ गया।

राजकुमारी ने जब हरे नाइट की चीख सुनी तो वह कूद कर वहॉ गयी। इस कूदने में उसके हाथ से वह किताब नीचे फर्श पर गिर गयी और बन्द हो गयी। उसके मुॅह से भी एक चीख निकली और रानी और सबकी ऑख खुल गयी।

राजकुमारी की चीख की आवाज सुन कर सब राजकुमारी की तरफ दौड़े गये कि उसको क्या हुआ। उसने उनको बताया कि उसको कुछ नहीं हुआ था और वह ठीक थी। बस उसकी ज़रा सी ऑख लग गयी थी तो उसी में उसने एक बुरा सपना देख लिया।

पर उसी समय से हरे नाइट को बुखार आ गया और उसको बिस्तर पर लिटा दिया गया।

इसी बीच रानी खिड़की में से अपनी कैंची निकालने के लिये खिड़की तरफ खिसक गयी। वहॉ जा कर उसने देखा कि उसकी कैंची की नोक पर तो खून लगा है। उसने उसको तुरन्त ही वहॉ से निकाल कर अपने कपड़ों में छिपा लिया और अपने घर ले गयी।

उधर राजकुमारी सारी रात सो नहीं पायी और दूसरे दिन भी बहुत परेशान रही। फिर भी वह कुछ ताजा हवा लेने के लिये खिड़की के पास जा बैठी।

उसने अपनी पूर्व वाली खिड़की खोली अपनी किताब खोली और रोज की तरह से उसमें से पढ़ने लगी।

समुद्र पर हवा चल निकली है,
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है,

और जब धरती पर शान्त रात छाती है,
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बॉधेगा?

और हवा पेड़ों के बीच से बह निकली, पेड़ों की पत्तियॉ की सरसराहट भी सुनायी दी, राजकुमारी के सिवा उस टापू के सभी लोग सो गये पर हरा नाइट नहीं आया।

इस तरह कई दिन निकल गये। राजकुमारी रोज उस खिड़की को खोल कर बैठती, रोज अपनी किताब पढ़ती, रोज हवा की आवाज सुनती, रोज हवा से होती पत्तों की सरसराहट सुनती पर हरा नाइट नहीं आता।

उसके लाल गाल फिर से पीले पड़ने लगे और उसका दिल फिर से दुखी और नाखुश हो गया। वह फिर से दुबली होने लगी। उसके पिता को यह देख कर बहुत चिन्ता हो गयी कि उसकी हॅसती खेलती बेटी को क्या हो गया पर उसकी सौतेली मॉ को इस बात से बहुत खुशी हुई।

एक दिन राजकुमारी अपने टापू के किले के बागीचे में उदास घूम रही थी। घूमते घूमते वह थक गयी सो थक कर वह एक बहुत ऊॅचे पेड़ के नीचे पड़ी बैन्च पर बैठ गयी।

वहाँ वह बैठी बैठी बहुत देर तक अपने उदास विचारों में खोयी रही कि वहाँ दो रैवन[7] आये और उसके सिर के ऊपर की एक शाख पर आ कर बैठ गये और आपस में बात करने लगे।

एक बोला — "यह कितने दुख की बात है कि हमारी राजकुमारी अपने प्रेमी के दुख में जान देने को भी तैयार है।"

दूसरा रैवन बोला — "और जबकि केवल वह ही उसका वह घाव ठीक कर सकती है जो हरे नाइट को रानी की जहरीली कैंची से हुआ है।"

पहले रैवन ने पूछा — "वह कैसे?"

दूसरे रैवन ने जवाब दिया — "एक सी चीज़ें एक दूसरे को ठीक करती हैं। राजकुमारी के पिता राजा के ऑगन में, उसकी घुड़साल के पश्चिम की तरफ एक पत्थर के नीचे एक छेद में एक ज़हरीली सॉपिन अपने नौ बच्चों के साथ रहती है।

अगर राजकुमारी को उसके ये नौ बच्चे मिल जायें तो वह उनको पका ले और उसके तीन बच्चे रोज राजकुमार को खिलाये तो वह ठीक हो जायेगा नहीं तो उसका कोई और इलाज नहीं है।"

इतना कह कर वे वहाँ से उड़ गये। जैसे ही रात हुई तो राजकुमारी अपने किले से छिप कर निकल ली और समुद्र के किनारे

[7] Raven is a black crow-like bird. See its picture above. Read "Raven Ki Lok Kathayen" published by Prabhat Prakashan and "Raven Ki Lok Kathayen-1" by Indra Publishers – both written by Sushma Gupta in Hindi.

जा पहुँची। वहाँ उसको एक नाव मिल गयी। उस नाव को खे कर वह अपने पिता के महल जा पहुँची।

वहाँ वह सीधी महल के आँगन में पत्थर के पास पहुँची। वह पत्थर बहुत भारी था फिर भी उसने उसको हटाया। वहाँ उसको नौ साँप के बच्चे मिल गये।

उसने उन बच्चों को अपने ऐप्रन में बाँध लिया और उसी रास्ते पर चल दी जो उसके पिता ने जब वह राजाओं की मीटिंग में गया था लिया था।

सो वह महीनों तक पैदल चलती हुई ऊँचे पहाड़ों पर और घने जंगलों में होती हुई वहीं आ गयी जहाँ उसके पिता को सूअरों को झुंड मिला था।

उसने राजकुमारी को जंगलों में से हो कर उस तरफ जाने के लिये इशारा कर दिया जिधर दूसरा चराने वाला था। दूसरे चराने वाले के पास पहुँचने पर उस दूसरे चराने वाले ने उसको तीसरे चराने वाले के पास भेज दिया।

आखिर वह हरे नाइट के महल तक आ पहुँची। वहाँ हरा नाइट जहर से बीमार और बुखार में पड़ा हुआ था। वह इतना बीमार था कि वह किसी को पहचान भी नहीं रहा था। उसको उस घाव की वजह से इतना दर्द था कि वह बिस्तर में भी बहुत बेचैन था।

दुनियॉ के कोने कोने से डाक्टर बुलाये गये थे पर किसी भी डाक्टर का कोई इलाज उसको ज़रा सा भी आराम नहीं दे पाया था।

राजकुमारी हरे नाइट के रसोईघर में गयी और वहॉ रसोइये से पूछा अगर वह उसको शाही रसोई में कुछ काम दे सकता। वह बर्तन धो सकती थी या फिर कुछ और जो काम भी वह उसको देना चाहता हो। बस उसको रहने की जगह चाहिये थी। रसोइये ने उसको वहॉ रहने की इजाज़त दे दी।

क्योंकि वह बहुत साफ रहती थी, काम बहुत जल्दी करती थी और कोई भी काम करने के लिये तैयार रहती थी रसोइये को वह राजकुमारी बहुत अच्छी लगी। उसने उसको वहॉ का काम करने में उसको काफी आजादी दे दी।

रसोइये का यह विश्वास जीतने के बाद राजकुमारी ने रसोइये से कहा — "आज मुझे राजा के लिये सूप तैयार करने दो। मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि उनके लिये सूप कैसे तैयार करना है। मैं उस सूप को अकेले ही तैयार करना चाहती हूँ। कोई भी मेरे बर्तन में झॉके नहीं।"

रसोइया मान गया सो उसने नाइट के लिये उन नौ सॉपों के बच्चों में से तीन सॉप के बच्चों का सूप बना दिया। वह उस सूप को लेकर हरे नाइट के पास ले गयी और वह सूप उसको पिला दिया।

सूप पी कर उसका बुखार इतना उतर गया कि वह अब अपने होश में आ गया, अपने चारों तरफ के सब लोगों को पहचानने लगा और ठीक से बातें करने लगा।

उसने अपने रसोइये को बुलाया और उससे पूछा — "यह सूप क्या तुमने पकाया था जिसने मुझे इतना फायदा किया?"

रसोइये ने जवाब दिया — "जी हॉ मैंने ही बनाया था क्योंकि कोई और दूसरा तो आपके लिये सूप बना ही नहीं सकता था।" तब हरे नाइट ने उसको अगले दिन वैसा ही सूप और बनाने के लिये कहा।

अब रसोइये की बारी थी राजकुमारी के पास जाने की और उससे कहने की कि वह नाइट के लिये कल जैसा ही सूप बना दे।

सो उसने उस दिन भी तीन सॉप के बच्चे लिये, उनका सूप बनाया और उनका सूप बना कर हरे नाइट के पास ले गयी और उसको पिलाया। अबकी बार उस सूप को पी कर हरे नाइट को इतना अच्छा लगा कि वह बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया।

यह देख कर तो डाक्टर लोग हैरान रह गये। वे समझ ही नहीं सके कि यह सब कैसे हो गया। पर उनको यकीन था कि अब तक वे जो दवाऐं हरे नाइट को दे रहे थे वे सब उस पर अब असर कर रही थीं।

तीसरे दिन रसोईघर की नौकरानी को फिर से वह सूप तैयार करना पड़ा। इस सूप में उसने वे आखिरी तीन सॉप के बच्चे डाल

दिये और वह सूप फिर हरे नाइट के पास ले कर गयी। उस सूप को पीने के बाद तो हरा नाइट बिल्कुल ही ठीक हो गया।

वह कूदा और रसोईघर में रसोइये को खुद धन्यवाद देने के लिये गया क्योंकि वही तो उसका असली डाक्टर था जिसने उसको ठीक किया था।

अब हुआ क्या कि जैसे ही वह रसोईघर में पहुँचा तो वहाँ तो एक नौकरानी के अलावा और कोई था ही नहीं और वह नौकरानी भी उस समय बर्तन पोंछ रही थी।

जैसे ही उसने उसको देखा तो वह उसको पहचान गया। तुरन्त ही उसको लगा कि उस लड़की ने उसके लिये क्या किया है। उसने उस लड़की को अपनी बाँहों में ले लिया और बोला —

"ओह तो वह तुम हो जिसने मेरा इलाज किया है। मेरी जान बचायी है। और मेरे शरीर के अन्दर जो जहर घुस गया था उससे छुटकारा दिलाया है। यह जहर मेरे शरीर में तब घुसा था जब मेरे खिड़की में रखी कैंची की खरोंच लगी जो रानी ने वहाँ रखी थी।"

राजकुमारी इस बात से मना नहीं कर सकी। वह बहुत खुश थी और साथ में हरा नाइट भी।

दोनों की शादी उस हरे किले में ही हो गयी और फिर दोनों ने वहाँ के हरे जंगलों मे रहने वालों पर बहुत सालों तक राज किया। और शायद अभी भी वहाँ राज कर रहे होंगे।

2 शापित सॉप[8]

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी यूरोप के इटली देश की कहानियों से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही गरीब स्त्री रहती थी जो एक बच्चे के लिये जो भी उसके पास था वह सब कुछ देने को तैयार थी पर उसके कोई बच्चा नहीं था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उसका पति जंगल से लकड़ी काटने गया और वहॉ से जब वह लकड़ी ले कर आया तो उस लकड़ी के साथ में उसको एक सॉप का बच्चा मिला।

जब सबाटैला[9] ने उस छोटे से जानवर को देखा तो उसने एक गहरी सॉस भरी और बोली — "यहॉ तक कि सॉपों के भी बच्चे होते हैं। एक मैं ही इतनी बदकिस्मत हूॅ कि मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

जैसे ही उसके मुॅह से ये शब्द निकले तो वह तो यह देख कर दंग रह गयी कि वह सॉप खड़े हो कर उससे बोला — "क्योंकि तुम्हारे कोई बच्चा नहीं है तो तुम मेरी मॉ बन जाओ। मैं तुमसे

[8] The Enchanted Snake – a folktale from Italy, Europe. Taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/enchsnake.html
Taken from the book: "The Green Fairy Book", by Andrew Lang. NY: Dover. 1965. Originally published in 1892.]

[9] Sabatella – the name of the peasant's wife.

वायदा करता हूँ कि तुम्हें इसके लिये कभी पछताना नहीं पड़ेगा क्योंकि मैं भी तुम्हें वैसे ही प्यार करूँगा जैसे मैं तुम्हारा बेटा हूँ।"

पहले तो एक साँप को बोलते सुन कर सबाटैला डर के मारे मरी सी हो गयी पर फिर वह हिम्मत बटोर कर बोली — "अगर कोई दूसरी वजह नहीं होती सिवाय तुम्हारे इस दयापूर्ण व्यवहार के तो जो तुम कह रहे हो मैं उस पर राजी हो जाती। पर अब तो मैं तुमको वैसे ही प्यार करूँगी और तुम्हारी देखभाल करूँगी जैसे एक माँ अपने बच्चे की करती है।"

सो उसने उस साँप को अपने घर में रहने के लिये सोने के लिये एक बिल दे दिया। उसने उसको जो कुछ भी वह सोच सकी और जो जो उससे बन सके उसे बढ़िया बढ़िया खाने खिलाये। फिर भी उसको हमेशा यही लगता रहा कि वह उसको अपनी पूरी कृतज्ञता नहीं दिखा पा रही है।

दिन पर दिन वह साँप बड़ा और मोटा होता गया। एक दिन उसने किसान कोला मैथियो[10] जिसको वह अपना पिता मानता था कहा — "पिता जी अब मेरी उम्र शादी लायक हो गयी है अब मैं शादी करना चाहता हूँ।"

मैथियो बोला — "हाँ यह तो तुम ठीक कहते हो बेटा। मैं तुम्हारे लिये तुम्हारे जैसी एक साँपिन ढूँढने की कोशिश करूँगा और फिर उससे तुम्हारी शादी करा दूँगा।"

[10] Cola-Mattheo – the name of the peasant

सॉप बोला — "क्यों? अगर आप ऐसा करेंगे तो हमारे बच्चे भी किसी रेंगने वाले जानवर जैसे ही होंगे जो मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी शादी किसी राजा की बेटी से कर दें।

इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप जल्दी से जल्दी यहॉ से जायें और राजा से मिल कर उससे कहें कि एक सॉप आपकी बेटी से शादी करना चाहता है।"

कोला मैथियो एक सीधा सादा सा आदमी था। जैसा कि उसका बेटा चाहता था वह राजा के पास गया और उससे मुलाकात का समय ले कर उससे कहा — "योर मैजेस्टी। मैंने अक्सर सुना है कि लोग मॉगने से कुछ खोते नहीं इसलिये मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि एक सॉप आपकी बेटी से शादी करना चाहता है। मुझे यह जान कर बहुत खुशी होगी अगर आप एक फाख्ता की शादी एक सॉप से कर देंगे।"

राजा जो एक नजर में ही जान गया कि यह आदमी कोई बेवकूफ नजर आता है सो उससे पीछा छुड़ाने के लिये उसने उससे कहा — "अच्छा ऐसा करो कि तुम घर जाओ और अपने दोस्त सॉप से कहो कि अगर वह कल दोपहर के बारह बजे तक यह पूरा महल हाथी दॉत का बनवा दे जिसमें सोने चॉदी के डिजाइन खुदे हों तो मैं अपनी बेटी की शादी उससे कर दूँगा।"

यह कह कर वह बहुत ज़ोर से हॅसा और उसे वहॉ से भेज दिया। जब कोला मैथियो इस जवाब के साथ सॉप के पास घर

वापस लौटा तो वह छोटा सा जानवर बिल्कुल भी परेशान नहीं दिखायी दिया।

उसने कहा — "पिता जी कल सुबह सूरज निकलने से पहले पहले आप जंगल जायें और वहॉ से हरे पत्तों का एक गुच्छा तोड़ लायें। उसको आप महल की देहरी पर मल दें तब आप देखें कि वहॉ क्या होता है।"

कोला मैथियो ने जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं कि एक बहुत ही सीधा सादा आदमी था सॉप को कोई जवाब नहीं दिया। पर वह अगले दिन सुबह ही वह उठा और पत्ते लाने के लिये जंगल चला गया।

उसने सेन्ट जौन्स वौर्ट, रोज़मैरी[11] और कुछ और पत्ते इकट्ठे किये और जैसा कि उससे कहा गया था उसने उनको ले जा कर महल की दहलीज़ पर मल दिया।

जैसे ही उसने यह किया कि महल की दीवारें सब हाथी दॉत की हो गयीं और उन पर सोने चॉदी का इतना बढ़िया काम किया गया था कि देखने वाले की ऑखें चौंधिया जायें।

राजा सुबह को जब सो कर उठा तो उसने भी यह जादू देखा तो आश्चर्य में वह इतना खो गया कि उसे अपनी भी सुध नहीं रही। उसको तो यही समझ में ही नहीं आया कि वह करे क्या।

[11] St John's Wort is a medicinal herb. Rosemary is a herb used in Italian food for flavor.

पर जब कोला मैथियो अगले दिन राजा के पास आया तो उसने फिर से सॉप के लिये उसकी बेटी का हाथ मॉगा।

राजा बोला — "इतनी भी जल्दी क्या है। अगर सॉप वाकई मेरी बेटी से शादी करना चाहता है इससे पहले उसको कुछ और काम करने चाहिये। उसको मेरे बागीचे की दीवार और रास्ते कल दोपहर के बारह बजे से पहले पहले सब सोने के बनवा देने चाहिये।"

सॉप ने जब यह नयी शर्त सुनी तो उसने अपने पिता से कहा कि वह सुबह सवेरे ही शहर की सड़कों पर से बहुत सारा कूड़ा इकट्ठा कर लाये और उसको बागीचे की दीवार और सड़कों पर फेंक दे। तब वह देखेगा कि हम राजा के बराबर से भी ज़्यादा हैं कि नहीं।

सो कोला मैथियो सुबह मुर्गे की बॉग पर उठा और एक बड़ी सी टोकरी ले कर शहर में से कूड़ा उठाने चल दिया। वहॉ से उसने टूटे बर्तन उठाये जग और लैम्प उठाये और उसी तरह का कुछ और कूड़ा उठाया और उसको राजा के बागीचे की दीवार और सड़कों पर डाल आया तो लो वे तो सब सोने की हो गयीं।

यह देख कर तो हर किसी की ऑखों चौंधियाने लगीं और हर कोई आश्चर्य करने लगा। राजा भी यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। पर अभी भी वह अपनी बेटी से अलग होने के बारे में नहीं सोच पा रहा था।

सो जब कोला मैथियो उसको अपना वायदा याद दिलाने के लिये उसके पास आया तो उसने उससे कहा — "मेरी अभी एक तीसरी मॉग और है। अगर तुम्हारा सॉप मेरे सारे पेड़ और फल जवाहरात में बदल सकता है तो मैं वायदा करता हू कि फिर मैं उसको अपनी बेटी दे दूँगा।"

किसान यह सुन कर वापस लौट गया और जा कर सॉप को बताया कि राजा ने क्या कहा था तो सॉप बोला — "पिता जी कल सुबह ही आप बाजार जायें और वहॉ आपको जितने भी फल दिखायी दें वे सब खरीद लें और उनकी गुठलियॉ और बीज राजा के बागीचे में बो दें। और अगर मैं गलती पर नहीं हूँ तो राजा इसके नतीजे से सन्तुष्ट हो जायेगा।"

सो अगले दिन कोला मैथियो फिर सुबह सवेरे ही उठा और एक टोकरी ले कर बाजार जा पहुँचा। वहॉ से उसने अनार खूबानी चैरीज़ और जो भी कोई और फल मिला सब खरीद लिये और उनकी गुठलियॉ और बीज ले जा कर राजा के बागीचे में बो दिये।

एक पल में ही राजा के बागीचे के सारे पेड़ों पर लाल पन्ने हीरे और जो कोई भी जावहरात तुम सोच सकते हो वे सब दमदमाने लगे।

अब तो राजा को अपना वायदा रखना पड़ा। उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "मेरी प्यारी ग्रैनोनिया[12]। मैंने तो

[12] Grannonia – name of the Princess

केवल मजाक में ही तुम्हारे पति से यह सब नामुमकिन माँगा था पर उसने तो मेरी सारी माँगें पूरी कर दीं तो अब यह मेरा फर्ज बन जाता है कि मैं अपना वायदा पूरा करूँ।

सो अब अच्छे बच्चे की तरह जैसे तुम मुझे प्यार करती हो मेरा वायदा तोड़ने के लिये मुझे मजबूर मत करना बल्कि अपनी इस बदकिस्मती को शान से झेल लेना।"

ग्रैनोनिया बोली — "पिता जी आप जैसा चाहते हैं मेरे साथ वैसा ही करें। आप ही मेरे स्वामी हैं और आपकी इच्छा ही मेरे लिये कानून है।"

राजा ने जब यह सुना तो वह कोला मैथियो से बोला — "अब तुम अपने सॉप को यहाँ महल में ले आओ मैं उसका अपने दामाद की तरह से स्वागत करूँगा।"

सॉप राज दरबार में एक सोने की गाड़ी में बैठ कर आया जिसे छह सफेद हाथी खींच रहे थे पर जिस जिस रास्ते से हो कर वह आया और जहाँ जहाँ उस डरावने सॉप को लोगों ने देखा तो वे डर के मारे वहाँ से भाग लिये।

जब सॉप महल पहुँचा तो राजा के सारे दरबारी डर के मारे काँपने लगे। और ये सब लोग ही नहीं बल्कि राजा और रानी भी बेहोश होते होते बचे और दूर जा कर छिप गये।

पर ग्रैनोनिया ने अपना दिल और दिमाग ठीक रखा। हालॉकि उसको माता पिता दोनों ने उससे अपनी जान बचाने के लिये वहॉ से भाग जाने के लिये कहा फिर भी वह एक कदम भी नहीं हिली।

वह बोली — "मैं यहॉ से किसी भी हालत में उस आदमी से भागने वाली नहीं हूॅ जिसे आपने मेरे लिये मेरा पति चुना है।"

जैसे ही सॉप ने ग्रैनोनिया को देखा तो उसने अपनी पूॅछ उसके चारों तरफ लपेट दी और उसको चूम लिया। फिर वह उसको एक कमरे में ले गया और कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

अन्दर जा कर उसने अपनी खाल निकाल दी और अपने आपको एक सुन्दर सुनहरे घुॅघराले बालों और चमकीली ऑखों वाले नौजवान में बदल लिया। धीरे से ग्रैनोनिया को गले लगाया और उससे बहुत सारी मीठी मीठी बातें कीं।

जब राजा ने यह देखा कि वह सॉप उसकी बेटी को एक कमरे में ले गया और कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "भगवान हमारी बेटी पर रहम करे। मुझे तो डर है कि बस अब तो हमारी बेटी का सब कुछ खत्म हो गया। इस नीच सॉप ने तो उसे अब खा ही लिया होगा।"

कह कर उन्होंने अपनी ऑखें उस कमरे की चाभी वाले छेद पर गड़ा दीं कि देखें अन्दर क्या हो रहा है। उनके आश्चर्य की तो हद ही नहीं रही जब उन्होंने देखा कि एक बहुत सुन्दर नौजवान उनकी

बेटी के सामने खड़ा है और एक सॉप की खाल उसी के पास नीचे फर्श पर पड़ी हुई है।

यह देख कर तो वे इतने खुश हुए कि उन्होंने दरवाजा तोड़ डाला और उसकी सॉप की खाल उठा कर आग में डाल दी।

पर जैसे ही उन्होंने यह किया कि वह नौजवान चिल्लाया — "ओ नीच लोगों यह तुम लोगों ने क्या किया।"

और इससे पहले कि वे पलट कर देखते कि क्या हुआ उसने अपने आपको एक फाख्ता में बदल लिया और खिड़की की तरफ उड़ते हुए उसका एक शीशा तोड़ा और उसमें से बाहर निकल कर उनकी ऑखों से ओझल हो गया।

पर ग्रैनोनिया तो उसी पल खुश भी हुई और दुखी भी हो गयी। अपने आपको अमीर भी समझा और भिखारी भी। वह अपनी इस खुशी को इस तरह से छिन जाने पर बहुत शिकायत करने लगी जैसे उसकी खुशी में जहर मिल गया हो। खुशकिस्मती पर बदकिस्मती की मार लग गयी हो।

उसने इस सबके लिये अपने माता पिता को दोषी ठहराया हालॉकि उसके माता पिता ने उसको बहुत समझाया कि ऐसा करने में उनका उसको किसी तरह का नुकसान पहुॅचाने का कोई उद्देश्य नहीं था। लेकिन राजकुमारी को इस सबसे कोई तसल्ली नहीं मिली।

रात को जब सब लोग सो गये तो राजकुमारी पिछले दरवाजे से बाहर निकली और एक देहाती स्त्री का रूप बनाया और अपनी खुशी को ढूँढने का इरादा किया जब तक कि वह उसको मिल न जाये।

चाँद की रोशनी में वह चलती जा रही थी चलती जा रही थी। जब वह शहर के बाहर पहुँची तो उसको एक लोमड़ा मिला जिसने उसके साथ चलने के लिये कहा।

ग्रैनोनिया ने तुरन्त ही उसको अपने साथ ले लिया क्योंकि वह तो अपने पड़ोस के रास्तों को भी नहीं जानती थी।

सो वे दोनों एक साथ चलते रहे और एक जंगल में आ पहुँचे। इतना सब चलते चलते वे थक गये थे सो एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये बैठ गये। वहीं पास में पानी का एक सोता[13] बह रहा था। उससे उन्होंने पानी पिया और फिर हरी मुलायम घास पर लेट गये।

वे थके थे सो जल्दी ही सो गये और जब वे उठे तो सूरज आसमान में ऊपर चमक रहा था। वे उठे और कुछ देर तक चिड़ियों के गाने की आवाजें सुनते रहे क्योंकि ग्रैनोनिया को उनका गाना बहुत अच्छा लग रहा था।

लोमड़े ने जब यह देखा तो वह बोला — "अगर तुम समझ सकतीं कि ये चिड़ियें क्या कह रही हैं जैसे कि मैं समझ रहा हूँ तो

[13] Translated for the word "Spring"

तुम्हारी खुशी और बहुत बढ़ जाती।" यह सुन कर राजकुमारी की उत्सुकता और बढ़ गयी और जैसा कि हम सभी के साथ होता है खास कर के लड़कियों के साथ क्योंकि उनको बात करने की इच्छा बहुत होती है ग्रैनोनिया ने उससे पूछा कि वे क्या कह रही थीं।

पहले तो लोमड़े ने उसे जो कुछ भी उसने चिड़ियों की बातचीत से पता लगाया था उसे उसको बताने से मना कर दिया पर फिर उसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए उससे कहा कि वे उस नौजवान राजकुमार की बदकिस्मती के बारे में बात कर रही थीं जिसको एक नीच जादूगरनी ने अपने जादू से सात साल के लिये एक सॉप में बदल दिया था।

जब यह समय खत्म होने को होता है तो वह एक सुन्दर राजकुमारी के प्यार में पड़ जाता है और जब वह अपने आपको उसके साथ एक कमरे में बन्द कर लेता है और अपनी सॉप वाली खाल उतार देता है तो राजकुमारी के माता पिता उस कमरे में जबरदस्ती घुस जाते हैं और उसकी सॉप की खाल को जला देते हैं।

उसके बाद राजकुमार एक फाख्ता बन जाता है और बाहर जाने की कोशिश में खिड़की एक शीशा तोड़ देता है। इससे वह इतना ज़्यादा घायल हो जाता है कि डाक्टरों ने तो उसकी ज़िन्दगी की आशा ही छोड़ दी है।"

ग्रैनोनियॉ ने जब यह सुना कि वे चिड़ियें उसके पति के बारे में ये बात कर रही हैं तो उसने पूछा कि वह किसका बेटा था। क्या उसके ठीक होने की कोई आशा है।

तो लोमड़े ने जवाब दिया कि चिड़ियॉ कह रही हैं कि वह राजा वैलोन ग्रौसो[14] का बेटा है। उसका केवल एक ही इलाज है जो उसे ठीक कर सकता है और वह है उन चिड़ियों के खून को उसके सिर के घावों पर मलना जिन्होंने यह कहानी सुनायी है।

यह सुन कर ग्रैनोनिया लोमड़े के पैरों में पड़ गयी और उससे अपनी सबसे मीठी आवाज में उन चिड़ियों का खून लाने की प्रार्थना की और वायदा किया कि अगर वह उसे उनका खून ला देगा तो वह उसको बहुत सारा इनाम देगी।

लोमड़ा बोला — "ठीक है ठीक है। पर इतनी जल्दी भी मत करो। रात हो जाने तक इन्तजार करो। जब सब चिड़ियें सोने चली जायेंगी तब मैं पेड़ पर चढ़ जाऊॅगा और तुमको उन सारी चिड़ियों को पकड़ कर ला दूॅगा।"

सो उन्होंने सारा दिन बात कर के गुजारा कभी राजकुमार की सुन्दरता के बारे में कभी राजकुमारी के पिता के बारे में तो कभी राजकुमारी की बदकिस्मती के बारे में।

रात हुई तो सारी चिड़ियें सो गयीं। लोमड़ा बड़ी धीरे से पेड़ के ऊपर चढ़ा और अपने पंजों में एक के बाद एक चिड़ियें पकड़ लाया

[14] Vallone Frosso – name of the father of the Snake Prince

और जब उसने उन सबको मार दिया तो उसने उनका खून एक बोतल में रख दिया जो उसकी बगल में लटक रही थी।

उसको ले कर वह ग्रैगोनिया के पास आया तो वह उसको देख कर लोमड़े की कोशिश की खुशी से पागल सी हो गयी।

लोमड़ा बोला — "मेरी प्यारी बच्ची। तुम्हारी यह खुशी अभी बेकार है। क्योंकि मैं तुम्हें यह बता दूँ कि धरती के जीवों का यह खून तुम्हारे किसी काम का नहीं जब तक कि इसमें मेरा खून न मिला हो।" और यह कह कर वह वहाँ से भाग गया।

ग्रिगोनिया ने जब देखा कि उसकी आशाओं पर इस बेरहमी से पानी फिर गया तो उसने चापलूसी और चालाकी की चाल अपनाने की सोची। क्योंकि ये एक ऐसे हथियार थे जो किसी भी नर या मादा को खुश कर सकते थे।

सो उसने लोमड़े को पीछे से पुकारा — "ओ पिता लोमड़े। तुम बिल्कुल ठीक हो कि तुमको अपनी ज़िन्दगी बचानी ही चाहिये। पर तुम्हें तो मालूम है कि मैं तुम्हारी कितनी कृतज्ञ हूँ। और क्योंकि दुनियाँ में और भी बहुत सारे लोमड़े मौजूद हैं पर तुममें मेरा विश्वास बहुत है।

मेहरबानी कर के तुम उस गाय की तरह से तो मुझसे बर्ताव मत करो जो उसी बालटी में लात मार देती है जिसको उसने अपने दूध से भरा हो। कम से कम तुम मेरे साथ कुछ दूर तक तो चल ही सकते हो न।

और जब हम राजा के शहर पहुँच जायें तो मुझे राजा को उसकी नौकरानी की तरह से बेच देना।"

लोमड़े के दिमाग में यह कभी आया ही नहीं कि लोमड़े को भी बेवकूफ बनाया जा सकता है। सो एक पल सोचने के बाद वह उसके साथ चलने के लिये तैयार हो गया।

पर वह ज़्यादा दूर नहीं गया था कि लड़की ने एक डंडी उठायी और उसके सिर पर इतने ज़ोर से दे कर मारी कि वह वहीं का वहीं मर गया। ग्रैनोनिया ने उसका खून निकाला और अपनी खून वाली शीशी में डाल लिया। बस फिर वह जितनी तेज़ वहाँ से चल सकती थी उतनी तेज़ वैलोन ग्रौसो के पास चल दी।

जब वह वहाँ पहुँच गयी तो वह सीधी राजमहल में पहुँची और वहाँ जा कर राजा को कहलवाया कि वह राजकुमार को ठीक करने आयी है। राजा ने तुरन्त ही उसे अपने सामने बुलवा लिया।

राजा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो एक लड़की थी जो उस काम का बीड़ा उठाने आयी थी जिसको उसके राज्य के अच्छे से अच्छे डाक्टर नहीं कर पाये थे।

कोशिश करने में कोई नुकसान नहीं था सो उसने लड़की को जो कुछ वह करना चाहती थी वह करने की इजाज़त दे दी।

ग्रैनोनिया बोली — "बस मैं यह चाहती हूँ कि अगर मैं उस काम में कामयाब हो जाऊँ जो मैं करने आयी हूँ तो आप मेरी शादी अपने बेटे से कर दें।"

राजा जिसने अपने बेटे की ज़िन्दगी की सारी आशाऐं छोड़ दी थीं बोला — "तुम बस उसे ज़िन्दा और तन्दुरुस्त कर दो फिर वह तुम्हारा है। यह बात तो ठीक लगती है कि जो मुझे बेटा दे मैं उसको पति दे दूँ।"

सो वे राजकुमार के कमरे में चले गये। जैसे ही ग्रैनोनिया ने वह खून राजकुमार के घावों पर लगाया उसकी बीमारी चली गयी। वह जैसा पहले तन्दुरुस्त था वैसा ही तन्दुरुस्त फिर से हो गया।

जब राजा ने यह जादू भरा इलाज देखा और अपने बेटे को उससे ठीक होते देखा तो वह उससे बोला — "ओ मेरे प्यारे बेटे। मुझे तो लगा कि तुम मर गये हो। और अब तो मेरी खुशी और आश्चर्य की कोई हद ही नहीं है जब मैं तुम्हें ज़िन्दा देख रहा हूँ।

मैंने इस नौजवान लड़की से वायदा किया है कि अगर यह तुमको ठीक कर देगी तो मैं तुम्हारा हाथ इसके हाथ में दे दूँगा। यह देख कर कि भगवान हमसे खुश है तो तुम मेरा किया गया वायदा पूरा करो। इसके अलावा कृतज्ञता के बदले में भी तो मुझे इसका कर्जा उतारना है।"

लेकिन राजकुमार ने जवाब दिया — "पिता जी। मेरी मरजी भी उतनी ही आजाद है जितना ज़्यादा आपके लिये मेरा प्यार। पर क्योंकि मैंने किसी दूसरी लड़की से शादी करने का वायदा किया है तो अब आप खुद ही देखें और बतायें कि मैं क्या करूँ। मैं अपने

वायदे से कैसे मुकर सकता हूँ और उससे बेवफा कैसे हो सकता हूँ जिसको मैं इतना प्यार करता हूँ।"

जब ग्रैनोनिया ने यह सुना और देखा कि राजकुमार उसे कितना प्यार करता है तो वह बहुत खुश हुई। उसका चेहरा शर्म से लाल पड़ गया। वह बोली — "और अगर मैं उस दूसरी लड़की से कहूँ कि वह तुम्हारे ऊपर से अपना हक छोड़ दे तो क्या फिर तुम मुझसे शादी कर लोगे?"

राजकुमार बोला — "यह तो बहुत दूर की बात है कि तुम मेरे दिल से मेरे प्यार की तस्वीर निकाल दो। वह कुछ भी कहे मेरा दिल और मेरी इच्छा उसको लिये हमेशा वही रहेगी। और अगर मुझे उसके लिये अपनी जान भी गॅवानी पड़े तो भी मैं इस अदला बदली के लिये तैयार नहीं हूँ।"

यह सुनने के बाद ग्रैनोनिया चुप नहीं रह सकी। उसने अपना देहातिन को वेश उतार दिया और अपना असली रूप राजकुमार को दिखाया। जब राजकुमार ने अपने प्यार को वहॉ इस तरह देखा तो उसको देख कर तो वह अपने आपे में ही नहीं रहा।

फिर उसने अपने पिता को बताया कि वह कौन थी और उसने उसके लिये क्या क्या किया और क्या क्या सहा।

फिर उन्होंने स्टारज़ा लौंगा[15] के राजा और रानी को अपने दरबार में बुलवाया और शादी की एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया गया।

इससे यह साबित हो गया कि कुछ दुख उठाने के बाद जो खुशी मिलती है उसकी तो बस बात ही कुछ और है।

[15] Starza-Longa

3 रशैन कोटी[16]

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया जैसी कहानियों में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इंगलैंड देश की कहानियों से ली है।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे। पर उसकी रानी अपनी एक बहुत ही सुन्दर सी बेटी को छोड़ कर चल बसी।

मरते समय उसने अपनी बेटी से कहा — "मेरी प्यारी बिटिया। जब मैं चली जाऊँगी तो तुम्हारे पास एक लाल बछड़ा आयेगा। तो जब भी तुम्हें कुछ भी चाहिये तो तुम उससे कह देना वह तुमको दे देगा।" और यह कह कर वह मर गयी।

कुछ दिनों बाद राजा ने दूसरी शादी कर ली। उसकी यह दूसरी पत्नी बहुत ही खराब स्वभाव की थी। वह अपने साथ अपनी तीन बदसूरत बेटियाँ भी ले कर आयी थी।

वे सब राजा की बेटी से बहुत नफरत करती थीं क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी। रानी की तीनों लड़कियों ने उसके सारे अच्छे कपड़े ले लिये और उसको पहनने के लिये बस एक फटे कपड़े का कोट दे दिया।

अब वे सब उसको रशैन कोटी नाम से बुलाने लगे।

---

[16] Rushen Coatie – a fairy tale from England, Europe.
This story is taken from the Web Site :
http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/stories/rushen.html
Appeared in the book : English Fairy Tales. By Joseph Jacobs. London: David Nutt. 1890.

वे उसको रसोईघर में ही रखते जहॉ वह राख के पास ही बैठी रहती। जब शाम को खाना खाने का समय होता तो उसकी सौतेली मॉ बस उसको एक चम्मच मॉस का पानी[17], एक जौ का दाना, एक धागे जितना बड़ा मॉस का टुकडा और एक टुकड़ा रोटी का भेज देती।

लेकिन जब वह यह सब खा चुकती तभी भी वह उतनी ही भूखी रहती जितनी भूखी वह पहले होती थी। वह अपने आप से कहती "काश मेरे पास कुछ खाने को होता।"

तभी वहॉ सोचो तो कौन आया? एक लाल बछड़ा।

वह बोला — "अपनी उॅगलियॉ मेरे बॉये कान में रखो।"

उसने ऐसा ही किया तो उसको तो वहॉ बहुत अच्छी रोटी मिली। उसके बाद बछड़े ने उससे अपने दॉये कान में उगलियॉ रखने के लिये कहा। उसने फिर वैसा ही किया तो वहॉ उसको कुछ चीज़[18] मिली। सो उसने रोटी और चीज़ का बहुत अच्छा खाना खाया।

और बस फिर रोज ऐसा ही होने लगा।

असल में राजा की पत्नी ने सोचा था कि अगर उसने रशैन कोटी को बहुत कम खाना दिया तो वह जल्दी ही मर जायेगी पर

[17] Translated for the word "Broth"

[18] Cheese is processed Paneer of India. It is a very popular and staple food of western world.

वह तो यह देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गयी कि वह तो अभी भी पहले जैसी ही तन्दुरुस्त थी।

सो उसने अपनी एक बदसूरत बेटी को उसके खाने के समय उसके पास यह देखने के लिये भेजा कि वह उस समय क्या खाती है जिसकी वजह से वह इतनी तन्दुरुस्त दिखायी दे रही थी।

उस लड़की को जल्दी ही पता चल गया कि एक लाल बछड़ा रशैन कोटी को खाना खिलाता था। उसने यह जा कर अपनी मॉ को बताया।

उसकी मॉ राजा के पास गयी और उससे कहा कि उसको लाल बछड़े का मॉस खाने की इच्छा हो रही है। राजा ने एक कसाई को बुलाया और उस छोटे बछड़े को मरवा दिया। रशैन कोटी ने जब यह सुना तो वह उसके पास बैठ कर बहुत रोयी।

पर वह मरा हुआ बछड़ा बोला —

मेरी सारी हड्डियॉ उठा लो और उनको पास वाले पत्थर के नीचे रख दो
फिर जब भी तुम्हें कुछ चाहिये मुझसे कहना मैं तुमको दे दूँगा

उसने वही किया पर उसको उसकी एक बॉह की हड्डी नहीं मिली। अगले रविवार को चर्च में यूलटाइड[19] था तो सब लोग अपने सबसे अच्छे कपड़ों में जाने के लिये तैयार हो रहे थे। सो रशैन कोटी बोली — "ओह मैं भी चर्च जाना चाहती हूँ।"

[19] Yuletide - Yule is used in the Nordic countries for Christmas with its religious rites, but also for the holidays of this season. Today Yule is also used to a lesser extent in the English-speaking world as a synonym for Christmas.

पर उसकी तीनों बदसूरत बहिनें बोलीं — "तुम चर्च जा कर क्या करोगी ओ बेकार की चीज़? तुम घर पर ही रहो और शाम का खाना बनाओ।"

राजा की पत्नी ने कहा — "तुमको इसका सूप तो जरूर बनाना चाहिये – एक चम्मच मॉस का पानी, एक जौ का दाना, एक धागे जितना बड़ा मॉस का टुकडा और एक टुकड़ा रोटी का।"

जब वे सब चर्च चली गयीं तो रशैन कोटी बैठ कर रोने लगी। एकाएक उसने ऊपर देखा तो उसने क्या देखा कि लॅगड़ाता हुआ केवल एक बॉह की हड्डी वाला लाल बछड़ा खड़ा था।

लाल बछड़ा बोला — "तुम वहॉ रोती हुई मत बैठी रहो। लो उठो। यह लो ये कपड़े लो और इन्हें पहन लो। और यह शीशे के जूते भी पहन लो। और जाओ चर्च चली जाओ।"

रशैन कोटी ने पूछा — "और शाम के खाने का क्या होगा?"

लाल बछड़ा बोला — "तुम उसकी चिन्ता न करो। तुमको तो बस आग से यह कहना है —

एक कोयला दूसरे को जलाओ एक चिमटे से दूसरे को पलटो
हर बर्तन एक दूसरे के साथ खेलो जब तक मैं इस यूल के दिन चर्च से वापस आती हूॅ

और बस अब तुम चर्च चली जाओ। पर हॉ इस बात का ध्यान रखना कि तुम वहॉ से सबसे पहले आ जाना – पूजा खत्म होने से भी पहले।"

सो रशैन कोटी ने कपड़े पहने अपने शीशे के जूते पहने और चर्च चली गयी। वह तो वहॉ सबसे ज़्यादा सुन्दर और शानदार लग रही थी।

वहॉ एक राजकुमार भी आया हुआ था। तो वह तो उसको देखते ही प्यार करने लगा था। पर वह चर्च की पूजा खत्म होने से पहले ही आ गयी और इस तरह सबसे पहले ही घर आ गयी।

घर आते ही उसने अपने बढ़िया कपड़े उतार दिये और अपना फटे कपड़ों का कोट पहन लिया। उसने देखा कि मेज पर खाना तैयार लगा रखा है और बछड़े ने उसको ढक रखा है। जब सब लोग घर आये तो बाकी चीज़ें भी सब ठीकठाक रखी हुई थीं।

उसकी तीनों बहिनें बोलीं — "ओह, ओ लड़की, काश अगर तूने चर्च में उस सुन्दर लड़की को देखा होता। वह नौजवान राजकुमार तो उसके प्यार में ही पड़ गया।"

रशैन कोटी बोली — "काश तुम मुझे कल चर्च जाने दो तो।"

क्योंकि इस मौके पर वे लोग तीन दिन तक लगातार चर्च जाते थे। वे फिर बोलीं — "तू वहॉ जा कर क्या करेगी तेरे लिये तो यह रसोईघर का कोना ही ठीक है।"

सो अगले दिन वे सब फिर से चर्च चली गयीं और रशैन कोटी घर में ही रह गयी – एक चम्मच मॉस का पानी, एक जौ का दाना, एक धागे जितना बड़ा मॉस का टुकड़ा और एक टुकड़ा रोटी का सूप बनाने के लिये।

पर लाल बछड़ा फिर से उसकी सहायता के लिये आया। इस बार उसने उसको पिछले दिन से और ज़्यादा बढ़िया कपड़े दिये। वह उनको पहन कर फिर चर्च चली गयी।

वहॉ फिर से सभी लोग उसको देख रहे थे और सोच रहे थे कि यह इतनी सुन्दर लड़की कहॉ से आयी है। राजकुमार तो उसके प्यार में और ज़्यादा पड़ गया था।

पर इस बार भी वह और सबसे पहले चर्च से उठ कर चली आयी। राजकुमार ने यह देखने के लिये उसका पीछा किया कि वह किधर जाती है पर वह उससे कहीं ज़्यादा तेज़ थी। वह उससे बच कर भाग आयी।

वह और सबसे भी पहले घर आ गयी थी। लाल बछड़े ने उस दिन भी शाम का खाना बना कर रखा हुआ था और खाने की मेज पर उसे लगा कर रखा हुआ था। मेज ढकी हुई थी। बाकी चीज़ें भी सब ठीकठाक से लगी रखी थीं।

अगले दिन भी जब सब चर्च चले गये तो लाल बछड़े ने उसको पहले दो दिनों से भी ज़्यादा बढ़िया कपड़े दिये। उस दिन वह उनको पहन कर चर्च गयी।

वह नौजवान राजकुमार वहॉ फिर मौजूद था। इस बार उसने उसके लिये दरवाजे पर एक चौकीदार खड़ा किया हुआ था पर इस बार तो उसने एक ऐसी कूद मारी कि वह उनके सिरों के ऊपर से हो कर निकल गयी।

पर जब उसने ऐसा किया तो उसका एक शीशे का जूता उसके पैर से निकल गया। अब उसको उठाने के लिये वह रुक तो नहीं सकती थी सो वह उसको वहीं छोड़ कर जितनी तेज़ी से अपने घर भाग सकती थी भाग गयी।

लाल बछड़े ने उस दिन भी घर में सब कुछ तैयार कर के रखा हुआ था।

नौजवान राजकुमार ने वह शीशे का जूता उठा लिया और सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जिस किसी के पैर में वह जूता आ जायेगा वही उसकी पत्नी बनेगी।

सब लड़कियों और स्त्रियों ने उस जूते को पहन कर देखा पर वह जूता तो उनमें से किसी के नहीं आया क्योंकि वह तो उन सबके पैरों के लिये बहुत ही छोटा था।

यह देख कर राजकुमार ने फिर अपना एक दूत उस जूते को ले कर अपने सारे राज्य में भेजा कि वह उस शीशे के जूते की मालकिन को ढूँढ कर लाये।

वह बेचारा उस जूते को ले कर सारे राज्य में घूमा। वहॉ उसने सारी स्त्रियों को उस जूते को पहनवा कर दिखलाया पर वह तो किसी के आया ही नहीं।

हर एक लड़की चाहती थी कि वह जूता उसके पैर में आ जाये तो वह उस राज्य की रानी बन जायेगी पर जब वह उसके पैर में नहीं आता तो बहुत सारी स्त्रियॉ तो बहुत रोयीं कि अब वह रानी नहीं बन पायेंगी।

वह दूत आखिर उन तीन बदसूरत लड़कियों के घर आ पहुॅचा। वहॉ दोनों बड़ी लड़कियों ने उस जूते को पहन कर देखा पर वह उनको भी नहीं आया।

रानी तो यह देख कर कुछ पागल सी हो गयी तो उसने अपनी तीसरी बेटी की उॅगलियॉ और एड़ी काट दीं। अब उसके वह जूता आ गया तो राजकुमार ने उसको शादी के लिये बुलवा लिया क्योंकि उसको तो अपना वायदा पूरा करना था।

वह लड़की अपनी सबसे अच्छी पोशाक में सजी और राजकुमार के पीछे घोड़े पर बैठ कर राजकुमार के साथ चल दी। वे सब वहॉ से शान से चले। पर घमंड कहीं न कहीं तो टूटता ही है।

जब वे सब इस तरह जा रहे थे तो एक झाड़ी में से एक रैवन[20] ने गाया —

[20] Raven is a crow like bird. See its picture above.

इसकी एड़ी भी कटी हुई है और उँगलियाँ भी कटी हुई हैं
यह जो राजकुमार के पीछे सवार है
पर सुन्दर और छोटे पैरों वाली तो बड़े पतीले के पीछे बैठी हुई है

राजकुमार ने पूछा — "यह चिड़िया क्या गा रही है?"

उसकी दूसरी बहिन बोली — "उसकी बातों पर ध्यान मत दो वह तो ऐसे ही कुछ कुछ बोलती रहती है।"

पर राजकुमार को विश्वास नहीं हुआ तो उसने नीचे देखा तो उसने देखा कि उस लड़की जूते में से तो खून टपक रहा है। वह उसको ले कर वापस उसके घर गया उसको नीचे उतारा और बोला — "यहाँ कोई और होना चाहिये जिसने यह जूता पहन कर नहीं देखा है।"

उसकी दोनों बहिनें एक साथ बोलीं — "नही नहीं। यहाँ और कोई नहीं है सिवाय एक गन्दी लड़की के जो रसोईघर के कोने में बैठी रहती है और फटे कपड़ों का कोट पहनती है।"

पर राजकुमार तो उसको भी यह जूता पहना कर देखना था सो उसने उसको बुलवाया पर वह तो उस पत्थर की तरफ भाग गयी जहाँ उसने लाल बछड़े की हड्डियाँ दबायी थीं। वहाँ लाल बछड़े ने उसको बहुत बढ़िया कपड़े पहनाये और वह उनको पहन कर राजकुमार के पास गयी।

आश्चर्य। वह जूता तो राजकुमार की जेब से निकल कर अपने आप ही उसके पैर में आ गया। उसको अपनी एड़ी या उँगलियों को

काटने की जरूरत ही नहीं पड़ी। वह तो उसी का जूता था न। राजकुमार ने उसी दिन उससे शादी कर ली और उसके बाद वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

4 एक सुन्दर लड़की और सात दूसरी लड़कियॉ[21]

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया जैसी लोक कथाओं के इस संग्रह की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक बहुत ही सुन्दर लड़की थी जिसका नाम ऐकिम[22] था। वह इबीबियो[23] जगह की रहने वाली थी और क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी और वसन्त के मौसम में पैदा हुई थी इसी लिये उसके माता पिता ने उसका यह नाम रखा था।

यों तो शहर के सभी लोग उसकी सुन्दरता से बहुत जलते थे पर खास तौर पर शहर की लड़कियॉ उससे बहुत जलती थीं क्योंकि वह केवल सुन्दर ही नहीं थी बल्कि हर बात में ही वह बहुत अच्छी थी – चलने में, बैठने उठने में, बात करने में।

इसलिये जैसा कि वहॉ का रिवाज था कि एक उम्र के लड़के और लड़कियॉ साथ में उठें बैठें उसके माता पिता उसके इन गुणों की वजह से उसको दूसरे जवान लड़के लड़कियों के साथ उठने बैठने भी नहीं देते थे।

---

[21] A Pretty Girl and Seven Jealous Women – a folktale of Southern Nigeria, Africa.
Adapted from the book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910.
Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[22] Akim – name of the girl

[23] Ibibio – name of the place in Calabar city in Nigeria in its Cross River State where the girl lived.

ऐकिम के माता पिता गरीब तो जरूर थे पर उनके पास एक बहुत ही अच्छी बेटी थी जिससे उनको बिल्कुल भी परेशानी नहीं थी सो वे लोग आपस में खुशी से रहते थे।

एक दिन जब ऐकिम पानी भरने के लिये जा रही थी तो उसे रास्ते में उसी की उम्र की सात लड़कियॉ मिलीं। अगर उसके माता पिता ने उसके ऊपर उसके हमउम्र लड़के लड़कियों से मिलने पर रोक न लगायी होती तो वह भी आज उन्हीं लड़कियों के साथ होती।

इन लड़कियों ने उसको बताया कि वे तीन दिनों के बाद शहर में एक उत्सव में जा रहीं थीं अगर वह चाहे तो वह भी उनके साथ आ सकती थी।

उसने कहा कि अफसोस मैं तुम लोगों के साथ नहीं आ सकती क्योंकि मेरे माता पिता गरीब हैं और घर में काम करने के लिये केवल मैं ही हूॅ इसलिये इन उत्सवों और नाच गाने के लिये मेरे पास समय नहीं है। और वह चली गयी।

क्योंकि वे सातों लड़कियॉ ऐकिम से जलती थीं इसलिये शाम को जब वे मिलीं तो उन्होंने आपस में यह विचार किया कि इस उत्सव में उनके साथ जाने से मना करने के लिये उससे किस तरह बदला लिया जाये।

वे सब काफी देर तक इस बारे में बातें करती रहीं कि किस तरह ऐकिम को या तो किसी खतरे में डाला जाये या उसको किसी तरह की सजा दी जाये।

आखिरकार उनमें से एक लड़की ने सलाह दी कि उन सबको ऐकिम के घर रोज जाना चाहिये और उसके कामों में उसकी सहायता करनी चाहिये। इससे वे उसको अपना दोस्त बना सकेंगी और फिर वे अपना बदला ले सकती हैं।

सो उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने ऐकिम के घर जा कर उसके कामों में हाथ बॅटाना शुरू कर दिया।

हालॉकि वे लड़कियॉ रोज ऐकिम के घर जा कर उसके और उसके माता पिता के कामों में सहायता करने लगीं थीं फिर भी उसके माता पिता यह जानते थे कि वे उनकी बेटी से जलती हैं इसलिये उन्होंने अपनी बेटी को उनके साथ कहीं भी जाने से मना कर रखा था क्योंकि उनको उन लड़कियों पर विश्वास नहीं था।

साल के आखीर में एक बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाने वाला था जिसका नाम था "नया याम" उत्सव। उसमें ऐकिम के माता पिता को भी बुलाया गया था। यह उत्सव जहॉ एकिम के माता पिता रहते थे वहॉ से दो घंटे की दूरी पर मनाया जाने वाला था।

ऐकिम उस नाच में हिस्सा लेने के लिये बहुत उत्सुक थी पर उस दिन उसके माता पिता ने उसके जाने से पहले ही करने के लिये उसको बहुत सारा काम दे दिया।

ऐसा उन्होंने इसलिये किया ताकि यह काम उसको वहॉ जाने से रोक पाये क्योंकि वे यह नहीं चाहते थे कि वह वहॉ जाये। वह उनका कहा मानती थी और अपना काम भी बहुत अच्छी तरह से करती थी।

उत्सव वाले दिन सुबह सुबह वे सातों लड़कियॉ आयीं और ऐकिम से उन्होंने अपने साथ चलने के लिये कहा। ऐकिम ने कहा कि आज तो उसको बहुत काम करना था।

उसने कई खाली बर्तनों की तरफ इशारा किया कि उसको उनमें पानी भरना था। फिर उसने उनको एक दीवार दिखायी कि उसे उसको पत्थर से रगड़ रगड़ कर पालिश करना था और साथ में फर्श भी साफ करना था। इसके बाद उसको अपने घर के चारों तरफ से घास भी साफ करनी थी।

इसलिये उसके लिये यह बिल्कुल नामुमकिन था कि वह घर छोड़ कर उनके साथ उस उत्सव में जा सके जब तक कि उसका घर का काम खत्म नहीं हो जाता।

जब उन लड़कियों ने यह सुना तो वे बोलीं यह कोई बड़ी बात नहीं है हम सब तुम्हारा यह काम बहुत जल्दी ही करा देंगी। सो उन सबने पानी के बर्तन उठाये और पानी भरने के लिये चल दीं। कुछ ही देर में वे पानी भर लायीं और सारे बर्तन उन्होंने एक लाइन में सजा कर रख दिये।

फिर उन्होंने पत्थर लिये और उसके घर की सारी दीवारें साफ कर दीं और फर्श भी चमका दिया। उसके बाद घर के चारों तरफ की घास भी साफ कर दी और सब सफाई भी कर दी। इस तरह उन सबने मिल कर उसके घर का सारा काम बहुत जल्दी ही खत्म कर दिया।

जब सारा काम खत्म हो गया तब उन्होंने ऐकिम से कहा — "चलो अब तुम हमारे साथ चलो। अब तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है हमारे साथ न चलने का क्योंकि तुम्हारे घर का सारा काम तो अब खत्म हो चुका है।"

ऐकिम वाकई में उस उत्सव में जाना चाहती थी और क्योंकि उसके माता पिता ने जो काम दिया था वह भी पूरा हो चुका था सो अब उसके पास वाकई कोई बहाना नहीं था इसलिये उसने जाने के लिये हॉ कर दी।

ऐकिम के घर से उस जगह के बीच में जहॉ यह "नया याम" उत्सव मनाया जाने वाला था आधे रास्ते में एक नदी पड़ती थी जो करीब पॉच फीट गहरी थी उसको आधा तैर कर पार करना पड़ता था क्योंकि उसके ऊपर कोई पुल नहीं था।

इस नदी में एक बड़ा ताकतवर जू जू[24] रहता था। उसका नियम यह था कि जो कोई भी इस नदी को पार करता था और फिर

[24] Magic or Black Magic used in West African countries. Here it means a kind of god of Ju Ju. Ju Ju people of Nigeria are like Ojha of India who help to cure the patients of Black Magic and even to do Black Magic themselves on somebody – Jaadoo Tonaa. In Nigeria Ju Ju are the gods also who can grant the wishes, curse the people, or abduct the people.

इसी रास्ते से वापस लौटता था उसको इस जू जू को कुछ खाना देना पड़ता था।

और अगर कोई ऐसा नहीं करता था तो वह जू जू उसको घसीट कर अपने घर ले जाता था और अपना नौकर बना कर रखता था।

वे सातों लड़कियॉ तो इस बात को अच्छी तरह जानती थीं क्योंकि वे इस नदी को भी पार कर चुकी थीं और दूसरी जगह भी जा चुकी थीं क्योंकि उनके दोस्त देश में कई जगह रहते थे।

पर यह लड़की ऐकिम क्योंकि एक अच्छी लड़की थी और पहले बाहर कहीं गयी नहीं थी इसलिये वह इस जू जू के बारे में कुछ नहीं जानती थी। और उन सातों लड़कियों ने ऐकिम को इस जू जू के बारे में कुछ बताया भी नहीं था।

सो काम खत्म होने के बाद वे सब उस उत्सव की जगह चल दीं। उन्होंने वह नदी पार की। कुछ दूर आगे जा कर उनको एक चिड़िया मिली जो एक बहुत ऊॅचे पेड़ पर बैठी थी।

वह चिड़िया ऐकिम को बहुत चाहती थी और उसकी सुन्दरता के गीत गाती रहती थी। उस समय भी वह उसकी सुन्दरता के गीत ही गा रही थी। पर सातों लड़कियों को उस चिड़िया का वह गाना बहुत बुरा लग रहा था क्योंकि वे ऐकिम की सुन्दरता को बिल्कुल भी बरदाश्त नहीं कर सकती थीं।

वे सब ऐकिम को उस जू जू के बारे में बिना बताये ही चलती रहीं। आखिर वे सब उस शहर में आ गयीं जहॉ वह उत्सव मनाया जा रहा था।

ऐकिम अपने घर से बिना कपड़े बदले ही चली आयी थी पर और सब लड़कियॉ वहॉ पर अपने बहुत अच्छे अच्छे कपड़े और मोती[25] के गहने पहन कर आयीं थीं। फिर भी वहॉ सब लोग और लड़कियों से ज़्यादा ऐकिम की ही तारीफ कर रहे थे।

नाच में भी उसको सबसे अच्छी लड़की घोषित किया गया। सभी वहॉ उसको खाने पीने के लिये खूब पाम की शराब, फू फू और जो कुछ भी वह चाहती थी वह सब उसको दे रहे थे।

यह सब देख कर तो वे सातों लड़कियॉ पहले तो उससे जलती ही थीं अब तो उससे पहले से भी ज़्यादा गुस्सा भी हो गयीं और और उससे जलने लगीं।

सारे लोग वहॉ पर नाच गा रहे थे। ऐकिम के माता पिता भी वहॉ पर मौजूद थे पर ऐकिम किसी तरह अगली सुबह तक अपने माता पिता की नजरों से बची रही।

सुबह उन्होंने उससे पूछा कि उसने उनका कहना क्यों नहीं माना और वहॉ आने से पहले अपना काम क्यों नहीं खत्म किया। ऐकिम ने उनको बताया कि उसकी दोस्तों ने सारा काम खत्म करवा दिया

[25] Translated for the word “Beads”, not pearls.

था और उस सब काम को खत्म करने के बाद ही वह वहॉ आयी थी।

उसकी मॉ ने कहा कि उसको अब यहॉ रहने की कोई जरूरत नहीं है और वह तुरन्त ही घर जाये। ऐकिम ने यह सब अपनी दोस्तों को बताया तो उन्होंने कहा कि हम कुछ खा लें फिर हम भी तुम्हारे साथ ही चलते हैं। सो सब लड़कियॉ खाने बैठीं।

उन सातों लड़कियों ने कुछ खाना तो खुद खाया और थोड़ा थोड़ा खाना उस नदी वाले जू जू के लिये बचा कर रख लिया।

उन्होंने तो ऐकिम को इस जू जू के बारे में कुछ बताया ही नहीं था पर इत्तफाक की बात कि ऐकिम के माता पिता भी उसको इस नदी के जू जू के बारे में बताना भूल गये।

उन्होंने एक पल के लिये भी यह नहीं सोचा कि उनकी लड़की नदी पार करेगी तो वह पानी के जू जू को बलि में क्या देगी सो ऐकिम के पास उसे देने के लिये कुछ भी नहीं था।

जब वे सब लड़कियॉ उस नदी पर पहुँची तो ऐकिम ने उन सातों लड़कियों को नदी पर थोड़े थोड़े खाने की बलि चढ़ाते हुए देखा तो उसने भी उनसे थोड़ा सा खाना मॉगा ताकि वह भी नदी वाले जू जू के लिये बलि चढ़ा सके मगर उन्होंने उसको खाना देने से बिल्कुल मना कर दिया।

अब उन्होंने क्योंकि पानी के जू जू को बलि दे दी थी इसलिये वे सब तो बिना किसी परेशानी के नदी पार कर गयीं।

पर जब ऐकिम की नदी पार करने की बारी आयी और वह नदी पार करने लगी तो जैसे ही वह नदी के बीच में पहुँची तो पानी के जू जू ने उसको पकड़ा और पानी के अन्दर ले गया। वह तो तुरन्त ही सबकी नजरों के सामने से गायब हो गयी।

सातों लड़कियाँ यह सब देख रहीं थीं। जब उन्होंने यह पक्का कर लिया कि पानी का जू जू उसको पकड़ कर पानी के अन्दर ले गया तो वे सब अपने अपने रास्ते चली गयीं।

वे सब बहुत खुश थीं क्योंकि वे अपने प्लान में कामयाब हो गयीं थीं। उन्होंने एक दूसरे से कहा कि अब ऐकिम हमेशा के लिये गयी और अब हम यह कभी नहीं सुनेंगे कि वह हमसे ज़्यादा सुन्दर है।

इसके अलावा क्योंकि ऐकिम के गायब होने का कोई गवाह नहीं था इसलिये वे यह भी सोच रहीं थीं कि उनका यह काम कोई जान भी नहीं पायेगा और वे बच जायेंगीं सो वे खुशी खुशी घर चली गयीं।

पर वह यह भूल गयीं कि वह नन्हीं चिड़िया जो जब वे जा रही थीं ऐकिम की सुन्दरता का गाना गा रही थी वह अभी भी वहाँ थी और सब देख रही थी। वह एकिम के लिये बहुत दुखी थी।

यह सब देख कर उसने निश्चय किया कि समय आने पर वह ऐकिम के माता पिता को इसके बारे में सब कुछ साफ साफ बता देगी। हो सकता है कि वे उसको किसी तरह बचा सकें।

चिड़िया ने ऐकिम को उन सातों लड़कियों से खाना माँगते हुए और उन सातों लड़कियों को उसे मना करते हुए भी सुन लिया था।

अगली सुबह जब ऐकिम के माता पिता घर वापस लौटे तो उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनके घर का दरवाजा बन्द था और उनकी बेटी का आस पास में भी कोई पता नहीं था। वे पड़ोसियों से पूछने गये परन्तु पड़ोसियों को भी उसका कोई पता नहीं था।

फिर वे उन सातों लड़कियों के पास गये जिनके साथ ऐकिम उस उत्सव में गयी थी और उनसे ऐकिम के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि उनको उसके बारे में कुछ पता नहीं सिवाय इसके कि वह यहाँ शहर तक तो उनके साथ ठीक से आ गयी थी। फिर उसने कहा कि वह अपने घर जा रही है।

ऐकिम का पिता को जब अपनी बेटी नहीं मिली तो वह अपने जू जू आदमी[26] के पास गया।

उसने अपनी कौड़ियाँ[27] फेंक कर उसको बताया कि ऐकिम पानी वाले जू जू को बिना बलि दिये हुए ही नदी पार कर रही थी जिससे वह जू जू नाराज हो गया। उसने ऐकिम को पकड़ लिया और उसे अपने घर ले गया।

[26] Ju Ju man – or witch doctor

[27] Translated for the word “Cowries”. They are a kind of sea shells. See their picture above.

उसने ऐकिम के पिता को यह भी बताया कि वह अगली सुबह को एक बकरा, एक टोकरी अंडे, और एक सफेद कपड़े का टुकड़ा ले कर नदी पर जाये और पानी के जू जू को बलि चढ़ाये।

ऐसा करने से ऐकिम सात बार पानी से बाहर फेंकी जायेगी उस समय वह उसको पकड़ सकता है और अगर उसने ऐसा नहीं किया तो उसकी बेटी फिर हमेशा के लिये गायब हो जायेगी।

ऐकिम का पिता घर वापस आया। घर आ कर उसने देखा कि एक छोटी चिड़िया उसके घर में बैठी हुई है। यह वही चिड़िया थी जिसने ऐकिम को नदी में डूबते देखा था। उसने जो कुछ भी देखा और सुना था सब कुछ ऐकिम के पिता को बता दिया।

उसने उसको यह भी बताया कि इसमें सारी गलती उन सातों लड़कियों की थी जिन्होंने ऐकिम को बलि के लिये खाना देने से मना कर दिया था। ऐकिम बिल्कुल बेकुसूर थी।

सो अगले दिन ऐकिम के माता पिता नदी पर पानी के जू जू के लिये बलि चढ़ाने गये और अपने जू जू आदमी की सलाह के अनुसार उन्होंने उसके लिये बलि चढ़ायी।

जैसे ही उन्होंने ऐसा किया पानी के जू जू ने ऐकिम को नदी के बीच में से ऊपर फेंक दिया। ऐकिम के पिता ने उसे लपक लिया और धन्यवाद दे कर घर आ गया। उसने किसी को यह नहीं बताया कि उसको उसकी बेटी वापस मिल गयी है।

अब उसने उन सात लड़कियों से बदला लेने का प्लान बनाया। उसने अपने घर के बीचोबीच एक गड्ढा खोदा और उसकी तली में कॉटे और सूखे हुए पाम के पत्ते बिछा दिये और उस गड्ढे को उसने नयी चटाइयों से ढक दिया।

उसके बाद उसने गॉव भर में यह खबर फैला दी कि आत्माओं की दुनियॉ से अपनी बेटी के वापस मिलने की खुशी में वह एक दावत कर रहा है।

उसकी उस दावत में बहुत सारे लोग आये और खाना खा कर रात भर उन्होंने खूब नाचा और गाया पर वे सात लड़कियॉ उस दावत में नहीं आयीं क्योंकि वे बहुत डरी हुई थीं।

अगले दिन उन लड़कियों ने सुना कि उस दावत में कोई खास बात नहीं हुई और सब कुछ सामान्य था तो वे सुबह ही उधर गयीं और जा कर नाचने वालों में मिल गयीं। पर वे एकिम से ऑखें नहीं मिला पा रही थीं जो नाच वाले गोले के बीच में बैठी थी।

जब ऐकिम के पिता ने उन सातों लड़कियों को देखा तो उसने उनको बड़े प्यार से घर में ऐसे बुलाया जैसे वह उनको अपनी बेटी की दोस्त समझ कर अन्दर बुला रहा है।

अन्दर आने पर उसने उनको एक एक पीतल की डंडी दी जो उसने उनके गले में पहना दी। उसने उनको टोम्बो[28] भी पीने के लिये दी।

[28] Tombo is a kind of alcoholic drink used in Nigeria

फिर वह उनको उस गड्ढे की तरफ ले गया जो उसने उनके लिये खोद रखा था। वहॉ ले जा कर उसने उनको उस चटाई पर बैठने को कहा जो उसने उस गड्ढे पर बिछा रखी थी। जैसे ही उन्होंने उस चटाई पर पैर रखा वे उस गड्ढे में गिर गयीं और चिल्लाने लगीं।

इसके बाद वह जलते हुए अंगारे ले आया और उनको उनके ऊपर डाल दिया। अब तो वे दर्द के मारे बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगीं। तुरन्त ही सूखी पाम की पत्तियों ने भी आग पकड़ ली और वे सब उसी गड्ढे में जल कर मर गयीं।

जब वहॉ आये लोगों ने चिल्लाना सुना और धुँआ देखा तो वे सब अपने अपने घर भाग गये।

अगले दिन उन सातों लड़कियों के पिता सरदार के पास गये और उसको बताया कि ऐकिम के पिता ने उनकी बेटियों को मार डाला है। सरदार ने ऐकिम के पिता को बुलवाया और उससे उसके इस काम की सफाई मॉगी।

ऐकिम का पिता अपने जू जू आदमी और उस छोटी चिड़िया को अपना गवाह बना कर साथ ले कर सरदार के पास गया। जू जू आदमी पर सब लोग विश्वास करते थे।

सो जब सरदार ने सारा मामला सुना तो उसने ऐकिम के पिता से कहा कि उसको अपनी लड़की का बदला लेने के लिये केवल एक

लड़की को ही मारना चाहिये था सात को नहीं। फिर उसने ऐकिम को लाने के लिये कहा।

जब वह वहॉ आयी तो सरदार ने देखा कि वह बहुत सुन्दर थी सो उसने कहा कि ऐकिम के पिता ने उन सातों लड़कियों को मार कर ठीक ही किया और अब उसके खिलाफ कोई मामला नहीं था।

उसने उन सातों लड़कियों के माता पिता को वापस भेज दिया और कह दिया कि जा कर अपनी बेटियों के मरने का दुख मनायें। उनकी बेटियॉ बहुत ही बुरी थीं और दूसरों से जलन रखने वाली थीं। ऐकिम के साथ जो बर्ताव उन्होंने किया उसकी उनको ठीक सजा मिली।

5 श्वेत वसन्त की कहानी[29]

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया जैसी लोक कथाओं के इस संग्रह में यह लोक कथा भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था जिसके एक ही बेटा था। वह उसको बहुत प्यार करता था। उसने उसको वह सब कुछ दे रखा था जो उसको चाहिये था।

उसके बेटे को एक बागीचे में एक बहुत सुन्दर मकान चाहिये था सो उसने उसके लिये वैसा ही एक मकान बनवाया जैसा उसको चाहिये था और जो एक बहुत सुन्दर बागीचे में था।

एक दिन जब उसका बेटा अपने बागीचे में टहल रहा था तो उसने एक छोटी सी चिड़िया टूनटूनी[30] के घोंसले में हाथ डाला तो वहाँ उसको उसका एक अंडा मिला। उसने वह अंडा उठा लिया और उसे घर ला कर अपने घर की दीवार में बनी एक आलमारी में रख दिया।

[29] The Story of Swet-Basanta – a folktale from India, Asia. Taken from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. Hindi translation of this book has been published by NBT, Delhi. 2020.

[30] Toontooni – a small bird

अंडे को आलमारी में रख कर उसने आलमारी का दरवाजा बन्द कर दिया और उसे वहॉ रख कर वह उसे बिल्कुल ही भूल गया।

हालॉकि सौदागर के बेटे का यह अपना घर था पर वहॉ उसके पास कुछ बहुत ज़्यादा सामान नहीं था।

जैसे किसी भी हालत में उसके पास कोई रसोइया नहीं था क्योंकि उसकी मॉ उसके लिये सुबह से ले कर शाम तक का सारा खाना भेजती थी – नाश्ता, दोपहर का खाना, शाम का नाश्ता, रात का खाना और और भी बहुत कुछ जो उसको जरूरत होती।

वह अंडा जो उसने आलमारी में रखा था एक दिन फूट गया और उसमें से एक बहुत सुन्दर सी बच्ची निकल आयी। पर उस सौदागर के बेटे को कुछ पता ही नहीं था।

क्योंकि अंडे को बारे में तो वह सब कुछ भूल चुका था और जिस दिन से उसने उस आलमारी में वह अंडा रखा था आलमारी का दरवाजा भी बन्द था हालॉकि उसमें ताला नहीं लगा था।

वह बच्ची बिना सौदागर के बेटे के या किसी और की जानकारी के उस बन्द आलमारी में बढ़ने लगी। जब वह चलने लायक हो गयी तो एक दिन उसने उस आलमारी का दरवाजा खोला।

उसने देखा कि कि फर्श पर सौदागर के बेटे का खाना रखा हुआ है जो उसकी मॉ ने उसके लिये भेजा था। वह आलमारी से

बाहर आयी और उसने उसमें से थोड़ा सा खाना खाया और फिर वापस अपने कमरे में यानी आलमारी में चली गयी।

सौदागर के बेटे की मॉ अपने बेटे के लिये जितना वह खा सकता था हमेशा उससे कुछ ज़्यादा ही खाना भेजती थी इसलिये उसको वह खाना कभी कम ही नहीं लगा।

अब वह बच्ची रोज उस आलमारी में से बाहर आने लगी और उसके खाने में से रोज खाना खाने लगी। खाना खाने के बाद वह अपनी आलमारी में वापस चली जाती।

पर जैसे जैसे वह बच्ची बड़ी होती गयी वह पहले से ज़्यादा खाना खाने लगी। अब सौदागर के बेटे को अपना खाना कम लगने लगा तो उसे लगा कि उसका खाना कोई खा रहा है।

पर यह तो वह तो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि आलमारी के अंडे में से कोई बच्ची निकली होगी और वह यह खाना खा रही होगी। बस वह तो यही सोचता रहा कि उसकी मॉ उसके लिये इतना कम खाना कैसे भेज सकती है कि वह उसको भी पूरा न पड़ सके।

एक दिन उसने अपने नौकर से अपनी मॉ को कहलवाया कि उसका खाना कम था। और केवल कम ही नहीं बल्कि उसके परसे जाने का ढंग भी ठीक नहीं था।

क्योंकि आलमारी वाली बच्ची अपनी उॅगलियों से दाल चावल और खाने की दूसरी चीज़ें खाती थी सो जिस तरह से वह खाना

थाली में रखा जाना चाहिये था वह उस तरह से नहीं रखा रहता था। इसलिये उसको लगा कि खाने को परसे जाने का ढंग भी ठीक नहीं था।

और क्योंकि वह जल्दी में होती थी इसलिये खा कर वह तुरन्त ही अपनी आलमारी वाले घर में चली जाती थी ताकि कोई उसे देख न ले। उसके पास इतना समय ही नहीं होता था कि वह उस खाने में से थोड़ा सा खाने के बाद दाल चावल आदि सब चीज़ें ठीक कर के रख दे।

मॉ तो यह सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गयी क्योंकि वह तो जितना उसका बेटा खाता था उससे कहीं ज़्यादा खाना भेजती थी। और इसके अलावा वह उसका खाना अपने हाथ से बड़े साफ सुथरे तरीके से चॉदी की एक थाली में परस कर भेजती थी।

पर जब उसके बेटे ने वही शिकायत बार बार की और रोज की तो उसने अपने बेटे से कहा कि वह एक दिन उस खाने को देखे कि क्या कोई ऐसा है जो उससे छिप कर उसका खाना खाता हो।

सो इस प्लान के अनुसार जब उसका नौकर उसका नाश्ता ले कर आया और उसको फर्श पर एक साफ जगह पर रखा तो सौदागर का बेटा उस समय बजाय नहाने जाने के जैसा कि वहॉ का रिवाज था एक जगह छिप गया और खाने पर नजर रखे रहा।

कुछ मिनट बाद ही उसने देखा कि उसकी दीवार की आलमारी का दरवाजा खुला और उसमें से एक सोलह साल की सुन्दर सी

लड़की बाहर निकली। वह नाश्ते के सामने बिछे हुए आसन पर आ कर बैठ गयी और उसने खाना शुरू कर दिया।

यह देख कर सौदागर का बेटा अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकल आया और वह लड़की वहाँ से बच कर नहीं भाग सकी।

सौदागर के बेटे ने उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की तुम कौन हो? तुम धरती पर पैदा हुई तो नहीं लगतीं क्या तुम किसी देवता की बेटी हो?"

लड़की बोली — "मुझे नहीं मालूम कि मैं कौन हूँ। मैं तो बस इतना जानती हूँ कि एक दिन मैंने अपने आपको इस आलमारी में बन्द पाया और तबसे मैं यहीं रह रही हूँ।"

सौदागर के बेटे ने सोचा कि यह तो बड़ी अजीब बात है। पर फिर उसे याद आया कि सोलह साल पहले उसने आलमारी में एक अंडा रखा था जो उसने टूनटूनी चिड़िया के घोंसले में से उठाया था।

वह आलमारी वाली लड़की बहुत सुन्दर थी। उस लड़की की इतनी सुन्दरता ने सौदागर के दिमाग पर बहुत असर डाला तो उसने अपने मन में सोच लिया कि वह शादी करेगा तो उसी से।

उस दिन के बाद वह लड़की फिर आलमारी में नहीं गयी बल्कि सौदागर के बड़े घर के एक कमरे में ही रहने लगी।

अगले दिन सौदागर के बेटे ने अपनी माँ को सन्देश भिजवा दिया कि वह शादी करना चाहता है। माँ ने जब अपने बेटे का यह

सन्देश सुना तो अपने आपको बहुत बुरा भला कहा कि उसने अपने बेटे की शादी के बारे में पहले क्यों नहीं सोचा।

फिर उसने और उसके पति ने बेटे से कहा कि वे अगले दिन ही एक घटक[31] को इधर उधर अलग अलग देशों में उसके लिये लड़की देखने के लिये भेजेंगे।

पर बेटे ने उनसे कहा कि उसने एक बहुत ही प्यारी सी लड़की पहले से ही देख रखी है और अगर उनको कोई ऐतराज न हो तो वह उसको उनसे मिलवाने ले आये।

सौदागर और उसकी पत्नी को कोई ऐतराज नहीं था सो वह उस आलमारी वाली लड़की को उनसे मिलवाने के लिये ले गया।

सौदागर और उसकी पत्नी तो उस अजनबी लड़की की बेजोड़ सुन्दरता और शान देख कर इतने प्रभावित हुए कि उसके जन्म के बारे में बिना कुछ जाने हुए उन्होंने उससे हॉ कर दी और उनकी सगाई पक्की कर के उनकी शादी भी कर दी।

समय बीतता गया और सौदागर के बेटे के दो बेटे हो गये। बड़े का नाम रखा गया श्वेत और छोटे का नाम रखा गया वसन्त। सौदागर और उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। श्वेत और वसन्त दोनों बड़े हो कर बहुत ही अच्छे बच्चे बने।

[31] Ghatak, called in Bengali language, is called a matchmaker in English language. He arranges marriages.

समय आने पर श्वेत की भी शादी हो गयी। श्वेत की शादी के कुछ समय बाद उसकी मॉ यानी आलमारी वाली लड़की की भी मृत्यु हो गयी। अपनी पहली पत्नी के मरने के बाद सौदागर के बेटे ने जल्दी ही एक और नौजवान और सुन्दर लड़की से शादी कर ली।

अब क्योंकि श्वेत की पत्नी श्वेत की सौतेली मॉ से बड़ी थी तो वही घर की मालकिन बन गयी।

दूसरी सौतेली मॉओं की तरह से श्वेत की सौतेली मॉ भी श्वेत और वसन्त दोनों से नफरत करती थी। उधर घर की दोनों स्त्रियॉ यानी श्वेत की पत्नी और श्वेत की सौतेली मॉ भी आपस में लड़ती झगड़ती रहती थीं।

एक दिन ऐसा हुआ कि एक मछियारा सौदागर[32] के लिये एक बहुत सुन्दर मछली ले कर आया। यह मछली दूसरी मछलियों जैसी नहीं थी जैसी कि इधर उधर पायी जाती हैं। उसने सौदागर से उसको खरीदने की प्रार्थना की और उसने उस मछली के ये गुण बताये।

कि जो कोई भी इस मछली को खायेगा तो जब वह हॅसेगा तो उसके मुॅह से लाल[33] गिरेंगे जब वह रोयेगा तो उसकी ऑखों से मोती गिरेंगे।

[32] We will call Saudaagar to the merchant's son Shwet, as his father had already died.

[33] Translated for the word "Maanik". In English it is called Ruby. It is one of the nine precious gems.

सौदागर ने जब उस मछली के ये आश्चर्यजनक गुण सुने तो उसने उसको एक हजार रुपये दे कर तुरन्त ही खरीद लिया और उसको श्वेत की पत्नी के हाथ पर रख दिया जो अब घर की मालकिन थी।

उसने उससे कहा कि वह उसको ठीक से पकाये और केवल उसी को खाने के लिये दे।

घर की मालकिन ने अपने ससुर और मछियारे के बीच में हुई बातचीत सुन ली थी सो उसने चुपचाप यह निश्चय किया कि वह यह मछली अपने पति श्वेत और उसके भाई वसन्त को ही खाने के लिये देगी। अपने ससुर के लिये वह कोई सुन्दर सा मेंढक पकायेगी और उसको वह दे देगी।

जब उसने वह मछली और मेंढक दोनों पका लिये तो उसने अपनी सौतेली सास और अपने देवर के बीच कुछ झगड़े की आवाजें सुनीं।

वसन्त को जो अभी लड़का ही था कबूतर बहुत अच्छे लगते थे। उसने उनको पाल भी रखा था। तो अभी ऐसा लग रहा था कि जैसे उनमें से एक कबूतर उड़ कर उसकी सौतेली माँ के कमरे में जा पहुँचा था और उसने उसको अपने कपड़ों में छिपा लिया था।

सो वसन्त उसके कमरे में जा कर उससे ज़ोर ज़ोर से बोल कर अपना कबूतर माँग रहा था। उसकी सौतेली माँ ने कहा कि उसको उसके कबूतर के बारे में कुछ नहीं मालूम।

यह झगड़ा वसन्त के बड़े भाई श्वेत ने भी सुना तो उसने वहाँ आ कर अपनी सौतेली माँ के कपड़ों में वह कबूतर ढूँढना शुरू किया निकाला और उसे जबरदस्ती वहाँ से निकाल कर अपने छोटे भाई को दे दिया।

सौतेली माँ ने उसे कोसा और कसम खा कर बोली — "रुक जा। ज़रा मेरे पति को आने दे। इससे पहले कि मैं उसको पानी भी पीने को दूँ मैं उससे तुम दोनों का खून करा कर ही रहूँगी।"

श्वेत की पत्नी ने अपने पति को बुलाया और अपनी सौतेली सास के बारे में कहा — "यह स्त्री तो बहुत ही खराब है। इसने तो मेरे ससुर को कुछ ज़रा ज़्यादा ही अपने कब्जे में कर रखा है। यह तो वह कर के ही रहेगी जो इसने कहा है।

हमारी ज़िन्दगी खतरे में है इसलिये हमें इस बारे में कुछ करना चाहिये पर पहले हम कुछ खा लें। फिर ऐसा करते हैं कि हम तीनों यहाँ से भाग चलते हैं नहीं तो अब हम बचने वाले नहीं।"

यह सुन कर श्वेत ने वसन्त को बुलाया और उससे वह सब कहा जो उसने अपनी पत्नी से सुना था। तीनों ने रात होने से पहले पहले यह घर छोड़ने का प्लान बना लिया।

श्वेत की पत्नी ने अपने पति और देवर के सामने वह आश्चर्यजनक पकी हुई मछली रखी जिसके आश्चर्यजनक गुण उस मछियारे ने उसके ससुर को बताये थे।

तीनों ने खूब पेट भर कर खाना खाया। फिर उसने अपना सारा गहना बॉधा। क्योंकि उनके पास केवल एक ही घोड़ा था और वह बहुत ही तेज़ भागता था सो वे तीनों उस घोड़े पर बैठ गये।

श्वेत ने उसकी रास[34] पकड़ी, श्वेत की पत्नी अपना गहनों का बक्सा ले कर उसके पीछे बैठी और उसके पीछे बैठा वसन्त। घोड़ा बहुत तेज़ी से भाग लिया।

वे कई मैदानों और शहरों से हो कर गुजरे। आधी रात के बाद वे एक नदी के पास एक जंगल में पहुॅच गये। अब यहॉ एक बहुत ही अप्रिय घटना घटी।

श्वेत की पत्नी को बच्चे की आशा थी सो उसको बच्चा होने वाला था। वे सब घोड़े से उतर पड़े और उसने एक दो घंटे बाद ही एक बेटे को जन्म दिया। अब वे दोनों भाई अकेले इस जंगल में क्या करें।

नयी मॉ और उसके नये पैदा हुए बच्चे को गर्म रखने के लिये जंगल में आग जलायी जानी चाहिये पर इस जंगल में आग आये कहॉ से।

[34] Translated for the word “Reins”.

क्योंकि वहाँ न तो कोई आदमी ही दिखायी दे रहा था और न किसी के रहने की जगह ही दिखायी दे रही थी तो आग आये कहाँ से। पर फिर भी कहीं न कहीं से तो आग लानी ही थी।

दिसम्बर का महीना था। उस समय अगर माँ और बच्चे को गर्म नहीं रखा गया तो यकीनन माँ और बच्चा दोनों ही मर जायेंगे। सो श्वेत ने वसन्त को अपनी पत्नी के पास बैठने के लिये कहा और वह खुद रात के अँधेरे में आग ढूँढने निकल पड़ा।

श्वेत जंगल में कई मील चला पर उसको उस जंगल में आग तो क्या आदमी तक के रहने की कोई जगह नहीं मिली। आखिर शुक्र तारे[35] की रोशनी ने उसको रास्ता दिखाया तो उसको दूर एक बड़ा सा शहर नजर आया।

यह देख कर वह बहुत खुश हो गया कि अब उसकी यात्रा खत्म हुई और वह अपनी पत्नी के लिये आग हासिल कर पायेगा जो अपने नये पैदा हुए बच्चे के साथ जंगल में ठंड में पड़ी है।

लेकिन तभी उसके साथ अचानक एक और अजीब सी घटना घटी। अचानक एक हाथी उसके रास्ते पर से गुजरा। उसने उसको अपनी सूँड़ से उठा कर अपने बहुत ही बढ़िया हौदे[36] पर बिठा लिया और उसको ले कर शहर की तरफ तेज़ी से दौड़ लिया।

---

[35] Translated for the words “Venus Star”

[36] Hauda, or Howda is the structure built for sitting on an elephant – see ts picture above. It is kept on the elephant. It may be big or small, very simply to very richly decorated, for one person or more than one person.

श्वेत तो यह देख कर दंग रह गया। उसको हाथी का यह काम बिल्कुल ही समझ नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया। वह सोचता रहा कि किस्मत ने पता नहीं उसके लिये क्या लिख रखा है।

असल में तो एक ताज उसका इन्तजार कर रहा था।

उस शहर में जिसमें वह अब पहुँचने ही वाला था रोज हर सुबह एक राजा चुना जाता था क्योंकि हर सुबह पहले दिन वाला राजा रानी के कमरे में मरा हुआ पाया जाता था। यह राजा क्यों मर जाता था यह किसी को नहीं मालूम था यहाँ तक कि रानी को भी यह मालूम नहीं था।

अगले दिन होने वाला राजा उस रानी को अपनी रानी बना लेता था और यह हाथी जिसने श्वेत को उठाया वही राजा को चुनता था। हर सुबह यह हाथी दूर और पास की जगहों में चला जाता था और फिर जिस किसी को भी अपनी पीठ पर बिठा कर ले आता था लोग उसी को राजा मान लेते थे।

उस दिन इस हाथी ने श्वेत को उठाया और ले आया। यह हाथी श्वेत को ले कर बड़ी शान से शहर की भीड़ भाड़ वाली सड़क पर चला तो वहाँ के लोग श्वेत को अपना राजा स्वीकार करते रहे।

श्वेत नहीं समझ सका कि वे क्या कह रहे थे। फिर वह हाथी महल में घुसा और उसने उसको सिंहासन पर धीरे से बिठा दिया।

अब वह कुछ खुश और कुछ रोते हुए लोगों के बीच वहाँ का राजा घोषित कर दिया गया था।

दिन भर वह वहॉ के पहले दिन चुने हुए राजा के मरने के बारे में सुनता रहा जो वहॉ हर रात होता था। पर वह बहुत साहसी था। उसने हर वह सावधानी बर्तने की सोची जिससे वह इस भयानक घटना के होने को बदल सकता था।

फिर भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसको किस तरह के खतरे का सामना करना पड़ेगा ताकि वह उसके लायक तरीका अपना सके क्योंकि जब उसको उस खतरे का ही नहीं पता था कि वह किस किस्म का था।

फिर भी उसने दो चीज़ों पर विचार किया और ये दो चीज़ें थीं कि एक तो वह रानी के कमरे में हथियार ले कर जायेगा। दूसरे वह सारी रात चौकन्ना हो कर जागेगा।

रानी नौजवान थी और बहुत सुन्दर थी। उसका चेहरा इतना भोला था कि उसके बारे में तो यह सोचा ही नहीं जा सकता था कि वह अपने रात के साथी को मारने के लिये कोई नीच तरीका इस्तेमाल भी कर सकती थी।

श्वेत ने रानी के कमरे में अपनी शाम बड़े अच्छे ढंग से गुजारी। जैसे जैसे रात बढ़ती गयी रानी सो गयी पर श्वेत जागता ही रहा। वह सावधान था। वह इस आशा में कमरे के हर कोने और हर दरार को देखता रहा कि बस अब उसका भी कभी भी कत्ल होने वाला है।

जब काफी रात बीत गयी तो उसने देखा कि रानी के बॉये नथुने से एक बारीक सा धागा निकला। यह धागा इतना बारीक था कि इसको देखना नामुमकिन सा था।

पर फिर भी वह उसको दिखायी दे गया तो वह उसको देखता ही रहा। उसको लगा कि वह कई गज लम्बा था फिर भी वह उसके बॉये नथुने में से निकलता ही जा रहा था।

जब वह धागा सारा उसमें से निकल आया तो वह फूल कर मोटा होने लगा। कुछ ही पलों में उस बारीक से धागे ने एक बहुत बड़े सॉप का रूप ले लिया।

जैसे ही वह सॉप के रूप में बदला श्वेत ने तुरन्त ही उस सॉप का सिर काट दिया। सिर काटते ही उसका शरीर तड़पने लगा और वह मर गया।

सॉप को मारने के बाद श्वेत कमरे में शान्त बैठा था और किसी और अनहोनी घटना के घटने का इन्तजार करता रहा पर हुआ कुछ भी नहीं। वह रात फिर ऐसे ही बिना किसी अप्रिय घटना के गुजर गयी।

रात को रानी और दिनों से ज़्यादा देर तक सोयी क्योंकि अब वह सॉप से आजाद हो चुकी थी जिसने उसके पेट में घर बना रखा था।

अगली सुबह मन्त्री लोग वहॉ रोज वाली खबर सुनने के लिये आये कि राजा मर गया है पर जब रानी के महल की दासियों ने

रानी के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो वे और रानी सभी यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित थे कि श्वेत ज़िन्दा था।

बाहर आ कर श्वेत ने सबको बताया कि किस तरह से रानी के नथुने से एक सॉप निकलता था और वही राजा को मार देता था। और आज उसी सॉप को खुशकिस्मत श्वेत ने मार डाला था। अब वहॉ कोई राजा नहीं मरेगा।

हालॉकि यह एक बड़ी अजीब सी बात थी पर सच थी कि जैसे ही श्वेत ने सॉप मारा श्वेत अब अपनी पहली पत्नी को बिल्कुल भूल गया था। उसे याद ही नहीं था कि उसकी पत्नी जंगल में एक बच्चे को जन्म देने के बाद ठंड में पड़ी है और उसका भाई वहॉ उसकी देखभाल कर रहा है।

उस राजगद्दी को पा कर ऐसा लग रहा था जैसे वह तो अपनी सारी पुरानी ज़िन्दगी ही भूल गया था।

श्वेत तो अपनी पुरानी ज़िन्दगी भूल गया तो अब हम वसन्त के पास चलते हैं जो श्वेत की पत्नी की देखभाल कर रहा है।

X X X X X X X

उधर वसन्त जिसके ऊपर उसका भाई अपनी पत्नी और बच्चे को छोड़ गया था कई घंटों तक उसका इन्तजार करते करते थक गया। वह तो बस इसी उम्मीद में रहा कि उसका भाई आग ले कर अब

आता होगा अब आता होगा पर वहॉ तो सारी रात बीत गयी और उसका तो कहीं पता ही नहीं था।

सुबह जब सूरज निकल आया तो वह नदी के किनारे गया जो वहीं उसके पास ही बह रही थी। उसने वहॉ चिन्ता से इधर उधर देखा कि शायद उसका भाई वहीं कहीं दिखायी दे जाये पर उसको तो वह वहॉ भी कहीं दिखायी नहीं दिया।

बहुत परेशान हो कर वह वहीं नदी के किनारे पर बैठ गया कि अब वह क्या करे। तभी उसने देखा कि एक नाव जा रही थी जिसमें एक सौदागर अपने देश को वापस जा रहा था।

क्योंकि नाव किनारे से बहुत दूर नहीं थी तो उस सौदागर ने वसन्त को रोते हुए देखा। पर उसने सबसे ज़्यादा अजीब चीज़ जो उसने देखी वह यह थी कि उस रोते हुए आदमी के पास मोती के ढेर लगे पड़े थे।

सौदागर के कहने पर नाविक नाव को किनारे की तरफ ले गया। वहॉ जाने पर सौदागर ने देखा कि वह मोती का ढेर तो सच्चे मोती का ढेर था और वह ढेर तो हर पल बढ़ता ही जा रहा था। उस मोती की चमक उसने अब तक जितने मोती देखे थे उनमें से सबसे अच्छी थी।

यह सब इसलिये था क्योंकि ये मोती उस लड़के की ऑखों से गिरे हुए ऑसू थे और ये तो वे ऑसू भी नहीं थे बल्कि ये तो मोती ही थे।

सौदागर ने वे मोती अपनी नाव में ले जाने शुरू कर दिये और अपने नौकरों की सहायता से वसन्त को भी उठा कर अपनी नाव पर बिठा लिया और उसको एक लट्ठे से बॉध दिया।

वसन्त ने उनको रोकने की कोशिश भी की पर वह इतने लोगों के सामने क्या कर सकता था।

अपने भाई, भाई की पत्नी, उनके बच्चे और अपने नाव पर कैदी होने के बारे में सोचते हुए वह और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा जिससे सौदागर और खुश हो गया क्योंकि जितनी ज़्यादा ज़ोर से वह रो रहा था सौदागर उतना ही अमीर होता जा रहा था। क्योंकि जितने ज़्यादा उसके ऑसू बह रहे थे उसके मोती भी उतने ही ज़्यादा बढ़ रहे थे।

जब सौदागर अपने शहर पहुँच गया तो वसन्त को उसने एक कमरे में बन्द कर दिया। अब वह उसको एक निश्चित समय पर रोज पीटता था ताकि वह रोये और उसको और बहुत सारे मोती मिल जायें। क्योंकि उसका हर ऑसू मोती बन जाता था।

एक दिन सौदागर ने अपने नौकरों से कहा — "यह लड़का अपने रोने पर तो मुझको मोती देता है अब मैं यह देखना चाहता हूँ कि यह मुझे हॅसने पर क्या देगा।"

सो उसने अपने कैदी को गुदगुदी करनी शुरू की तो वसन्त को हॅसी आ गयी। उसके हॅसने पर उसके मुँह से बहुत सारे लाल गिरने शुरू हो गये। अब इसके बाद तो बेचारे वसन्त को कभी कोड़े मारे

जाते तो कभी उसको गुदगुदी की जाती और यह सब उसके साथ गये रात तक किया जाता।

इसका फल यह हुआ कि यह सौदागर अब उस देश का सबसे अमीर आदमी बन गया।

अब हम वसन्त को इस सौदागर के पास कभी कोड़े खाने के लिये और कभी गुदगुदी के लिये यहीं छोड़ते हैं और श्वेत की पत्नी पास यह देखने के लिये चलते हैं कि वह क्या कर रही है।

श्वेत की पत्नी को उसका पति भी छोड़ गया और उसका देवर भी छोड़ गया। वह तो दुख से पागल सी हो गयी। अब वह क्या करे।

एक स्त्री जिसने कुछ घंटों पहले ही एक बच्चे को जन्म दिया हो और वह भी उसका पहला पहला बच्चा हो, वह खुद जंगल में अकेली हो, आसपास में कोई बस्ती न हो तो उसकी हालत तो दया के काबिल ही है न।

वह बहुत रोयी। इतना सारा रोने के बाद उसको कुछ आराम मिला और वह अपने नये पैदा हुए बच्चे को अपनी बॉहों में ले कर सो गयी।

अब ऐसा हुआ कि उस समय वहॉ का कोतवाल उधर से गुजर रहा था। वह बच्चे के मामले में बहुत ही बदकिस्मत था। हर बार जब भी उसकी पत्नी किसी बच्चे को जन्म देती तो वह बच्चा जन्म लेने के थोड़ी देर बाद ही मर जाता था।

इस समय भी वह अपने हाल के पैदा हुए बच्चे को जो अब मर चुका था नदी के किनारे दफ़नाने जा रहा था कि उसकी निगाह एक सोती हुई स्त्री पर पड़ी जो एक बच्चे को अपनी बॉहों में लिये हुए सो रही थी। यह बच्चा तो ज़िन्दा था और एक बहुत सुन्दर लड़का था।

बस कोतवाल के मन में उसको लेने की इच्छा हो आयी सो उसने उसके बच्चे को चुपचाप उस स्त्री की गोद से उठाया अपना मरा हुआ बच्चा उस स्त्री की गोद में रखा और घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपनी पत्नी से कहा कि उसका बच्चा सचमुच में नहीं मरा था। बस उसको केवल ऐसा लग रहा था कि वह मर गया है वह तो ज़िन्दा है। लो यह बच्चा लो। कह कर उसने अपनी पत्नी को श्वेत का बच्चा दे दिया। पत्नी बच्चे को ले कर बहुत खुश हो गयी।

श्वेत की पत्नी को कोतवाल ने उसके साथ जो कुछ भी किया था उसका कुछ पता ही नहीं था। सो जब वह जागी तो उसने देखा कि उसकी गोद में तो मरा हुआ बच्चा है। इस बात का उसको कितना दुख हुआ होगा इसको तो बस केवल सोचा ही जा सकता है।

उसके लिये तो सारी दुनियॉ ही अँधेरी हो गयी। इस दुख में उसने सोचा कि अब वह आत्महत्या कर लेगी। नदी उस जगह से ज़्यादा दूर नहीं थी सो उसने सोचा कि वह उसमें डूब कर अपनी

जान दे देगी। उसने अपने हाथ में अपने गहनों का बक्सा लिया और नदी की तरफ चल दी।

सुबह होने वाली थी सो एक ब्राह्मण वहॉ पर अपनी सुबह की पूजा कर रहा था। उसने एक स्त्री को नदी में जाते हुए देखा तो उसको लगा कि वह भी सुबह सुबह वहॉ नहाने आयी होगी और नदी में नहाने जा रही होगी।

पर जब उसने देखा कि वह तो गहरे पानी की तरफ जा रही है तो उसको कुछ शक हुआ। उसने अपनी पूजा छोड़ी और चिल्ला कर उससे अपने पास आने के लिये कहा।

श्वेत की पत्नी ने देखा कि एक बूढ़ा उसको अपने पास बुला रहा था तो वह वहॉ से वापस आयी और उस बूढ़े के पास आयी। पूछने पर कि वह वहॉ क्या करने जा रही थी उसने उस बूढ़े ब्राह्मण को बताया कि वह वहॉ अपनी ज़िन्दगी का अन्त करने जा रही थी।

और क्योंकि उसके पास कुछ गहने थे तो अगर वह उसके वे गहने स्वीकार कर लेगा तो उसका उसके ऊपर बड़ा एहसान होगा।

ब्राह्मण के पूछने पर कि वह ऐसा क्यों कर रही थी उसने उसको अपनी सारी कहानी बता दी तो उस ब्राह्मण को उसके ऊपर बहुत तरस आया और वह उसको अपने घर ले गया। वहॉ ब्राह्मण की पत्नी ने उसको अपनी बेटी की तरह रख लिया।

सालों गुजर गये।

कोतवाल का बेटा एक बहुत ही तन्दुरुस्त मजबूत सुन्दर लड़के के रूप में बड़ा हो गया। क्योंकि ब्राह्मण का घर कोतवाल के घर से ज़्यादा दूर नहीं था कोतवाल का बेटा एक दिन अचानक ही एक अजनबी सुन्दर ब्राह्मण की बेटी से मिला।

वह स्त्री उसको बहुत अच्छी लगी तो वह उससे शादी करना चाहता था। उसने अपने पिता कोतवाल को इसके बारे में बताया तो कोतवाल इस बारे में ब्राह्मण से मिला।

इस बात पर ब्राह्मण का गुस्सा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया। क्या एक कोतवाल का बेटा एक ब्राह्मण की बेटी का हाथ माँग रहा था?

एक बौना तो चाँद को पकड़ सकता है पर एक कोतवाल के बेटे की एक ब्राह्मण की बेटी से शादी? नहीं नहीं कभी नहीं। पर कोतवाल के बेटे ने तो यह शादी जबरदस्ती करने की ठान रखी थी।

एक दिन वह अपने इस बुरे इरादे से ब्राह्मण के घर की चहारदीवारी पर चढ़ा और उसकी गाय के घर की फूस की छत पर उतर गया। वहाँ जब वह उस कूद से सँभल रहा था तो उसने दो बछड़ों की बातचीत सुनी।

एक बछड़ा बोला — "आदमी लोग हमको बहुत ही निर्दयी, अनपढ़ और अनैतिक समझते है पर मैं समझता हूँ कि आदमी लोग इन मामलों में हमसे भी पचास गुना ज़्यादा हैं।

दूसरा बछड़ा बोला — "तुम ऐसा कैसे कहते हो भैया? क्या आज तुमने ऐसा कुछ देखा?"

पहला वाला बछड़ा बोला — "उस लड़के से बड़ा राक्षस और कौन होगा जो इस समय यहाँ हमारे सिर पर इस घर की फूस की छत पर खड़ा है?"

दूसरा बछड़ा बोला — "ऐसा क्यों? मुझे तो ऐसा लगा कि वह तो हमारे कोतवाल का बेटा है और मैंने तो कभी यह सुना नहीं कि वह इतना खराब है।"

पहले वाला बछड़ा फिर बोला — "अरे तुमने सुना नहीं? तो लो अब मुझसे सुनो। तुम्हें मालूम है कि यह खराब लड़का अब अपनी माँ से शादी करना चाहता है?"

इतना कहने के बाद पहले वाले बछड़े ने उसे श्वेत और वसन्त की कहानी सुनायी कि किस तरह से वे दोनों यानी श्वेत और वसन्त श्वेत की पत्नी के साथ अपनी सौतेली माँ की वजह से घर छोड़ कर भाग गये थे।

फिर कैसे श्वेत की माँ ने जंगल में नदी के किनारे एक बेटे को जन्म दिया। कैसे एक हाथी ने श्वेत को राजा बनाया। कैसे श्वेत ने वह साँप मारा जो रोज रात को रानी के नथुने से निकल कर राजा को मार देता था।

कैसे वसन्त को एक सौदागर उठा लाया और उसे एक कमरे में बन्द कर दिया। वहाँ उससे वह लाल और मोती लेने के लिये कैसे उसको वह कभी मारता है तो कभी उसको गुदगुदी करता है। कैसे कोतवाल ने अपना मरा हुआ बच्चा श्वेत के ज़िन्दा बच्चे से बदला।

फिर कैसे ब्राह्मण ने श्वेत की पत्नी को नदी में डूबने से बचाया और अपने घर में ला कर अपनी बेटी की तरह रखा। फिर कैसे लाड़ प्यार में पला कोतवाल का बेटा उसके प्यार में पड़ गया।

और अब वह कैसे अपना यह खराब इरादा पूरा करने के लिये यहाँ इस फूस की छत पर आया है।"

यह सारी कहानी कोतवाल के बेटे ने बड़े आश्चर्य से उस फूस की छत पर बैठे बैठे सुनी। इसके बाद वह फूस की छत से उतर आया और अपने घर चला गया। वहाँ जा कर उसने अपने पिता कोतवाल से कहा कि उसको जा कर राजा से मिलना चाहिये।

पर उसके पिता ने मना कर दिया तो उसके पिता के मना करने की वजह को न समझते हुए उसने खुद ने राजा से मिलने का निश्चय किया। वहाँ जा कर उसने उनको सारी कहानी बतायी जो उसने गाय के घर की फूस की छत पर बैठे बैठे सुनी थी।

वह राजा तो श्वेत था। यह कहानी सुन कर राजा को अपनी पत्नी और बच्चे की याद आयी। वह अपने बच्चे को इतना बड़ा देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने अपनी पत्नी को ब्राह्मण के घर से बुलवा लिया और ब्राह्मण को बहुत सारा इनाम दे कर विदा किया। अपनी पत्नी को उसने अपनी रानी का दरजा दिया।

कोतवाल के बेटे को उसने अपने बेटा घोषित कर के राज्य का युवराज[37] घोषित किया।

वसन्त को वह सौदागर की जेल से निकाल कर लाया और उस सौदागर को जिसने वसन्त के साथ इतना खराब व्यवहार किया था उसने उसके चारों तरफ कॉटे रख कर उसे ज़िन्दा ही जमीन में गड़वा दिया।

इसके बाद श्वेत, श्वेत की पत्नी और उनका बेटा और वसन्त सभी बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

[37] Yuvaraaj means the “Crown King” – the to be King after the King’s death.

6 राजकुमार शबर की कहानी[38]

जानवरों ने रास्ता दिखाया जैसी लोक कथाओं की यह लोक कथा भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक सौदागर रहता था जिसके सात बेटियॉ थीं। एक दिन सौदागर ने अपनी बेटियों से पूछा — "बेटियों तुम किसकी किस्मत का खाती हो?"

उसकी सबसे बड़ी बेटी ने जवाब दिया — "पिता जी मैं आपकी किस्मत का खाती हूॅ।"

उसकी दूसरी तीसरी चौथी पॉचवीं और छठी बेटी ने भी यही जवाब दिया पर उसकी सबसे छोटी बेटी ने कहा — "पिता जी मैं अपनी किस्मत का खाती हूॅ।"

यह सुन कर सौदागर अपनी सबसे छोटी बेटी से बहुत नाराज हुआ और बोला — "क्योंकि तुम इतनी कृतघ्न हो कि तुम यह कह रही हो कि तुम अपनी किस्मत का खाती हो तो मैं देखता हूॅ कि तुम जब अकेली होगी तब तुम्हें खाना कौन देगा। तुम आज ही मेरे घर से बिना एक पैसा लिये बाहर निकल जाओ।"

[38] The Story of Prince Sobur – a folktale from India, Asia. Taken from the Book : "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. Hindi translation of this book has been published by NBT, Delhi. 2020.

कह कर उसने अपने पालकी उठाने वालों को बुलाया और उनको हुक्म दिया कि वे उसे जंगल के बीच में छोड़ आयें।

लड़की ने अपने पिता से प्रार्थना की वह उसको अपने साथ अपने काम का बक्सा जिसमें उसका सुई धागा रखा रहता था ले जाने की इजाज़त दे दें। उसने उस बक्से को उसे अपने साथ ले जाने की इजाज़त दे दी।

उसने अपने सुई धागे का बक्सा उठाया और पालकी में बैठ गयी। पालकी ले जाने वालों ने पालकी उठायी और चल दिये। वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि एक बुढ़िया उन पर चिल्लायी और उनको रुक जाने को कहा।

वह पालकी के पास आयी और पालकी उठाने वालों से पूछा — "यह तुम मेरी बेटी को कहाँ ले जा रहे हो?" यह बुढ़िया उस सौदागर की सबसे छोटी बेटी की आया थी।

पालकी उठाने वालों ने कहा — "सौदागर जी ने हमें कहा है कि हम इनको ले जा कर बीच जंगल में छोड़ आयें। और हम उनके हुक्म का पालन कर रहे हैं।"

वह स्त्री बोली — "मैं भी इसके साथ जाऊँगी।"

पालकी उठाने वाले बोले — "मगर तुम हमारे साथ कैसे चल पाओगी क्योंकि हम लोग तो भाग भाग कर चलने वालों में से हैं।"

स्त्री बोली — "कुछ भी हो मैं अपनी बेटी के साथ ही जाऊँगी।"

नतीजा यह हुआ कि सौदागर की बेटी के कहने पर उस स्त्री को राजकुमारी के साथ ही पालकी के अन्दर बिठा लिया गया। शाम से पहले ही पालकी उठाने वाले एक घने जंगल में पहुँच गये। वे उसमें अन्दर दूर तक चलते चले गये।

सूरज डूबने पर उन्होंने राजकुमारी और उस स्त्री को पालकी से उतार कर एक पेड़ के नीचे छोड़ दिया और वे खुद घर चले गये।

सौदागर की सबसे छोटी बेटी का मामला वाकई बहुत ही दया के काबिल था। वह मुश्किल से चौदह साल की थी। वह कितने ऐशो आराम में पल कर बड़ी हुई थी और अब रात को वह एक घने जंगल में थी। और यह घना जंगल भी ऐसा कि जहाँ कोई आ नहीं सकता था।

उसके पास एक पैसा भी नहीं था। उसके साथ उसकी रक्षा के लिये वही कुछ था जो उसकी बुढ़िया बेवकूफ आया ने उसको दिया था। वे दोनों वहाँ अकेली खड़ी खड़ी रोने लगीं।

उनको इस तरह रोता देख कर उसके ऊपर तो वहाँ के पेड़ भी बेचारे रो रहे थे। वह बड़ा पेड़ जिसके नीचे वह और बुढ़िया दोनों रो रही थीं बोला क्योंकि उन दिनों पेड़ भी बोला करते थे —

"ओ दुखी लड़की, मुझे तुम्हारे ऊपर बहुत दया आ रही है। अभी कुछ ही देर में जंगली जानवर अपने अपने घरों से अपने खाने की तलाश में बाहर आ जायेंगे और तुम्हें और तुम्हारी साथिन दोनों को खा जायेंगे पर मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।

मैं अपने तने में तुम्हारे लिये एक छेद खोले देता हूँ। जब तुम वह छेद देखो तो तुम उसमें चली जाना। उसके बाद मैं उस छेद को बन्द कर दूँगा तो तुम दोनों उसके अन्दर वहाँ सुरक्षित रहोगी। जंगली जानवर तुमको छू भी नहीं पायेंगे।"

एक पल बाद ही उस पेड़ के तने में एक दरार सी बन गयी और राजकुमारी और बुढ़िया दोनों उस दरार के अन्दर घुस गयीं। उनके पेड़ में घुसते ही पेड़ की वह दरार बन्द हो गयी।

जब रात और गहरी हो गयी तो एक चीता वहाँ आया, एक जंगली भालू वहाँ आया, एक सख्त खाल वाला राइनोसिरौस[39] भी वहाँ आया, एक बड़े बड़े बालों वाला भालू भी वहाँ आया, एक हाथी भी वहाँ आया और एक सींग वाला भैंसा भी वहाँ आया।

वे सब उस पेड़ के पास आ कर गुर्राने लगे क्योंकि उनको आदमी के खून की खुशबू आ गयी थी।

सौदागर की बेटी और बुढ़िया दोनों ने पेड़ के अन्दर से उन जंगली जानवरों की आवाजें सुनी। वे दोनों तो बहुत डर गयीं।

वे जानवर दौड़ते हुए उस पेड़ के पास तक आये और उन्होंने अपने अपने सींगों से उस पेड़ की शाखें तोड़ दीं। उन्होंने उस पेड़ की छाल छील दी। पर इससे तो उनका कोई काम नहीं बना।

[39] Rhinoceros. See its picture above.

राजकुमारी और उसकी आया दोनों ही उस पेड़ के अन्दर सुरक्षित रहीं। रात भर वे जंगली जानवर वहॉ शोर मचाते रहे पर जब वे किसी आदमी को वहॉ न पा सके तो सुबह आते आते वहॉ से चले गये।

सूरज निकलने के बाद उस भले पेड़ ने उन दोनों स्त्रियों से कहा — "ओ दुखी स्त्रियों अब जंगली जानवर मुझे मार पीट कर यहॉ से अपने अपने घर चले गये हैं अब तुम लोग बाहर आ सकती हो।"

कह कर वह पेड़ फिर से दो हिस्सों में बॅट गया और सौदागर की बेटी और उसकी आया दोनों उस पेड़ से बाहर आ गयीं। उन्होंने देखा कि उन जानवरों ने उस भले पेड़ के साथ क्या किया था। उन्होंने उसकी बहुत सारी शाखें तोड़ दी थीं। तना खरोंच दिया था। उसकी छाल छील छील कर फेंक दी थी।

सौदागर की बेटी ने पेड़ से कहा — "ओ भली मॉ तुम सचमुच में बहुत अच्छी हो जो इतनी तकलीफ सह कर भी तुमने हमें शरण दी। तुमको इस सब तकलीफ से जो कल रात इन जंगली जानवरों ने तुम्हें दी बहुत दर्द हो रहा होगा।"

कह कर वे उस पेड़ के पास ही एक तालाब था वहॉ गयीं और वहॉ से काफी सारी मिट्टी ले आयीं। वह मिट्टी ला कर उन्होंने उसके तने पर मल दी खास कर के उन जगहों पर जहॉ उन जानवरों ने उसकी छाल को काटा था छीला था।

जब वह पेड़ के तने पर मिट्टी लगा चुकी तो पेड़ ने कहा — "बेटी तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। मेरे दर्द को अब काफी आराम है। अब मैं अपने लिये इतना परेशान नहीं हूँ जितना कि तुम दोनों के लिये।

तुम लोगों को बहुत भूख लगी होगी क्योंकि तुम लोगों ने तो कल सारा दिन भी कुछ नहीं खाया। मैं तुमको क्या दे सकता हूँ क्योंकि मेरे पास तो मेरे अपने फल भी नहीं हैं।

तुम ऐसा करो कि जो भी पैसे तुम्हारे पास हैं वह इस बुढ़िया को दे दो ओर इसको पास वाले शहर भेज दो ताकि यह तुम्हारे लिये कुछ खाना खरीद कर ला सके।"

दोनों बोलीं कि उनके पास तो कोई पैसा था नहीं। फिर उस लड़की ने अपना सुई धागे का बक्सा खोला तो उसमें उसको पॉच कौड़ियॉ[40] मिल गयीं।

तब पेड़ ने बुढ़िया से कहा कि वह इन कौड़ियों को ले कर शहर जाये और उन पॉच कौड़ियों की कुछ खाई[41] खरीद लाये। सो वह उन पॉच कौड़ियों को ले कर शहर गयी और एक मिठाई वाले के पास जा कर बोली कि वह उसको पॉच कौड़ियों की खाई दे दे।

मिठाई वाला हॅसा और बोला — "जा यहॉ से ओ बुढ़िया, क्या कहीं पॉच कौड़ियों की भी खाई मिलती है?"

---

[40] Sea shells used as money, 160 of which could have been got in 19th century for one pice. See their picture above.

[41] Khai in Bengali language is called for "Fried Paddy"

उसने दूसरी दूकान और दूसरा दूकानदार देखा तो उसने देखा कि वह बुढ़िया बहुत दुखी सी थी। सो उसने उसे उन पॉच कौड़ियों की बहुत सारी खाई दे दी।

खाई ले कर जब वह बुढ़िया वापस लौटी तो पेड़ ने लड़की से कहा — "तुम दोनों इसमें से थोड़ी थोड़ी खाई खा लो आधी से ज़्यादा उठा कर रख लो और बाकी बची हुई खाई पास के तालाब के चारों तरफ उसके किनारे पर बिखेर दो।"

उन्होंने वैसा ही किया जैसा उस पेड़ ने उनसे करने के लिये कहा था। हालॉकि उनको इसकी वजह समझ में नहीं आयी कि पेड़ ने उनको खाई को तालाब के चारों तरफ बिखेरने के लिये क्यों कहा था पर जब पेड़ ने कहा था तो उन्होंने वह कर दिया।

उनका सारा दिन अपनी किस्मत पर रोते हुए गुजरा और रात को वे पिछली रात की तरह से पेड़ के तने के अन्दर घुस गयीं।

पिछली रात की तरह से जंगली जानवर इस रात भी वहॉ फिर आये उन्होंने फिर उस पेड़ को नोचा खरोंचा। पर उस रात को तालाब के किनारे एक नया दृश्य देखने को मिला जो उन दोनों ने सुबह ही देखा।

अगले दिन वहॉ बहुत सारे सुन्दर पंखों वाले सैंकड़ों मोर उनकी बिखेरी हुई खाई खाने आये हुए थे। और जैसे वह आपस में उस स्वादिष्ट खाने के लिये एक दूसरे से झगड़ रहे थे उनके वे सुन्दर पंख नीचे गिरे जा रहे थे।

सुबह सवेरे पेड़ ने उन दोनों स्त्रियों से उन पंखों को इकट्ठा करने के लिये कहा। उन पंखों से सौदागर की बेटी ने एक सुन्दर पंखा बनाया और वह उसको शहर में महल में ले गयी। वहॉ राजा के बेटे ने उस पंखे की बहुत तारीफ की और उसके लिये उसने उसको बहुत सारे पैसे भी दिये।

अब ऐसा हर सुबह होता। रोज सुबह वे मोर तालाब के किनारे आते, अपने पंख गिराते, सौदागर की बेटी रोज उनको इकट्ठा कर के एक पंखा बनाती और उसको बेच देती। इससे उन दोनों के पास बहुत जल्दी ही काफी सारे पैसे इकट्ठे हो गये।

एक दिन पेड़ ने उनसे कहा कि वे कुछ लोगों को नौकर रख लें जो उनके रहने के लिये घर बना दे। सो ईंटें बनायी गयीं। शहतीर[42] बनाने के लिये पेड़ काटे गये। ईंटों का चूरा किया गया। चूना बनाया गया और बस कुछ ही दिनों में उन दोनों के लिये एक शाही किस्म का महल जैसा मकान बन कर तैयार हो गया।

पास की जमीन पर एक बागीचा बना दिया गया और उसमें पानी देने के लिये एक तालाब भी बना दिया गया। अब वे दोनों इस मकान में रहने लगीं।

अब हम इन दोनों को यहॉ रहते हुए छोड़ते हैं और सौदागर के घर चलते हैं

[42] Translated for the “Beam”. See its picture above.

इस बीच धन की देवी सौदागर उसकी पत्नी और उसकी छहों लड़कियों पर बहुत गुस्सा थी। उनके ऊपर बदकिस्मती का पहाड़ टूट पड़ा था। सौदागर का सारा पैसा नष्ट हो गया था। उसका घर और दूसरी जायदाद सब बिक गयी थी। वे सब अब बिल्कुल ही गरीब हो गये थे।

अब ऐसा हुआ कि वे अब अपना पुराना मकान छोड कर उसी महल के पास वाले गॉव में रहने आ गये थे जिस महल में वे दोनों अजनबी स्त्रियॉ रहती थीं। जब वे रहने के लिये वहॉ आये उस समय वहॉ वे स्त्रियॉ अपना तालाब खोद रही थीं।

जबसे वह सौदागर गरीब हुआ था तबसे वह रोज मेहनत मजदूरी कर के जो कुछ भी कमाता था उसी से अपने घर का काम चलाता था।

जब उसने देखा कि उसके घर के पास ही एक तालाब खुद रहा है तो उसको लगा कि वह यहीं इसी अजनबी स्त्री के तालाब को जो जंगल के किनारे पर ही था खोदने का काम कर के कुछ पैसा कमा लेता है। यह सुन कर उसकी पत्नी कहा कि वह भी तालाब खोदने के लिये उसके साथ चलती है। सो वे दोनों उस तालाब की तरफ चल दिये।

उस दिन इत्तफाक से सौदागर की बेटी अपने महल की खिड़की पर बैठी बैठी अपना तालाब खुदते हुए देख रही थी और बाहर के दृश्य का आनन्द ले रही थी तो यह देख कर उसको बहुत आश्चर्य

हुआ कि उसके माता पिता उसके महल की तरफ चले आ रहे हैं। जाहिर था कि वे उस तालाब की खुदाई का काम करने के लिये उधर आ रहे थे।

जैसे ही उसने अपने माता पिता को देखा तो उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे क्योंकि वे दोनों फटे कपड़े पहने हुए थे। उसने तुरन्त ही अपने नौकरों को उनको घर में अन्दर लाने के लिये भेजा।

जब नौकरों ने उनसे जा कर यह कहा कि उनको घर में बुलाया है तो वे तो डर के मारे कॉपने लगे। उन्होंने यह भी देखा कि तालाब तो खुद चुका है।

और जैसा कि उन दिनों का यह रिवाज था कि जब कोई तालाब खोदा जाता था तो खुदाई खत्म होने के बाद उसमें आदमी की बलि चढ़ायी जाती थी। सो उन्होंने सोचा कि क्योंकि तालाब तो खुद चुका है सो अब उनकी बलि देने के लिये उनको बुलाया जा रहा है।

उनका डर तो उस समय और भी बहुत ज़्यादा बढ़ गया जब उनसे उनके फटे कपड़े उतार कर नये कपड़े पहनने को कहा गया जो उनको वहीं महल से दिये गये थे।

महल की उस अजीब अजनबी स्त्री ने उनका डर तो बिल्कुल दूर कर दिया जब उसने उनसे यह कहा कि वह तो उनकी बेटी है। उनको उससे डरने की क्या जरूरत है। वह उनके गले लग गयी और बहुत रोयी।

उस अमीर बेटी ने जबसे उसने अपना घर छोड़ा था तबसे अब तक का उसे अपना सारा हाल बताया तो उसके पिता को भी लगा कि उसने ठीक ही कहा था जब उसने यह कहा था कि वह अपनी किस्मत का खाती है अपने पिता की किस्मत का नहीं।

उसने अपने पिता को बहुत सारा पैसा दिया जिससे वह अपने पुराने शहर जा सका और अपना सौदागरी का काम फिर से शुरू कर सका।

अब सौदागर ने अपने जहाज़ में अपना माल ले कर दूर देश जाने का विचार किया। सब कुछ तैयार था। वह जहाज़ पर चढ़ गया। जहाज़ भी चलने को तैयार था।

पर अजीब सी बात। जहाज़ तो हिले ही नहीं। सौदागर तो हक्का बक्का रह गया कि अब वह क्या करे। कि उसके दिमाग में एक विचार आया।

उसने अपनी उन छहों बेटियों को तो बुलाया था जो उसके साथ रह रही थीं और उनसे पूछा था कि वह व्यापार के लिये जा रहा है तो वह उनको लिये क्या ले कर आये पर उसने यह सवाल अपनी सातवीं बेटी से नहीं पूछा था जिसने आज उसे इस काबिल बनाया था कि वह जहाज़ ले कर व्यापार करने जा सके।

उसने तुरन्त ही अपना एक दूत अपनी सातवीं बेटी के पास भेजा कि वह उससे यह पूछ कर आये कि वह दूर देश व्यापार करने जा रहा है तो वह उसके लिये क्या ले कर आये।

दूत ने जा कर उससे पूछा — "आपके पिता व्यापार करने जा रहे हैं। वह पूछ रहे हैं कि वह जब अपने व्यापार से वापस आयें तो आपके लिये क्या ले कर आयें।"

जब उसके पिता का दूत उसके पास आया तो वह अपनी पूजा कर रही थी। उसने कहा "शबर[43] यानी "ज़रा इन्तजार करो"।

दूत समझा कि शायद उसकी बेटी कह रही है कि उसको वह चीज़ चाहिये जिसको शबर कहते हैं। वह सौदागर के पास भागा भागा आया और बोला "उनको शबर चाहिये।

यह सुनते ही जहाज़ अपने आप ही चल पड़ा और सौदागर ने अपने व्यापार के लिये यात्रा करनी शुरू कर दी।

वह कई बन्दरगाहों पर गया और वहॉ अपना सामान बेच कर उससे बहुत सारा पैसा कमाया। उसकी छह बेटियों ने उससे जो कुछ भी लाने के लिये कहा था वह सब उसको आसानी से मिल गया।

पर उसकी सातवीं बेटी ने उससे जो कुछ मॅगवाया था वह उसको कहीं नहीं मिल रहा था। उसने हर बन्दरगाह पर शबर के बारे में मालूम किया कि क्या वह वहॉ मिल सकता है पर हर बन्दरगाह पर लोगों ने मना कर दिया कि "हमने व्यापार की जाने वाली चीज़ों में इस चीज़ का नाम कभी नहीं सुना।"

जब वह अपने आखिरी बन्दरगाह पर पहुॅचा तो वह सड़कों पर चिल्लाता रहा कि "मुझे शबर चाहिये मुझे शबर चाहिये।"

[43] "Sabra" in Urdu, or patience in English, or Shobur in Bengali

कई लोगों ने उसका यह चिल्लाना सुना। वहॉ उस देश का राजकुमार भी था उसने भी सौदागर का यह चिल्लाना सुना। इत्तफाक से उसका नाम शबर था। तो यह सोच कर कि इस सौदागर की बेटी को शबर चाहिये उसने सौदागर से कहा कि उसके पास शबर नाम की चीज़ है।

उसने लकड़ी का एक बक्सा निकाला जिसमें एक जादुई पंखा और एक मुॅह देखने वाला शीशा रखा था। उसको खोल कर उसे उस सौदागर को दिखाते हुए वह उससे बोला — "यह है शबर जो तुम्हारी बेटी को चाहिये।"

सौदागर ने वह बक्सा अपने हाथ में लिया और उसको ले कर बहुत खुश हुआ कि आखिर उसे शबर मिल ही गया जिसे वह बहुत दिनों से ढूॅढ रहा था। उसने अपने जहाज़ का लंगर खोल दिया और अपने देश चल दिया।

जब वह अपने देश आया तो उसने वह बक्सा अपनी सबसे छोटी बेटी को भेज दिया। बेटी ने सोचा कि यह तो एक मामूली सा लकड़ी का बक्सा है सो उसने उसको उठा कर एक तरफ रख दिया।

कुछ दिन बाद जब वह फुरसत में थी तो उसने वह बक्सा खोलने का सोचा जो उसके पिता ने उसे भेजा था। उसने वह बक्सा निकाला और उसे खोला तो उसने उसमें देखा कि उसमें तो एक

बहुत सुन्दर पंखा रखा था और एक मुँह देखने वाला शीशा रखा था।

उसने उस पंखे को हिलाया तो अगले ही पल राजकुमार शबर उसके सामने खड़ा था। सौदागर की बेटी तो उस इतने सुन्दर राजकुमार के अचानक प्रगट हो जाने से भौंचक्की सी रह गयी।

उसने उससे पूछा कि वह कौन है और वहाँ ऐसे अचानक कैसे प्रगट हो गया। राजकुमार ने उसको बताया कि किन हालात में उसने उसके पिता को वह बक्सा दिया था। उसने उसको यह भेद भी बताया कि जब भी वह पंखा हिलाया जायेगा वह राजकुमार वहाँ प्रगट हो जायेगा।

राजकुमार उस सौदागर की बेटी के घर में दो तीन दिन रहा। सौदागर की बेटी ने भी उसकी बहुत खातिरदारी की। आखीर में वह सौदागर की बेटी उससे प्यार करने लगी तो दोनों ने आपस में शादी करने की कसम खायी।

राजकुमार अपने देश अपने पिता के पास लौट आया और उनसे कहा कि उसने अपने लिये दुलहिन ढूँढ ली है। शादी का दिन तय कर दिया गया। इस शादी में सौदागर और उसकी छहों बेटियों को भी बुलाया गया था। शादी का गँठबन्धन हुआ पर शादी की रात को ही राजकुमार की मृत्यु हो गयी।

सौदागर की छहों बेटियाँ यह देख कर अपनी सबसे छोटी बहिन से जल रही थीं कि उसकी शादी एक राजकुमार से हो रही थी। सो

इस जलन की वजह से उन्होंने सोचा कि वे उसके नये शादीशुदा पति को मार कर इस शादी का अन्त कर देंगीं।

उन्होंने कई शीशियॉ तोड़ीं, उनको टूटे हुए टुकड़ों का बारीक चूरा किया और उस चूरे को राजकुमार के बिस्तर पर फैला दिया।

राजकुमार को किसी खतरे का कोई एहसास नहीं हुआ सो वह अपने बिस्तर पर जा कर लेट गया। पर वह वहॉ दो मिनट ही लेटा होगा कि उसके सारे शरीर में अजीब सा दर्द होने लगा क्योंकि उन शीशियों के टुकड़ों का वह बारीक चूरा उसके शरीर के हर छेद में से हो कर उसके शरीर में घुस गया था।

जैसे ही राजकुमार बेचैन हुआ तो उसने ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया। उसके नौकर उसको तुरन्त ही उसके देश ले गये।

राजकुमार शबर के माता पिता ने तुरन्त ही अपने राज्य भर के डाक्टरों और चीर फाड़ करने वालों को बुलाया और उन्हें दिखाया पर सब बेकार। वह नौजवान राजकुमार दिन रात दर्द से चिल्लाता रहा पर कोई उसको आराम तो क्या देता वह तो उसकी बीमारी भी न पहचान सका।

इससे सौदागर की बेटी को कितनी तकलीफ हो रही थी इसे तो बस केवल सोचा ही जा सकता है। उसकी अभी अभी तो शादी हुई थी और अभी अभी ही उसके पति पर किसी भयानक बीमारी का हमला हुआ था और वह बीमारी उसको उससे छीन कर मीलों दूर ले गयी थी।

हालॉकि उसने अपने पति का देश कभी देखा नहीं था पर उसने तय कर लिया था कि वह उसके देश जायेगी और उसकी सेवा करेगी।

उसने एक सन्यासी का वेश बनाया और एक कटार हाथ में ले कर उसके देश चल पड़ी। वह अभी छोटी ही थी। इसके अलावा उसको पैदल लम्बी लम्बी यात्रा करने की आदत भी नहीं थी वह बहुत जल्दी ही थक गयी और सुस्ताने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गयी।

इत्तफाक से उस पेड़ के ऊपर बिहंगम नाम की एक दैवीय चिड़िया का घोंसला था। उस घोंसले में वह अपनी पत्नी बिहंगमी और बच्चों के साथ रहता था। जिस समय वह सन्यासी वहॉ आराम करने के लिये बैठा तो वह चिड़ा और चिड़िया वहॉ नहीं थे केवल उनके दो बच्चे ही वहॉ थे।

अचानक उन बच्चों ने बहुत ज़ोर की एक चीख मारी जिसने उस सन्यासी को उठा दिया।

सन्यासी ने अपने चारों तरफ देखा तो उसने देखा कि उसके अपने पास ही एक बहुत बड़ा सॉप है जिसका फन बहुत ऊॅचा उठा हुआ है और जो पेड़ पर चढ़ने ही वाला है।

एक पल में ही उसने अपनी कटार से उस सॉप के दो टुकड़े कर दिये। यह देख कर चिड़ियों के बच्चों ने अपना चिल्लाना बन्द कर दिया।

कुछ देर में बिहंगम और बिहंगमी चिड़ियें भी हवा में उड़ते हुए वहॉ आ पहुॅचे। बिहंगमी ने बिहंगम से कहा — "मुझे लगता है कि पहले की तरह से हमारे बच्चों को इस बार भी सॉप खा गया होगा। ओह मुझे तो अपने बच्चों की आवाज ही सुनायी नहीं दे रही।"

पर जब वे अपने घोंसले के पास आये तो उन्होंने देखा कि उनके बच्चे तो ज़िन्दा हैं। अपने बच्चों को ज़िन्दा देख कर तो वे दंग रह गये। उनके बच्चों ने तब उनको बताया कि किस तरह से नीचे लेटे हुए सन्यासी ने सॉप को मार कर उनकी जान बचायी।

बिहंगमी ने अपने पति से कहा — "इस नौजवान सन्यासी ने हमारे बच्चों की जान बचायी है। काश हम भी उसकी कुछ सहायता कर सकते।"

बिहंगम बोला — "हम अभी उसकी सेवा करेंगे। पहली बात कि वह एक लड़का नहीं बल्कि एक लड़की है। दूसरी बात कि इसकी शादी कल रात ही राजकुमार शबर से हुई है।

तीसरी बात कि शादी के कुछ ही घंटे बाद जब वह अपने बिस्तर से बाहर आ रहा था तो उसके सारे शरीर में शीशी के चूरे के कण घुस गये। यह शीशे का चूरा उसकी पत्नी की बहिनों ने अपनी छोटी बहिन से जलने की वजह से उसके बिस्तर पर बिखेर दिया था।

सो अब वह बेचारा अपने देश में है और अभी भी दर्द में है। लगता है कि वह तो बस अब मरने ही वाला है। और यह बहादुर दुलहिन एक सन्यासी के वेश में उसकी सेवा करने जा रही है।"

बिहंगमी ने पूछा — "लेकिन उस राजकुमार का कोई इलाज नहीं है क्या?"

बिहंगम बोला — "हॉ है न।"

"वह क्या।"

"हमारी बीट जो नीचे पड़ी है और जो सख्त हो गयी है अगर उसका चूरा कर लिया जाये और सात लोटे पानी से और सात लोटे दूध से राजकुमार को सात बार नहला कर उस चूरे को किसी ब्रश से उसके शरीर पर लगाया जाये तो राजकुमार निश्चित रूप से ठीक हो जायेगा।"

बिहंगमी फिर बोली — "पर यह बेचारी सौदागर की बेटी इतनी दूर चलेगी कैसे। इसको तो वहॉ पहुॅचते पहुॅचते ही कई दिन लग जायेंगे और इतने समय में तो वह बेचारा राजकुमार शबर मर ही जायेगा।"

बिहंगम बोला — "मैं यह काम कर सकता हूॅ। मैं इसको अपनी पीठ पर बिठा कर राजकुमार शबर की राजधानी ले जाऊॅगा और इसको वहॉ से वापस भी ले आऊॅगा। अगर यह वहॉ से कोई भेंट नहीं लाये तो।"

सौदागर की बेटी ने जो सन्यासी के वेश में थी यह सब सुन लिया। उसने बिहंगम से प्रार्थना की कि वह उसको अपनी पीठ पर बिठा कर उसके पति के शहर ले चले। वह वहॉ से कोई भेंट नहीं लायेगी इसका वह वायदा करती है। बिहंगम राजी हो गया।

बिहंगम की पीठ पर चढ़ने से पहले उसने बिहंगम की काफी सारी बीट इकट्ठी कर ली और उसका चूरा बना लिया। इस ताकतवर दवा को ले कर वह उस दयालु चिड़े की पीठ पर बैठ गयी और वह चिड़ा बिजली की सी तेज़ी से उड़ चला।

वह बहुत जल्दी ही राजकुमार के महल पहुँच गया। वहॉ उसने सन्यासी को महल के दरवाजे पर उतार दिया। वह सन्यासी महल के अन्दर गया और राजा के पास यह सन्देश भिजवाया कि उसके पास कई ताकतवर दवाऐं थीं जिनसे वह राजकुमार को कुछ ही घंटों में ठीक कर सकता था।

राजा जिसने अपने बेटे को अपने राज्य के सारे डाक्टरों को दिखा लिया था और वे कुछ नहीं कर सके थे तो उसने इस सन्यासी को एक धोखेबाज समझा पर अपने सलाहकारों की सलाह पर उसको बुलवा लिया और उसको एक मौका देने का विचार किया।

सो उस सन्यासी को अन्दर बुलवा लिया गया। सन्यासी ने सात लोटे पानी मॅगवाया और सात लोटे दूध मॅगवाया। राजा ने यह सब उसको मॅगवा कर दे दिया तो सन्यासी ने राजकुमार को सात लोटे

पानी से नहलाया सात लोटे दूध से नहलाया और फिर बिहंगम चिड़े की बीट के चूरे को एक पंख से उसके शरीर पर मला।

इस तरह से उसने सात बार किया। जब आखिरी बार उसने राजकुमार के शरीर से बिहंगम की बीट का चूरा पोंछा तो राजकुमार बिल्कुल ठीक हो गया था।

राजा ने उस नौजवान डाक्टर को अपना सबसे बड़ा खजाना देना चाहा पर उसने उससे उसके बदले में कुछ भी लेने से मना कर दिया। उसने बस राजकुमार की याद रखने के लिये राजकुमार की उँगली में पहनी हुई एक अँगूठी माँगी। राजा ने उसको वह तुरन्त ही दे दी।

अँगूठी ले कर सौदागर की बेटी जल्दी से समुद्र के किनारे पहुँची जहाँ बिहंगम उसका इन्तजार कर रहा था। पल भर में ही वे उस पेड़ के पास पहुँच गये जिस पेड़ पर बिहंगम रहता था और वहाँ से वह वह लड़की अपने घर चली गयी।

घर पहुँच कर अगले दिन उसने अपना बक्सा निकाला और उसमें से पंखा निकाल कर हिलाया तो राजकुमार शबर तुरन्त ही वहाँ प्रगट हो गया। उसने उसको उसकी अँगूठी दिखायी तो वह य्ह देख कर तो दंग रह गया कि उसकी अपनी पत्नी ने ही उसको ठीक किया था।

राजकुमार खुशी खुशी अपनी पत्नी को अपने घर ले गया। उसकी बहिनों को उसने माफ कर दिया। और फिर वे बहुत सालों

तक खुशी खुशी रहे। उनके बहुत सारे बच्चे, पोती पोते धेवते धेवतियॉ और उनके फिर और भी बहुत सारे बच्चे हुए।

7 लॅगड़ा कुत्ता[44]

एक बार की बात है कि एक राजा था। वह भी एक ऐसा ही राजा था जैसे और राजा होते हैं। उसके तीन बेटियॉ थीं। उसकी तीनों बेटियॉ एक से एक सुन्दर थी कि उनको जैसी कोई और सुन्दर लड़की मिलनी मुश्किल थी। फिर भी उनमें एक बहुत बड़ा अन्तर था।

उसकी दोनों बड़ी बेटियॉ अपने विचारों और काम करने के ढंग में बहुत जिद्दी किस्म की थीं जबकि सबसे छोटी वाली बहुत ही मीठा बोलती थी और वह दोस्त भी जल्दी बना लेती थी। इसलिये सब उसको बहुत पसन्द करते थे।

इसके अलावा वह दिन के उजाले की तरह गोरी और बर्फ की तरह नाजुक थी। वह अपनी दोनों बड़ी बहिनों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी।

एक दिन राजा की तीनों बेटियॉ एक कमरे में बैठी बतिया रही थीं कि उनकी बातें उनके होने वाले पतियों की तरफ मुड़ गयीं। सबसे बड़ी बेटी ने कहा कि अगर वह किसी से शादी करेगी तो

[44] The Lame Dog – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. Frederick A Stokes Company. 1921. Adapted from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_13.html
The same story is told under the title "The Best Friend" in Denmark.

उसके सुनहरे बाल होने चाहिये और उसकी सुनहरी दाढ़ी होनी चाहिये।

दूसरी बोली — "और मेरे वाले के चॉदी जैसे बाल और चॉदी जैसी दाढ़ी होनी चाहिये।"

पर तीसरी सबसे छोटी वाली चुप रही वह कुछ नहीं बोली तो उसकी दोनों बहिनों ने उससे पूछा कि क्या उसको अपना पति नहीं चाहिये। तो वह बोली — "नहीं। पर अगर मुझे मेरा पति मिला भी तो वह जैसा भी होगा मैं उसी से सन्तुष्ट रहूँगी। चाहे वह लॅगड़ा कुत्ता ही क्यों न हो।"

यह सुन कर दोनों राजकुमारियॉ हॅस पड़ीं और देर तक हॅसती रहीं। फिर बोलीं कि वह दिन दूर नहीं जब वह अपनी राय बदल लेगी।

पर कभी कभी कुछ लोग सच बोलते हैं पर वे जानते नहीं कि वे सच बोल रहे हैं। ऐसा ही कुछ राजा की बेटियों के साथ भी हुआ। साल पूरा होने से पहले पहले हर लड़की के लिये वैसा ही उम्मीदवार आया जैसा कि उसने चाहा था।

सुनहरे बालों और सुनहरी दाढ़ी वाला सबसे बड़ी राजकुमारी के लिये आया और उसने सबसे बड़ी राजकुमारी का हाथ मॉगा। राजकुमारी ने उसको देखते ही हॉ कर दी और उसकी शादी उसके साथ हो गयी।

फिर एक चॉदी जैसे बालों और चॉदी जैसी दाढ़ी वाला राजकुमार दूसरी राजकुमारी के लिये आया और उससे शादी कर के उसको अपने घर ले गया। पर इत्तफाक की बात सबसे छोटी बेटी को सिवाय एक लॅगड़े कुत्ते के किसी और ने नहीं मॉगा।

और तब उसे याद आयी अपने कमरे में अपनी बहिनों के साथ की गयी बात। तब उसने अपने मन में सोचा "भगवान मेरी इस शादी में मेरी सहायता करें जो मैं अभी करने वाली हूॅ।"

लेकिन उसने अपना कहा नहीं तोड़ा जो उसने एक बार कह दिया था सो कह दिया था। अपनी बहिनों की तरह उसने भी उस लॅगड़े कुत्ते को अपना पति स्वीकार कर लिया।

शादी कई दिनों तक चलती रही और बहुत शानो शौकत के साथ मनायी गयी। पर जब मेहमान और दूसरे लोग गा नाच कर आनन्द कर रहे थे सबसे छोटी राजकुमारी एक जगह अकेली बैठी रो रही थी। दूसरे लोग हॅस रहे थे खुश हो रहे थे और वह बैठी रो रही थी। उसके ऑसू तो दूसरों को भी दुखी कर देने वाले हो रहे थे।

शादी के बाद नये शादीशुदा जोड़े अपने अपने किले के लिये विदा हुए। राजा की दोनों बड़ी बेटियॉ तो बहुत सुन्दर सजी हुई कोच में जिनके पीछे बहुत सारे लोग चल रहे थे और और भी बहुत सारे आदर के साथ विदा हुई।

पर सबसे छोटी बेटी को तो पैदल ही जाना पड़ा क्योंकि उसके पति कुत्ते के पास न तो कोई कोच थी और न ही कोई कोच हॉकने

वाला। जब वे लोग बहुत देर तक बहुत दूर तक चल लिये तो वे एक जंगल में आ गये।

यह जंगल इतना बड़ा था कि लगता था कि कभी खत्म ही नहीं होगा लेकिन कुत्ता तो लॅगड़ाता हुआ भी उससे आगे आगे जा रहा था। राजकुमारी रोती हुई उसके पीछे पीछे जा रही थी।

जब वे इस तरह जा रहे थे तो अचानक ही राजकुमारी ने अपने सामने एक बहुत ही शानदार किला देखा जिसके चारों तरफ हरी घास का मैदान था और हरे हरे जंगल थे। यह सब कुछ देखने में बहुत अच्छा लग रहा था।

राजकुमारी उसे देख कर रुक गयी और पूछा कि यह किला किसका हो सकता है। कुत्ता बोला "यह हमारा घर है। हम लोग यहीं रहेंगे और तुम यहॉ राज करोगी जैसे भी तुम चाहो।"

यह सुन कर राजकुमारी को रोते हुए भी हॅसी आ गयी। वह जो कुछ भी वह वहॉ देख रही थी उसको देख कर अपना आश्चर्य रोकना चाह कर भी नहीं रोक सकी।

कुत्ता फिर बोला — "बस मुझे तुमसे एक विनती करनी है जो तुम वायदा करो कि तुम मुझे मना नहीं करोगी।"

राजकुमारी बोली — "और वह क्या विनती है।"

कुत्ता बोला — "तुम मुझसे वायदा करो कि जब मैं सो रहा होऊॅगा तो तुम मुझे कभी नहीं देखोगी। बाकी तुम जो चाहो सो करने के लिये आजाद हो।"

राजकुमारी ने खुशी से उसकी यह विनती मानने का वायदा किया और वे उस बड़े से किले में अन्दर चले गये। वह किला जितना बाहर से शानदार लग रहा था उससे कहीं ज़्यादा अन्दर से शानदार था।

वह सोने और चॉदी से भरा हुआ था। ये कीमती धातु उस किले के हर कोने से चमक रहे थे। वहॉ सारा सामान बहुतायत में था — खाने पीने का और दूसरी किस्म का भी। जो चीज़ चाहो वह सब वहॉ थी।

राजकुमारी तो सारा दिन उस किले के एक कमरे से दूसरे कमरे में ही घूमती रही और हर दूसरा कमरा पहले वाले कमरे से ज़्यादा सुन्दर था।

जब शाम हुई तो वह सोने गयी। कुत्ता अपने बिस्तर में चला गया। तब उसने देखा कि वह कोई कुत्ता नहीं था। वह तो एक आदमी था। फिर भी वह एक शब्द भी नहीं बोली क्योंकि उसको अपना वायदा याद था और वह अपने पति की इच्छा के खिलाफ कुछ करना नहीं चाह रही थी।

इस तरह से कुछ समय बीत गया। राजकुमारी उस सुन्दर शानदार किले में रहती थी और उसकी जो इच्छा होती थी वह उसको मिल जाता था।

पर रोज सुबह होते ही वह कुत्ता वहॉ से भाग जाता था और शाम ढले सूरज छिप जाने के बाद ही वापस लौटता था। जब वह

घर लौट आता था तब वह इतना दयालु हो जाता था कि अगर कोई आदमी उससे आधा भी दयालु हो तो बहुत बड़ी बात है।

धीरे धीरे राजकुमारी को उससे प्यार होने लगा। उस समय वह बिल्कुल ही भूल गयी थी कि वह केवल एक लॅगड़ा कुत्ता है। जैसी कि कहावत है कि "प्यार अन्धा होता है।" फिर भी उसको लगता था कि समय बहुत धीरे धीरे गुजर रहा था क्योंकि वह घर में बिल्कुल अकेली थी।

वह अक्सर अपनी बहिनों से मिलने के बारे में सोचती कि वह यह जाने कि वे कैसी हैं। एक दिन उसने यह बात अपने पति से कही और उससे उनसे मिलने की इजाज़त मॉगी।

जैसे ही कुत्ते ने उसकी यह इच्छा सुनी तो उसने तुरन्त ही उसको उनके पास जाने की इजाज़त दे दी। बल्कि वह उसके साथ कुछ दूर तक भी गया ताकि वह उसको जंगल से बाहर जाने का रास्ता दिखा सके।

जब राजा की तीनों बेटियॉ आपस में मिलीं तो वे बहुत खुश थीं। एक दूसरे से उन्होंने बहुत सारे नये पुराने सवाल पूछे। शादी पर भी बात हुई।

सबसे बड़ी राजकुमारी ने कहा — "मेरी भी क्या बेवकूफी थी कि मैंने सुनहरे बाल वाला और सुनहरी दाढ़ी वाला पति मॉगा क्योंकि मेरा वाला तो सबसे बुरे ट्रौल से भी ज़्यादा बुरा है। जबसे

मेरी शादी हुई है तबसे मेरा एक दिन भी उसके साथ खुशी से नहीं गुजरा।"

दूसरी राजकुमारी बोली — "मैं भी कोई बहुत ज़्यादा अच्छी नहीं हूँ क्योंकि हालाँकि मेरे पास चाँदी जैसे बाल वाला और चाँदी जैसी दाढ़ी वाला पति है फिर भी वह मुझे इतनी नफरत करता है कि वह मेरे साथ एक घंटा भी खुशी से नहीं गुजार सकता।"

इसके बाद उसकी बहिनों ने अपनी छोटी बहिन की तरफ देख कर पूछा कि उसका कैसा चल रहा है।

छोटी राजकुमारी बोली — "मैं कोई शिकायत नहीं कर सकती क्योंकि मुझे तो केवल एक लँगड़ा कुत्ता ही मिला है। और वह तो इतना प्यारा साथी है और मेरे प्रति इतना दयालु है कि उससे अच्छा पति तो मिलना मुश्किल है।"

उसकी बहिनें तो यह सुन कर बड़े आश्चर्य में पड़ गयीं। इस पर तो उन्होंने उससे सवालों की बौछार लगा दी। छोटी बहिन ने भी उनके सब सवालों के जवाब ईमानदारी से साफ साफ दिये।

जब उन लोगों ने यह सुना कि वह इतने शानदार ढंग से रह रही थी तो वे उससे जलने लगीं क्योंकि एक लँगड़े कुत्ते के पति मिलने के बावजूद वह इतनी शान से रह रही थी।

फिर उन्होंने उससे यह भी जानने की कोशिश की क्या वह अपने उसी छोटे से पति के बारे में बात कर रही थी जिसकी वह शिकायत नहीं कर सकती थी।

छोटी बहिन बोली — "नहीं। मैं तो अपने पति की उनके दयालु होने और उनके अच्छे व्यवहार की वजह से ही केवल तारीफ कर सकती हूँ। पर एक चीज़ की कमी मुझे पूरी तरीके से खुश नहीं रख पा रही है।"

उसकी दोनों बहिनें एक साथ बोलीं — "वह क्या है। वह क्या है।"

छोटी राजकुमारी बोली — "हर रात जब वह घर आते हैं तो एक आदमी के रूप में बदल जाते हैं। और मुझे यह बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि मैं यह कभी नहीं देख पाऊँगी कि वह कैसे लगते हैं।"

उसकी दोनों बहिनों ने फिर एक आवाज में उस कुत्ते को बुरा भला कहना शुरू कर दिया क्योंकि उसने अपना एक भेद अपनी पत्नी से छिपाया था।

और क्योंकि उसकी बहिनें उसके बारे में लगातार उससे कुछ न कुछ कहती रहीं तो एक बार फिर उसकी उत्सुकता जाग गयी। वह अपने पति से किया गया वायदा भूल गयी और उसने उनसे पूछा कि वह उसे बिना बताये कैसे देख सकती है।

उसकी सबसे बड़ी बहिन बोली — "अरे यह कोई मुश्किल काम नहीं है। एक छोटा सा लैम्प लो जिसको तुम ठीक से छिपा कर रखना। फिर बस तुमको रात को उठना है और जब वह सोया हुआ

हो तो इसको जला कर उसकी रोशनी में देख लेना कि उसकी असली शक्ल क्या है।"

राजा की छोटी बेटी को यह सलाह ठीक लगी। उसने उससे लैम्प लिया अपने कपड़ों में छिपा लिया और अपनी बहिनों से वायदा किया कि वैसा ही करेगी जैसा उन्होंने उससे करने के लिये कहा है।

जब वहॉ से उसका चलने का समय आया तो वह अपने सुन्दर किले की तरफ चली गयी।

उसका दिन किसी और दिन की तरह से गुजर गया। जब शाम हो गयी तो कुत्ता अपने बिस्तर पर सोने चला गया। राजकुमारी की उत्सुकता जागने लगी और बड़ी मुश्किल से वह कुत्ते के सोने का इन्तजार करने लगी।

जब उसने यह यकीन कर लिया कि वह गहरी नींद सो गया तो उसने अपना लैम्प जलाया और उसको ले कर कुत्ते के पास गयी। पर उसका आश्चर्य तो कोई बखान ही नहीं कर सकता जब उसने लैम्प की रोशनी कुत्ते के बिस्तर पर डाली तो देखा कि वहॉ तो कोई लॅगड़ा कुत्ता नहीं था।

वहॉ तो इतना सुन्दर नौजवान था जैसा कि उसने पहले कभी देखा नहीं था। वह अपने आपको उसको देखते रहने से न रोक सकी और रात भर उसके तकिये के पास बैठी उसको देखती रही।

वह उसकी तरफ जितना ज़्यादा देखती थी वह उसको उतना ही ज़्यादा सुन्दर नजर आता था। उसको देखते देखते तो वह सब कुछ

भूल गयी। आखिर सुबह होने को हुई और जब सितारे धुँधले पड़ने शुरू हुए तो वह नौजवान बेचैन होने लगा और जागने लगा।

राजकुमारी यह देख कर डर गयी। उसने अपना लैम्प बुझा दिया और अपने बिस्तर में जा कर लेट गयी। नौजवान ने सोचा कि राजकुमारी सोयी हुई है सो उसने उसको जगाना नहीं चाहा। वह चुपचाप उठा अपने आपको कुत्ते में बदला और वहाँ से चला गया। फिर वह दिन भर दिखायी नहीं दिया।

जब शाम हुई तो देर हो चुकी थी। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रोज होता था। कुत्ता शाम को जंगल से देर से घर लौटा। वह बहुत थका हुआ था सो आते ही सो गया।

जैसे ही वह सो गया राजकुमारी फिर से उठी उसने फिर से अपना लैम्प जलाया और उसको देखने के लिये उसके पास आ बैठी। जब उसने लैम्प की रोशनी उसके बिस्तर पर डाली तो उसको लगा कि वह तो उस दिन पहले दिन से भी ज़्यादा सुन्दर लग रहा था। और जितनी देर तक वह उसको देखती रही वह उसे उतना ही ज़्यादा सुन्दर दिखायी देता रहा।

यहाँ तक कि वह उसके प्यार में हँस पड़ी और रो पड़ी। वह उसके ऊपर से अपनी आँखें ही नहीं हटा पा रही थी। सारी रात वह उसके तकिये पर अपना चेहरा झुकाये हुए उसको देखती बैठी रही। वह अपना वायदा और सभी कुछ भूल गयी थी।

अगली सुबह सूरज की पहली किरन के साथ नौजवान फिर कुलमुलाया और जागा। राजकुमारी फिर डर गयी और जल्दी से अपना लैम्प बुझा कर फिर से अपने बिस्तर पर आ लेटी।

नौजवान ने उठ कर देखा तो उसको लगा कि राजकुमारी सो रही है सो उसने उसे जगाना नहीं चाहा। वह चुपचाप उठा अपने आपको कुत्ते में बदला और दिन भर के लिये बाहर चला गया।

रात को जब कुत्ता जंगल से घर लौटा तो रोज की तरह फिर देर हो गयी थी। कुत्ता थका था सो आते ही सो गया।

राजकुमारी उस दिन भी अपनी उत्सुकता न रोक पायी। जैसे ही कुत्ता सो गया राजकुमारी चुपचाप उठी उसने अपना लैम्प जलाया और फिर वह उसके तकिये के पास उसको देखने के लिये जा बैठी।

जब रोशनी उस नौजवान के चेहरे पर पड़ी तो वह उसको पहले से और भी ज़्यादा सुन्दर लगा। और इतना सुन्दर लगा कि उसका दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उसकी तरफ देख कर वह दुनियॉ की हर चीज़ भूल गयी।

वह उसके चेहरे से फिर से अपनी नजरें नहीं हटा पा रही थी। वह उसके तकिये पर नजर गड़ाये सारी रात उसके पास ही बैठी रही। सुबह होने पर नौजवान फिर कुलमुलाया और जागा। राजकुमारी फिर डर गयी।

उसको पता ही नहीं चला कि कब रात गुजर गयी और कब सुबह हो गयी। नौजवान के जागने से तुरन्त पहले ही उसने लैम्प बुझाया और अपने बिस्तर की तरफ जाने लगी। इस जल्दी में उसका हाथ कॉप गया और और लैम्प के तेल की एक बूँद नौजवान के चेहरे पर गिर पड़ी वह जाग गया।

जब उसने देखा कि राजकुमारी ने क्या किया है तो वह डर के मारे कूद पड़ा और तुरन्त ही एक लॅगड़े कुत्ते में बदल गया। लॅगड़ाता हुआ वह जंगल की तरफ भाग गया। राजकुमारी यह देख कर इतनी दुखी हुई कि बस बेहोश होते होते बची।

वह अपने हाथों को मलते हुए और ज़ोर ज़ोर से रोते हुए उसको वापस आने के लिये पुकारती हुई उसके पीछे भाग ली पर वह वापस नहीं आया।

अपने पति को ढूँढने के लिये राजकुमारी पहाड़ियों के ऊपर और घाटियों में हो कर घूमती रही। बहुत सारे रास्ते उसके लिये नये थे। उसकी ऑखों से इतने सारे ऑसू बह गये थे कि वे किसी भी पत्थर को हिलाने के लिये काफी थे।

पर कुत्ता तो चला गया था और वह अब कहीं दिखायी ही नहीं दे रहा था। उसने उसे उत्तर में ढूँढा दक्षिण में ढूँढा पर जब उसने देखा कि वह उसको कहीं नहीं ढूँढ पा रही है तो उसने सोचा कि वह अब अपने किले को लौट चलती है।

पर यहॉ भी उसकी किस्मत ने साथ नहीं दिया। उसको अपना किला कहीं दिखायी ही नहीं दिया। जहॉ भी वह उसे ढूँढने जाती रही उसे केवल काला जंगल ही दिखायी देता रहा।

उसे लगा सारी दुनियॉ ने उसे छोड़ दिया है सो वह एक पत्थर पर बैठ गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसने सोचा कि अपने पति के बिना रहने से तो अच्छा है कि वह मर जाये।

कि तभी पत्थर के नीचे से एक मेंढक फुदकता हुआ बाहर आ गया। वह बोला — "प्यारी लड़की। तुम यहॉ अकेली बैठी क्यों रोती हो?"

राजकुमारी बोली — "मेरी तो किस्मत ही खराब है। अब मैं कभी खुश नहीं रह सकती। पहले तो मैंने अपना प्यार खो दिया और अब मुझे अपने किले जाने का भी रास्ता नहीं मिल रहा। इससे या तो मैं यहीं भूख से मर जाऊँगी और या फिर मुझे यहॉ कोई जंगली जानवर खा जायेगा।"

मेंढक बोला — "ओ। अगर तुम्हें केवल यही परेशानी है तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। अगर तुम मेरी सबसे प्यारी दोस्त होने का वायदा करो तो मैं तुम्हें रास्ता दिखा सकता हूँ।"

पर राजकुमारी यह करना नहीं चाह रही थी सो वह बोली — "तुम मुझसे इसके सिवाय जो चाहे मॉग लो। मैंने अपने लॅगड़े कुत्ते के अलावा किसी और से कभी इतना प्यार किया ही नहीं। और

जितने दिन भी मैं ज़िन्दा रहूँगी उसके सिवा किसी और से उतना प्यार करूँगी भी नहीं।"

यह कह कर वह खड़ी हो गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। फिर वह अपने रास्ते चल दी। पर मेंढक ने उसकी ओर एक दोस्त की तरह से देखा। वह मन ही मन मुस्कुराया और एक बार फिर से पत्थर के नीचे खिसक गया।

जब राजकुमारी इधर उधर काफी भटक ली और उसे अँधेरे जंगल के सिवा और कुछ दिखायी नहीं दिया तो वह बहुत थक गयी।

वह अपने हाथों में अपनी ठोड़ी टिका कर फिर एक पत्थर पर बैठ गयी और अपनी मौत की प्रार्थना करने लगी। क्योंकि उसको लग रहा था कि उसका पति तो तो अब उसको मिलने वाला था नहीं सो अब उसके पास मौत ही एक रास्ता रह गया था।

कि अचानक उसने पास की झाड़ी में किसी की सरसराहट की आवाज सुनी। उसने उधर देखा तो देखा कि बहुत ही बड़ा भूरे रंग का एक भेड़िया उसकी तरफ चला आ रहा है। उसको देख कर वह तो बहुत डर गयी क्योंकि उसको देख कर तो सबसे पहले उसके दिमाग में यही आया कि वह उसको खाने आ रहा है।

पर भेड़िये ने ऐसा कुछ नहीं किया। वह उसके पास तक आया अपनी पूँछ हिलायी और उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की तुम यहाँ अकेली बैठी इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं अपनी बदकिस्मती पर रो रही हूँ और आगे भी मैं कभी खुश नहीं हो पाऊँगी। और अब मुझे अपने किले का भी रास्ता कहीं दिखायी नहीं दे रहा तो अब या तो में भूख से मर जाऊँगी और या फिर मुझे कोई जंगली जानवर खा जायेगा।"

भेड़िया बोला — "अरे अगर इतनी सी बात है तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। तुम मुझे अपना सबसे अच्छा दोस्त बना लो तो फिर मैं तुम्हें रास्ता दिखा दूँगा।"

यह शर्त राजकुमारी को कुछ जँची नहीं। उसने भेड़िये को जवाब दिया — "तुम मुझसे कोई और चीज़ माँग लो जो भी तुम्हारी इच्छा हो पर मैंने किसी और को इतना ज़्यादा प्यार नहीं किया जितना मैं अपने लँगड़े कुत्ते से करती हूँ। और उससे ज़्यादा प्यार मैं किसी और को कर भी नहीं सकती।"

यह कह कर वह उठ गयी और फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। फिर वह अपने रास्ते चल दी। पर भेड़िये ने भी उसको प्यार से देखा और अपने मन में हँसता हुआ वहाँ से जल्दी से भाग गया।

उसके बाद राजकुमारी फिर से जंगल में इधर उधर घूमने लगी। वह बहुत देर तक घूमती रही। घूमते घूमते वह फिर थक गयी तो वह और आगे नहीं जा सकी और वहीं पास में पड़े एक पत्थर पर बैठ गयी।

वह फिर अपने हाथ मलने लगी और मौत की इच्छा करने लगी क्योंकि वह अपने लँगड़े कुत्ते के बिना बिल्कुल नहीं रह सकती थी।

उसी समय उसने एक दहाड़ सुनी जिसको सुन कर वह कॉप गयी। तभी उसने देखा कि एक बहुत बड़ा शेर उसकी तरफ चला आ रहा था। उसको देख कर तो वह यह सोचे बिना न रह सकी कि वह शेर तो अब उसे खा ही जायेगा।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह शेर तो भारी जंजीरों के बोझ से खुद ही झुका जा रहा था। उनके बोझ से उससे चला भी नहीं जा रहा था। जब वह चलता था तो उसकी वे सारी जंजीरें बजती थीं।

पास आ कर वह उससे बोला — "ओ सुन्दर लड़की तुम यहॉ अकेली बैठी क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी रोते हुए बोली — "मैं अपनी बदकिस्मती पर रो रही हूॅ और आगे भी मैं कभी खुश नहीं हो पाऊॅगी। और अब मुझे अपने किले का भी रास्ता कहीं दिखायी नहीं दे रहा तो अब या तो मैं भूख से मर जाऊॅगी और या फिर मुझे कोई जंगली जानवर खा जायेगा।"

शेर बोला — "अरे अगर इतनी सी बात है तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूॅ। तुम मेरी ये जंजीरें खोल दो मुझे अपना सबसे अच्छा दोस्त बना लो तो फिर मैं तुम्हें तुम्हारे किले का रास्ता दिखा दूॅगा।"

राजकुमारी उसको देख कर इतनी डर गयी थी कि वह शेर की बात पर कुछ ध्यान ही नहीं दे सकी उसके पास जाना तो दूर। तभी उसने जंगल में से एक बड़ी साफ आवाज आती सुनी। वह

नाइटिन्गेल चिड़िया की आवाज थी जो एक पेड़ की एक शाख पर बैठी गा रही थी "ओ लड़की इसकी जंजीरें खोल दो।"

यह सुन कर उसे शेर पर दया आ गयी। उसने हिम्मत बटोरी उसकी जंजीरें ढीली कीं और उससे बोली — "तुम्हारी जंजीरें तो मैं खोल सकती हूँ। पर मैं तुम्हारी सबसे अच्छी दोस्त नहीं बन सकती क्योंकि मैं किसी और को इतना प्यार नहीं कर सकती जितना मैं अपने लॅगड़े कुत्ते से करती हूँ। और उससे ज़्यादा प्यार मैं किसी और को कर भी नहीं सकती।"

तभी एक आश्चर्यजनक घटना घटी। जैसे ही उसने उसकी आखिरी जंजीर ढीली की तो वह शेर तो एक बहुत सुन्दर राजकुमार में बदल गया। जब राजकुमारी ने उसको पास से देखा तो उसने देखा कि वह तो उसका वही सबसे प्यारा राजकुमार था जो पहले कुत्ता था।

वह तो उसको देखते ही धरती पर बैठ गयी और उसने उसके घुटने पकड़ लिये और उससे विनती की कि वह अब उसको कभी छोड़ कर न जाये।

राजकुमार ने उसको बड़े प्यार से ऊपर उठाया उसको गले से लगाया और बोला — "अब हम कभी अलग नहीं होंगे क्योंकि अब मेरे ऊपर पड़ा जादू टूट चुका है और मुझे हर तरीके से तुम्हारा विश्वास भी मिल गया है।"

वे दोनों बहुत खुश थे। राजकुमार उसको अपने किले में वापस ले गया। वहॉ पहुँच कर वह राजा बन गया और राजकुमारी रानी बन गयी। अगर वे मरे नहीं हैं तो वे अभी तक वहॉ राज कर रहे हैं।

8 अन्यायी राजा और नीच सुनार[45]

एक बार की बात है कि एक राजा अपने बागीचे में टहल रहा था कि एक बारहसिंगा उस बागीचे की बाड़ तोड़ कर बागीचे के अन्दर आ कर इधर उधर भागने लगा और बागीचे में लगे फूलों को तहस नहस करने लगा।

यह देख कर राजा को गुस्सा आ गया और उसने अपने नौकरों को बुला कर उसे पकड़ने के लिये कहा। वह खुद भी नंगी तलवार ले कर उसके पीछे भागा। अचानक वह बागीचे से बाहर भाग गया। राजा भी उसके पीछे पीछे अपने घोड़े पर भागा।

राजा उसका पीछा करते करते अपने राज्य की सीमा तक पहुँच गया पर वह उसको पकड़ नहीं सका। उसकी वहाँ से आगे जाने की इच्छा नहीं हुई सो वह वहीं पर रुक गया।

मौसम बहुत गर्म था और उसको प्यास भी लग आयी थी सो वह अपने घोड़े से नीचे उतर गया और उसने नहाने की सोची। वह जब वहाँ नहा रहा था तो किसी नीच आदमी ने उसका घोड़ा और कपड़े चुरा लिये।

---

[45] The Unjust King and Wicked Goldsmith – a folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. 1887. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com .

अब राजा के लिये तो यह बहुत ही खराब हालत हो गयी। वह अब क्या करे। वह अब अपने महल को कैसे लौटे। वह महल को नंगा कैसे जाये। "मैं ऐसा नहीं कर सकता। बहुत दिनों तक सारे लोग मेरी हॅसी उड़ाते रहेंगे।" सो उसने पड़ोसी देश में घूमने का विचार किया।

वह उस पड़ोसी देश में घूमता रहा कि घूमते घूमते उसको मोती की एक कीमती माला मिल गयी। वह बोला — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि यह माला मुझे मिल गयी। इसको बेच कर अब मैं अपने लिये एक घोड़ा और कपड़े खरीद सकता हूॅ। चलूॅ चल कर इसको बाजार में बेचने की कोशिश करता हूॅ।"

चलते चलते वह उस देश के राजा के शहर पहुॅच गया। वहॉ वह एक सुनार के पास पहुॅचा और उससे पूछा — "क्या तुम मुझसे एक मोती की माला खरीदोगे। मेरे पास एक कीमती माला है बेचने के लिये। मैं एक नदी पार कर रहा था मुझे यह वहॉ मिल गयी थी।"

सुनार बोला — "देखूॅ तो।"

राजा ने वह मोती की माला उसको दिखायी तो वह चिल्ला कर बोला — "ओ चोर इसको तुमने कहॉ से चुराया? मैंने ऐसी दो मालाऐं राजा के लिये बनायी थीं उनमें से एक का पता नहीं चला कि वह कहॉ गयी। ओ चोर तुम ज़रा राजा के पास चलो तो।"

ऐसा कहते हुए उसने पुलिस को बुलाया और उससे उसको राजा के पास ले चलने के लिये कहा। तीनों राजा के पास पहुँचे। राजा ने सुनार की शिकायत सुनी और हुक्म दिया कि राजा के दोनों पैर काट दिये जायें।

उस राजा की रानी उतनी ही दयालु थी जितना कि राजा बेरहम और अन्यायी था। जब उसने यह सुना तो उसने उससे कहा — "आप इतना बेरहम हुक्म कैसे दे सकते हैं जबकि इस मामले की कोई गवाही नहीं है। और ये सुनार लोग तो होते ही बदमाश हैं। आप तो जानते ही है कि पैसे के लिये ये लोग कितना झूठ बोलते हैं और कितना धोखा देते हैं। सच कहिये तो मैं तो इस आदमी के कहे पर भी उतना ही विश्वास करती जितना कि सुनार के कहने पर।"

राजा ने उसे डॉट लगायी — "जबान सँभाल कर बात करो। तुम्हें क्या हक है राजकाज के मामलों में दखल देने का?"

रानी बोली — "मैं चुप नहीं रहूँगी। कुछ दिनों से मैं आपको दरबार में भी खराब व्यवहार करते देख रही हूँ। आपके सलाहकार सब आपसे नाखुश हैं और आपकी जनता आपसे विद्रोह करने के लिये तैयार है। अगर आप इसी रास्ते पर चलते रहे तो आपका सारा राज्य बर्बाद हो जायेगा।"

राजा रानी की बात सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उससे कमरे के बाहर जाने के लिये कहा। अगली सुबह उसने रानी को उस

आदमी के साथ राज्य के बाहर जाने का हुक्म दे दिया जिसके पैर काट डाले गये हों।

रानी ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया उलटे वह ऐसे राजा से पीछा छूट जाने से बहुत खुश थी। वह बिना पैरों वाले आदमी के पास गयी और उसको राजा का हुक्म बताया। फिर उसने उसको एक लम्बी सी टोकरी में बिठाया अपनी कमर पर लादा और एक ऐसी जगह चल दी जहॉ शहर नहीं था। यह वही राजा था जिसके पैर काटने का हुक्म राजा ने दिया था।

वहॉ उसने उसकी एक पत्नी की तरह सेवा की जब तक कि उसके घाव भरे। जल्दी ही वह उसको बहुत अच्छा लगने लगा। उसने भी उसके प्यार का बदला प्यार से दिया तो वह उसकी सचमुच में ही पत्नी बन गयी। कुछ दिनों बाद उसने एक छोटे से बेटे को जन्म दिया।

अपना घर चलाने के लिये वह जंगल से लकड़ी काटती और जा कर उनको शहर में बेच आती।

एक दिन जब वह शहर गयी हुई थी तो उसका पति सो गया और उसका बच्चा जिसको वह उसकी देखभाल में छोड़ गयी थी घुटनों चलते चलते पास के कुॅए के किनारे पर पहुॅच गया और कुॅए में गिर गया।

जब राजा की ऑख खुली तो बच्चे को वहॉ न पा कर वह बहुत दुखी हुआ। वह तो बिल्कुल पागल सा हो गया। वह चिल्ला

चिल्ला कर रोने लगा — "लगता है कि मेरे बच्चे को किसी जंगली जानवर ने खा लिया है अब मैं क्या करूँ।"

शाम को जब उसकी पत्नी शहर से लौटी तो यह जान कर वह भी बहुत दुखी हुई कि उनका बच्चा वहाँ नहीं था। पर वह एक बहुत ही बहादुर और समझदार स्त्री थी इसलिये उसने खुद भी धीरज रखा और अपने पति को भी समझाया कि हमारी किस्मत में ऐसा ही लिखा था। दुखी मत होइये।

पर रात को राजा सो नहीं सका वह बच्चे के बारे में ही सोचता रहा और उसकी इच्छा भी करता रहा। यह उसके लिये अच्छा ही हुआ कि वह सो नहीं पाया। क्योंकि रात के तीसरे प्रहर में सूडाब्रोर और बूडाब्रोर[46] नाम की दो चिड़े उनके खुले दरवाजे के पास वाले पेड़ पर आ कर बैठ गये और ये बातें करने लगे।

सूडाब्रोर अपने दोस्त से बोला — "देखो यह दुनियाँ कितनी मुश्किल है। ज़रा देखो तो इस आदमी के साथ क्या हुआ। इसको अपना देश छोड़ना पड़ा और अब यह बेचारा दूसरे देश में भिखारी की तरह रह रहा है जहाँ उसको बड़े अन्यायपूर्ण ढंग से सजा दी गयी। और अब यह अपने सुन्दर से बेटे के दुख में भी परेशान है। इसका बेटा कल दोपहर ही इस कुँए में गिर गया था।"

[46] Sudabror and Budabror birds

बूडाब्रोर चिड़ा बोला — "इन बेचारे लोगों को क्या क्या परेशानियॉ उठानी पड़ती हैं। क्या इनके लिये कुछ नहीं किया जा सकता?"

सूडाब्रोर बोला — "हॉ हॉ किया जा सकता है। अगर राजा इस कुॅए में कूद जाये तो वह आसानी से बच्चे को बचा सकता है। इसके अलावा उसके पैर भी वापस आ सकते हैं।"

राजा ने उन चिड़ों की बातें सुनी तो उनको सुन कर उसे बड़ा आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई। जैसे ही सुबह हुई उसने अपनी पत्नी को जगाया और उसने उससे रात वाली बात बतायी और उससे सलाह मॉगी।

रानी बोली — "आप चिड़ों की बात मानें और कुॅए में कूद जायें।"

राजा कुॅए में कूद गया जिससे उसने अपने बच्चे की जान भी बचा ली और अपने पॉव भी वापस पा लिये।

इस घटना के बाद राजा को अपना वजीर मिल गया जो अपने राजा की खोज में इधर उधर मारा मारा फिर रहा था। उससे राजा को पता चला कि उसकी जनता उसका बेसब्री से इन्तजार कर रही है। सो वह अपनी पत्नी और बच्चे के साथ अपने राज्य वापस चला गया। वह फिर से अपनी राजगद्दी पर बैठ गया और पहले की तरह से राज करने लगा।

गद्दी पर बैठते ही सबसे पहला काम उसने यह किया कि अपनी सेना ले कर उस राजा के ऊपर चढ़ाई कर दी जिसने उसके साथ इतना बुरा व्यवहार किया था। वह जीत गया और दूसरे राजा को बहुत शर्म आयी। उसको उससे दया की भीख माँगनी पड़ी।

उसने उसे बताया कि उस सुनार की वजह से उसे उसके साथ ऐसा व्यवहार करना पड़ा। अब उसको वह जाते ही सजा देगा। राजा ने उसको माफ कर दिया और उसको छोड़ दिया। उसके बाद सारे राज्य में शान्ति और खुशी हो गयी।

राजा उस दूसरे राजा की पत्नी के साथ खुशी खुशी रहा उसके कई और बच्चे हुए। वह काफी दिनों तक ज़िन्दा रहा। जब बूढ़ा हो कर वह मरा तो लोग उसके लिये बहुत रोये।

9 नागरे और हीमाल[47]

एक बार की बात है कि किसी जगह सोदाराम नाम का एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके पास केवल एक टूटा फूटा मकान था और एक बुरे स्वभाव वाली मतलबी स्त्री थी जिसको वह अपनी पत्नी कहता था। उसके लिये उसका यह टूटा फूटा मकान कोई परेशानी नहीं थी पर यह स्त्री उसके लिये एक इम्तिहान थी।

वह अक्सर कहा करता था कि परमेश्वर ने मुझे ज़्यादा तो कुछ नहीं दिया पर मैं उससे शिकायत करने वाला कौन होता हूँ। वह अक्सर ही अपनी इस नीच पत्नी का गुस्सा और उससे अपनी बेइज़्ज़ती सहता रहता।

कभी कभी जब इसने रोज से कम कमाया होता था तो वह इसको पीट भी देती थी। पर यह इसके लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही हो जाता सो इसने उसे छोड़ने का निश्चय किया।

एक सुबह उसने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये मैंने सुना है कि हिन्दुस्तान में एक बादशाह गरीबों को रोज पॉच लाख रुपये दान में देता है। मैंने सोचा है कि मैं वहॉ जा कर उस दान को लेने की कोशिश करता हूँ।"

---

[47] Nagray and Himal – a folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 1887.
Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

स्त्री बोली — "ठीक है जाओ। मैं तुम्हें बिल्कुल भी याद नहीं करूँगी।"

ब्राह्मण ने अपनी यात्रा के लिये तुरन्त ही अपना कुछ सामान लिया और वहाँ से चल दिया। वह उस दिन बहुत जल्दी जल्दी और बहुत ज़्यादा चला। वह तब तक नहीं रुका जब तक वह एक जंगल में नहीं आ पहुँचा जहाँ उसको साफ और मीठे पानी की एक नदी मिली।

वहाँ उसने अपना बोझा उतार कर रखा और कुछ सुस्ताने कुछ खाना खाने और कुछ सोने के लिये बैठ गया। खाना खा कर जब वह सो रहा था तो एक छोटा सा साँप नदी में से निकल कर आया[48] और उसके उस थैले में घुस गया जिसमें उसका खाना रखा था।

इत्तफाक की बात कि उसी समय ब्राह्मण की आँख खुल गयी और उसको साँप दिखायी दे गया। उसके मुँह से निकला — "अरे यह क्या है।" कह कर उसने अपना थैला बन्द कर दिया।

एक विचार तो उसके मन में यह आया कि वह इसी समय अपनी पत्नी के पास वापस लौट जाये और यह थैला इसमें रखी हुई चीज़ों के साथ उसको दे दे। वह जरूर तुरन्त ही इस थैले को खोल कर देखेगी। जैसे ही वह इसे खोलेगी तो साँप इसमें से कूद कर उसको काट लेगा और फिर मैं उससे आजाद हो जाऊँगा।

[48] In the valley there are a large number of small streams of water to which a mysterious origin has been attributed by the people. Generally a snake is believed to have its abode in or by the spring.

इस विचार से खुश हो कर वह अपनी झोंपड़ी की तरफ दौड़ पड़ा और वहॉ पहुँच कर चिल्ला कर बोला — "प्रिये मुझे तो वापस आना ही पड़ा। मैं तुम्हें छोड़ नहीं सका न। लो मेरे हाथ से यह भेंट लो और मुझे माफ कर दो मैं अब तुम्हें छोड़ कर जाने की कभी सोचूँगा भी नहीं।"

स्त्री बोली — "क्या है? कहॉ है? कैसे? दिखाओ मुझे।"

ब्राह्मण बोला — "यहॉ नहीं। ऊपर वाले कमरे में चलो। वहॉ देखना।"

वे दोनों एक साथ सीढ़ियॉ चढ़ कर ऊपर गये। ऊपर पहुँच कर ब्राह्मण ने वह थैला अपनी पत्नी को दे दिया और कमरे के अन्दर जा कर खोलने के लिये कहा।

जैसे ही उसने वह थैला खोला तो यह देख कर उसके तो आश्चर्य की हद ही नहीं रही जब उसमें सॉप जो कैद से थक गया था कूद कर बाहर निकल आया।

वह उसको देख कर इतनी डर गयी कि उसके हाथ से थैला छूट कर नीचे गिर गया और वह वहॉ से पागलों की तरह से चीखती हुई अपनी जान बचाने के लिये कमरे के बाहर भागी।

यह करीब करीब दस मिनट तक चलता रहा कि अचानक उसे रोशनी दिखायी दे गयी जैसे वह चॉद की रोशनी हो और उसमें से एक बहुत सुन्दर बच्चा दिखायी दिया। उस बच्चे को देख कर उस स्त्री का दिल खुशी से भर गया।

वह अपने पति से चिल्ला कर बोली जो अभी भी कमरे के बाहर दरवाजा कस कर पकड़े खड़ा था कि कहीं उसकी पत्नी बाहर निकल कर बाहर न भाग जाये कि वह अन्दर आ कर वह आश्चर्य देखे।

पर उसने तुरन्त ही उसने यह कह कर अन्दर आने से मना कर दिया कि वह अपने आपको कटवाना नहीं चाहता था। उसकी पत्नी ने उसको बार बार पुकारा पर फिर भी उसने अन्दर आने से मना कर दिया।

आखिर जब उसने अपनी पत्नी की खुशी की आवाज सुनी तो उसने थोड़ा सा दरवाजा खोला और झॉक कर देखा तो उस सुन्दर चीज़ को देखा तो उसके मुॅह से निकला — "तो वह सॉप नहीं था जो मैंने इस थैले में बन्द किया था बल्कि यह सुन्दर लड़का था।"

वह भी उस बच्चे को देख कर बहुत खुश हुआ और उसने अपनी पत्नी और बच्चे को चूम लिया। उसी समय उसी जगह पति पत्नी में मेलजोल हो गया और दोनों खुशी से रहने लगे।

तभी से ब्राह्मण अमीर होता चला गया। उसका वह देवताओं की कृपा से पैदा हुआ बेटा दिनोंदिन सुन्दर हो कर बड़ा होता चला गया। उन्होंने उसका नाम नागरे रख दिया। वह बच्चा इतना अक्लमन्द निकला कि वह दो साल की उम्र में दस साल की उम्र का लगता था।

देश भर में उससे किसी की बहस करने की हिम्मत नहीं होती थी। हालॉकि वह दूसरे बच्चों की तरह से नहीं पढ़ा था पर वह बहुत सारी भाषाऐं बोल और पढ़ सकता था। उसको बहुत सारी विद्या आती थी। ऐसा इसलिये था क्योंकि वह एक स्वर्ग से उतरा हुआ बच्चा था।

एक दिन नागरे जब सात साल का हुआ तो उसने अपने पिता से पूछा कि क्या वह एक साफ पानी के सोते[49] में नहा सकता था। उसने कहा कि वह सोता बिल्कुल साफ पानी का ही होना चाहिये वरना वह मर जायेगा।

उसके पिता ने कहा — "यह तो ठीक है पर इस देश में कोई भी नदी ऐसी नहीं है सिवाय उस नदी के जो राजा की बेटी के बागीचे में बहती है। और वह बागीचा एक बहुत ऊॅची और मजबूत दीवार से घिरा हुआ जिसके अन्दर किसी का भी जाना मुश्किल है।" फिर भी नागरे ने अपने पिता से विनती की कि वह उस बागीचे का रास्ता उसे दिखा दे।

ब्राह्मण बोला — "नहीं कभी नहीं। तुम उसके अन्दर नहीं जा सकते क्योंकि अगर राजा के सिपाहियों ने तुम्हें बिना किसी काम के वहॉ आसपास भी घूमते देख लिया तो वे जा कर राजा को बता देंगे और फिर हम दोनों मारे जायेंगे।

[49] Translated for the word "Spring"

खैर नागरे उससे जिद करता रहा कि वह एक दैवीय बच्चा था और उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता था तब कहीं जा कर वह माना।

जब वे बागीचे के पास पहुँचे तो नागरे ने देखा कि वह बागीचा तो वाकई बहुत मजबूती से सुरक्षित था तो उसने उस चहारदीवारी में एक छोटे से छेद की तलाश शुरू कर दी। जल्दी ही उसे एक छोटा स छेद मिल गया।

नागरे यह देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने आपको एक छोटे से सॉप में बदला और उस छेद से हो कर बागीचे में चला गया। वहॉ उसको सबसे साफ पानी का एक सोता मिल गया। वहॉ जा कर उसने अपने आपको फिर से एक लड़के के रूप में बदला और जल्दी से उस पानी में नहा लिया।

इत्तफाक से उसका वहॉ आना पता चल गया। राजकुमारी उस समय अपने बागीचे में बैठी हुई थी तो उसने पानी में छपाक की आवाज सुनी तो उसने अपनी एक दासी को यह देखने के लिये भेजा कि यह छपाक की आवाज कहॉ से और कैसे आयी।

पर जब वह दासी वहॉ आयी तो नागरे फिर से सॉप में बदल गया और वहॉ से गायब हो गया।

कुछ दिन बाद वह फिर से उस बागीचे में आया और उस पानी में नहाने लगा। राजकुमारी जिसका नाम हीमाल था उस दिन भी वहीं बैठी थी जहॉ वह पहली बार बैठी हुई थी।

जैसे ही उसने नागरे के नहाने की आवाज सुनी तो उसने अपनी दासी से पूछा "कौन है यह जो मेरे बागीचे में इस तरह से घुसने की और मेरे तालाब में नहाने की हिम्मत कर सका। जाओ और जा कर देखो।"

दासी देखने के लिये गयी पर नागरे ने राजकुमारी का दिमाग पढ़ लिया और वहॉ से जल्दी से भाग गया। इस तरह से दासी को वहॉ कुछ नहीं मिला और वह फिर से खाली हाथ वापस आ गयी।

तीसरी बार नागरे फिर उस बागीचे में गया तो हीमाल वहीं सोते के पास ही बैठी थी सो उसने उस बहुत सुन्दर लड़के की शक्ल देखी। वह तो उसे देखती ही रह गयी। इतना सुन्दर लड़का न उसने पहले कभी देखा था न सुना था।

जब उस लड़के ने अपने आपको सॉप में बदला तो उसने अपनी एक दासी से कहा कि वह उसके पीछे पीछे जा कर यह देखे कि वह कहॉ जाता है। दासी उसका हुक्म मान कर उस सॉप के पीछे पीछे गयी तो उसने देखा कि उस सॉप ने तो अपनी शक्ल बदल ली थी। वह अब एक बहुत सुन्दर लड़का बन गया था।

उसने आ कर राजकुमारी को बताया कि अपनी शक्ल बदलने के बाद वह सोदाराम नाम के एक ब्राह्मण के घर में घुस गया। उसको लगा कि वह शायद उसका बेटा था। यह देख कर हीमाल ने सोचा कि यह लड़का तो सबसे ऊॅची जाति का है और यह मेरे

बराबर का है। यह बहुत ज़्यादा सुन्दर भी है तो क्यों न मैं अपनी मॉ के पास जा कर बात करूँ कि वह मेरी शादी इससे कर दें।

यह सोचते हुए वह अपनी मॉ के पास गयी और उससे अपने दिल की बात कही कि कैसे उसने उस सुन्दर लड़के को देखा और उसके प्यार में पड़ गयी। और अब क्योंकि उसकी उम्र भी हो गयी थी तो वह उससे शादी करना चाहती थी।

रानी ने यह बात राजा को बतायी तो राजा अपनी बेटी के पास आया और बोला — "ओ मेरी ऑखों की कीमती रोशनी और मेरे दिल की खुशी। मुझे तुम्हारी इच्छा का पता चला और मैं ऐसे बहुत सारे राजकुमारों को जानता हूँ जो तुमसे शादी करने के लिये तैयार हैं। उनमें से किसी एक को चुन लो और मैं तुम्हारी शादी उससे कर दूँगा।"

हीमाल बोली — "पिता जी। मैंने एक बहुत ही सुन्दर ब्राह्मण देखा है जिसके पिता का नाम सोदाराम है। मैं उससे शादी करना चाहती हूँ।"

यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "ओ बेवकूफ लड़की। सोदाराम तो केवल एक मामूली सा ब्राह्मण है। मैं अपनी बेटी की शादी उसके बेटे से कर के अपने आपको कैसे इतना नीचे गिरा सकता हूँ। यह नहीं हो सकता। यह काम तुम मुझे सौंप दो। मैं तुम्हारे लिये दुनियॉ का सबसे सुन्दर सबसे अमीर और सबसे इज़्ज़तदार राजकुमार ले कर आऊँगा।"

हीमाल बोली — "नहीं पिता जी। मुझे जो कहना था मैंने कह दिया। मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि सोदाराम गरीब है या अमीर। उसके बेटे को मैंने अपना दिल दे दिया है इससे ज़्यादा मैं और कुछ नहीं कह सकती।"

यह सुन कर तो राजा और भी गुस्सा हो गया। उसको लगा कि राजकुमारी बिल्कुल पागल हो गयी है। उसके बाद कुछ और बात हुई और फिर राजा वहॉ से चला गया। आखिर उसे अपनी बेटी की बात माननी ही पड़ी और एक दिन सुबह राजा ने सोदाराम को बुलवाया।

जब सोदाराम ब्राह्मण ने राजा का बुलावा सुना तो वह डर के मारे कॉप गया और सोचने लगा कि उसको वहॉ बुलाने की क्या क्या वजहें हो सकती हैं। "क्या राजा ने मेरे बेटे का बार बार राजकुमारी के बागीचे में जाना देख लिया है।" "या फिर वह मेरी अमीरी से जलता है।" "वह मुझसे चाहता क्या है।" इस तरह के कई सवाल उसके दिमाग में आने लगे।

जब वह राजा के पास पहुॅचा तो राजा ने एक गहरी सॉस ली और सोचा कि "ओह मेरी बेटी ने किसके बेटे को चुना है। मैं उसकी इच्छा को अपने वजीरों से और इस आदमी से कैसे कहूॅ। वे लोग इस मामले को ले कर मेरे ऊपर कितना हॅसेंगे और मेरा कितना मजाक बनायेंगे। उफ़ मैं कितना दुखी हूॅ।"

कुछ मिनटों बाद जब वह अपनी इस हालत से बाहर निकला तब वह ब्राह्मण से बोला — "ओ ब्राह्मण मैंने सुना है कि तुम्हारे एक बहुत ही सुन्दर और अक्लमन्द बेटा है। क्या तुम उसकी शादी मेरी बेटी से करने के लिये राजी होगे।"

ब्राह्मण बोला — "ओ राजा आप अपने कामों में बहुत बड़े और कुलीन हैं। अपने फैसलों में बहुत अक्लमन्द हैं। यह तो हमारे लिये आपका आशीर्वाद है कि आपने इस मामले में मुझसे बात की। मैं तो आपका बहुत ही छोटा और हुक्म बजा लाने वाला आदमी हूँ और आपकी खुशहाली चाहता हूँ।"

तब राजा ने अपने ज्योतिषियों को बुलवा कर उनसे शादी के लिये कोई अच्छा दिन निकालने के लिये कहा और सोदाराम अपने घर वापस लौट गया।

बेचारा सोदाराम। वह खुशी और दुख की मिलीजुली भावनाओं के साथ अपने घर लौटा। वह खुश था कि उसको राजा से यह इज़्ज़त मिल रही थी। वह दुखी था क्योंकि इस शादी में उसका बहुत सारा खर्चा होने वाला था। "मैं इतना पैसा कहाँ से लाऊँगा जो इस शादी में मैं इतना फिजूलखर्च करूँ।" उसने सोचा।

घर पहुँच कर उसने सब कुछ अपनी पत्नी और अपने बेटे को बताया। लड़का बोला — "पिता जी आप चिन्ता मत कीजिये। आप राजा के पास जा कर पूछिये कि उनकी खुशी किसमें है मेरे सादे से ढंग से आने में या शान शौकत से आने में।"

सोदाराम अपने बेटे का यह जवाब सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "ओह मेरे बेटे इस बात पर तो राजा मुझे यकीनन मार देंगे। मैं अमीर जरूर हूँ पर मेरे पैसे का राजा के पैसे से क्या मुकाबला।"

बेटा बोला — "मैंने कहा न पिता जी कि आप चिन्ता न कीजिये। आप मेरा विश्वास करें मेरे पास इतना खजाना है जिसकी कोई कीमत ही नहीं ऑक सकता।"

सो अगली सुबह ब्राह्मण राजा के पास गया जहाँ उसको शान के साथ बिठाया गया। राजा बोला कि लड़का जितनी शान से उसके घर आ सकता था आये। यह सुन कर ब्राह्मण डर से काँपता हुआ अपने घर वापस लौट गया। वह सोच रहा था कि यह सब कैसे होगा।

जिस दिन की शादी थी उस दिन शहर में सब जगह बड़ी हलचल थी। शहर के सारे लोग अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने घूम रहे थे। चारों तरफ संगीत बज रहा था। लोग गाने गा रहे थे। राजा ने भी बहुत सारे राजाओं की अगवानी के लिये बहुत ही शानदार इन्तजाम कर रखा था। सबके लिये एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम था।

लेकिन उस सुबह ब्राह्मण अपने घर में दुखी सा बैठा हुआ था। उसने शादी का कोई इन्तजाम नहीं कर रखा था। उसने तो अपने

रोज के कपड़े ही पहने हुए थे उनको भी नहीं बदला था क्योंकि नागरे ने उससे ऐसा ही करने के लिये कहा था।

आखिर जब शादी के समय में एक घंटा रह गया तो उसके बेटे ने उससे कहा — "आइये और मेरा खजाना देखिये।"

उसके बाद नागरे ने एक चिट्ठी लिखी और अपने पिता को दे कर कहा — "यह लीजिये इसे फलॉ फलॉ सोते पर ले जाइये और इसे उसमें फेंक दीजियेगा और वापस आइये।"

सोदाराम ने वैसा ही किया और जब वह वापस आते समय अपने घर के पास आ पहुँचा तो उसे बाजों और ढोलों की बहुत तेज़ आवाज सुनायी दी और पास आया तो बहुत सारे सिपाही बहुत सुन्दर पोशाक पहने दिखायी दिये।

उसने बहुत सारे घोड़े देखे जो बहुत कीमती साज पहने थे। बहुत सारे हाथी देखे जिन पर अनगिनत खजाना लदा हुआ था – सोना चॉदी कीमती जवाहरात आदि। चारों तरफ हवा में खुशबू उड़ रही थी। यह सब देख कर उसको लगा कि शायद कोई विदेशी ताकत राजा पर चढ़ाई करने के लिये आ गयी है।

पर यह जान कर तो उसके आश्चर्य की हद नहीं रही जब उसे पता चला कि वे सब हाथी घोड़े सिपाही तो उसके बेटे के हुक्म से वहॉ मौजूद थे।

यह सब देख कर सोदाराम की जान में जान आयी और वह अपने घर में घुसा। उसने देखा कि उसका बेटा नागरे भी राजकुमारों

जैसे कपड़े पहने था। कुछ सुन्दर कपड़े उसका भी इन्तजार कर रहे थे। समय आने पर दोनों अपनी बारात के साथ राजा के महल की तरफ चलने के लिये तैयार हुए।

जब वे राजा के महल के पास पहुँचे तो राजा ने देखा कि उसके यहाँ तो एक बहुत ही बड़ा जुलूस चला आ रहा है। उसने अपने वजीरों से कहा — "यह नहीं हो सकता। यह सोदाराम हो ही नहीं सकता। जरूर कहीं कुछ गलत है। यह या तो कोई राजकुमार लगता है या फिर कोई देवता है।"

उसका यह डर जल्दी ही चला गया जब उनके पास आने पर उसने देखा कि वे तो सोदाराम और उसका बेटा ही थे। शादी की रस्म बहुत ही शानदार तरीके से पूरी हुई। सब कुछ सन्तोषपूर्वक हो गया।

जैसे ही शादी खत्म हुई नागरे ने अपने सब लोगों को वापस भेज दिया पर वह खुद महल में ही रहा। वह रोज दरबार जाता था। फिर राजा ने उसको नदी के किनारे अपने लिये एक महल बनाने के लिये कहा।

पर नागरे की हीमाल के अलावा और भी कई पत्नियाँ थीं और उसकी ये पत्नियाँ उसकी इतनी लम्बी गैरहाजिरी से बहुत नाराज थीं। सो एक दिन वे सब अपने पति को वापस लाने के लिये प्लान करने के लिये जमा हुईं। काफी देर बातचीत करने के बाद उनमें से एक पत्नी इस काम को करने के लिये तैयार हुई।

उसने एक जादूगरनी[50] का रूप रखा शीशे के कुछ बर्तन लिये जिनमें कुछ ऐसी ताकत थी कि अगर नागरे उनको देखता तो उसको अपनी पुरानी पत्नियों की याद आ जाती और उसकी उनके पास लौट आने की इच्छा हो आती। यह स्त्री नागरे के घर के पास गयी और मौके की तलाश में रही।

एक दिन वह हीमाल से मिली और उसे बताया कि वह शीशे के बर्तन बेचती थी। काफी तो वह बेच चुकी थी पर अब जो उसके पास बर्तन थे वह उन्हें बहुत सस्ते में बेचना चाहती थी। हीमाल ने उसके वह बर्तन देखे और उनमें से कुछ खरीद लिये।

शाम को जब नागरे घर आया तो उसने वह बर्तन उसको दिखाये तो उनको देख कर वह बहुत गुस्सा हुआ और उससे उन्हें तोड़ देने के लिये कहा और कहा कि वह ऐसे

किसी की बात न सुने और न फिर ऐसी कोई चीज़ किसी से खरीदे। यह देख कर सॉपिन के मन में जो इच्छाऐं पनप रही थीं वे सब मर गयीं और वह वहॉ से चली गयी।

अब उसकी दूसरी पत्नियों में से एक दूसरी पत्नी ने यह काम अपने जिम्मे लिया। उसने एक वेश्या का रूप रखा और हीमाल के पास जा कर कहा — "राजकुमारी जी मैं जाति से एक भंगी हूॅ। मेरे पति नागरे ने मुझे छोड़ दिया है। अगर आपने उन्हें कहीं देखा हो

[50] Translated for the word "Witch". See its picture above.

या उनके बारे में कहीं कुछ सुन हो तो मेहरबानी कर के मुझे बताइये।"

यह सुन कर हीमाल को बहुत गुस्सा आया। उसने तीखी आवाज में कहा — "क्या मेरा पति एक भंगी है।"

वह स्त्री बोली — "यह तो मैं नहीं जानती मुझे तो केवल अपना पति चाहिये। अगर आपको अपने पति की जाति पर शक हो तो आप खुद उनसे उनकी जाति एक सोते की सहायता से पूछ सकती हैं। उनको सोते के पानी में कूदने दीजिये। अगर वह डूब जाते हैं तब आप जान लीजिये कि वह भंगी नहीं हैं।"

हीमाल ने उस स्त्री के जवाब को बड़े ध्यान से सुना और जैसे ही वह वहॉ से गयी वह तुरन्त ही अपने पति के पास गयी और उससे कहा कि उसने सुना है कि वह एक भंगी है।

और वह यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं करेगी कि यह बात चारों तरफ उड़ जाये और सब लोग इस बात को जान जायें। इससे पहले कि यह सब हो वह चाहती है कि वह सोते के पास जाये और यह साबित करे कि ऐसा नहीं है।

जब नागरे ने यह सुना तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपनी पत्नी को फिर बहुत ज़ोर से डॉटा कि वह ऐसी वैसी स्त्रियों की बात न सुना करे।

वह फिर बोला — "मुझे मालूम है कि वह असल स्त्री नहीं है। उसको बस मेरे मामलों में रुचि है और वह हमको अलग कर देना चाहती है। तुम्हें ऐसे लोगों का विश्वास नहीं करना चाहिये।"

हीमाल बोली — "मैं विश्वास तो नहीं करती प्रिय पर तुम मुझे अपनी जाति तो बताओ।"

वे लोग बहुत देर तक बात करते रहे। हालॉकि नागरे ने अपने इस इम्तिहान से बचने की बहुत कोशिश की पर हीमाल अपनी इच्छा पूरी करने से नहीं डिग रही थी। आखिर उसने अपनी इच्छा पूरी करने के लिये नागरे को तैयार कर ही लिया।

कुछ देर बाद ही दोनों एक सोते की तरफ बढ़े जा रहे थे। सोते के पास पहुॅचने पर नागरे पानी में उतरा। जैसे ही उसके पैर पानी से छुए वैसे ही वह रस्सी से कस कर बॅध गये जो सॉपिनों ने इस मौके के लिये खास तौर पर बनायी थी।

नागरे को तुरन्त ही पता चल गया कि उसके पैर पक्के तौर पर बॉधे जा चुके थे और अगर उसने वहॉ से जाने की कोशिश की तो उनको उसे वहीं छोड़ना पड़ेगा। उसने अपनी पत्नी को यह बात बतायी भी पर वह आखीर तक देखने के लिये अड़ी रही।

बहुत धीरे से नागरे पानी में नीचे और और नीचे उतरा जब तक कि पानी उसकी छाती तक नहीं आ गया। फिर वह कन्धों तक आया फिर मुॅह तक फिर ऑखों तक और फिर माथे तक आ गया।

अब वह सारा का सारा पानी के अन्दर था केवल उसकी चोटी ही बाहर थी।

अब हीमाल सन्तुष्ट थी उसने उसकी चोटी पकड़ कर खींची ताकि वह अपने पति को पानी से बाहर खींच सके। पर अफसोस उसके हाथ उसके कुछ ही बाल आ पाये। इस तरह नागरे की सॉप पत्नियों ने अपने पति नागरे को वापस पाया और हीमाल ने अपने सुन्दर दैवीय पति को खो दिया।

बेचारी हीमाल बड़ी नाउम्मीद हो कर अकेली ही महल वापस लौट आयी। पर अब वह वहॉ खुश नहीं थी। उसने वह महल छोड़ दिया और एक सड़क के किनारे एक बहुत बड़ी सराय[51] बना कर उसमें रहने लगी।

अब वह अपना ज़्यादातर समय यहीं बिताती। गरीब लोगों की जरूरतों को पूरा कर के उनकी सहायता करती जो उसके पास रोज ही बहुत सारी संख्या में आते और नागरे के नाम पर उससे भीख मॉगते।

काफी दिनों बाद एक दिन जब उसके पास गरीब और बीमार लोगों की सहायता करते करते पैसे और ताकत खत्म होने वाले हो रहे थे तो एक बहुत ही गरीब आदमी और एक लड़की जो उसकी बेटी लग रही थी उसके पास आये।

[51] Inn

उनकी गरीबी देख कर हीमाल का दिल उनके लिये दया से भर गया। उसने उनको अन्दर बुलाते हुए कहा — "आओ अन्दर आओ। मुझे तुम्हारी सहायता कर के बहुत खुशी होती पर इस समय मेरे पास सोने की इस ओखली और मूसल[52] के अलावा और कुछ नहीं रह गया है।

तुम ये ले जाओ। उसके बाद मैं लेट जाऊँगी और मर जाऊँगी। अब मुझे ज़िन्दा रहने की कोई इच्छा नहीं है।"

वह भिखारी और उसकी बेटी शाम तक उस सराय में रहे। लेकिन जाने से पहले उस भिखारी ने उसे यह कहानी सुनायी —

"राजकुमारी जी। हम दोनों यानी मैं और मेरी बेटी हमेशा ही खाने के लिये इधर उधर घूमते फिरते हैं। कल हम लोग एक जंगल में थे जहाँ हमें एक सोता मिल गया। यह देख कर कि वह सोता बहुत ही साफ और मीठे पानी का सोता था हमने वह रात वहीं बिताने का निश्चय किया। हम लोग एक पेड़ के खोखले तने में सो गये।

सोने से पहले हम लोग तारों की तरफ देख ही रहे थे कि हमने कुछ शोर सुना और जब हमने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि एक राजा अपनी बहुत बड़ी सेना ले कर उस सोते में से निकल रहा था।

जब आखिरी सिपाही भी उस सोते से बाहर आ गया तो खाने की तैयारी की गयी। खाना खाने से पहले राजा ने बलि दी उसके

[52] Translated for the words "Mortar and Pestle". See their picture above.

बाद सब खाना खाने बैठे। खाना खाने के बाद राजा की सब सेना तो उस सोते में समा गयी और गायब हो गयी पर वह राजा बाहर ही रहा। उसके हाथ में एक खाने की थाली थी।

जैसे ही उसके सारे सिपाही गायब हो गये उसने बहुत ऊँची आवाज में आवाज लगायी "क्या यहाँ कोई गरीब आदमी है?"

यह सुन कर हम दोनों उसके पास गये और उसने यह कहते हुए अपनी वह थाली हमें दे दी "बेवकूफ हीमाल के नाम।" और फिर सोते में जा कर गायब हो गया। फिर सब कुछ पहले जैसा हो गया।

वह कहानी सुनते समय हीमाल की क्या हालत हुई होगी उसका अन्दाजा भी नहीं लगाया जा सकता। उसकी साँस जैसे रुकने को थी उसकी आँखें जैसे उसके चेहरे से बाहर आने को थीं। उसका सारा शरीर काँप रहा था।

उसको खुद को यह पता नहीं था कि वह उस समय कैसा महसूस कर रही थी या क्या कर रही थी या बहुत खुश थी क्योंकि उसको यह कहानी सुन कर निश्चित हो गया था कि यह राजा और कोई नहीं उसका अपना नागरे था।

उसने सोने की ओखली और मूसल उस गरीब आदमी को दे कर कहा — "लो यह तुम्हारा ही है। अब तुम मेरे ऊपर एक मेहरबानी और कर दो तुम मुझे वह जगह दिखा दो जहाँ तुमने यह दृश्य देखा था।"

बूढ़े आदमी को तो खजाना मिल गया था। उसने वह ले कर राजकुमारी से कहा कि वह उसके लिये कुछ भी करने को तैयार है। वह उसी समय उठा और उसको उस सोते के पास ले चला।

जब वह हीमाल को ले कर उस सोते के पास पहुँचा तो कुछ अँधेरा सा हो गया था सो उन्होंने वह रात वहीं गुजारने का निश्चय किया।

बूढ़ा भिखारी और उसकी बेटी तो जल्दी ही सो गये पर हीमाल ने तय किया कि वह सारी रात जागेगी और देखेगी कि वह राजकुमार अपनी सेना के साथ फिर से सोते में से निकलता है या नहीं।

वह नाउम्मीद नहीं हुई। बीच रात में जब सब कुछ शान्त था नागरे और उसकी सेना वहाँ फिर से प्रगट हुई और पहले की तरह से एक बहुत बड़ी दावत की तैयारी हुई।

दावत खत्म होने के बाद उसकी सेना तो सोते में समा कर गायब हो गयी पर राजा वहीं बाहर ही रहा। जब सब सोते में गायब हो गये राजा पहले की तरह चिल्ला कर बोला "क्या कोई गरीब आदमी यहाँ है?"

हीमाल अपने पति को अकेला और बड़ा कुलीन और शानदार देख कर अपने आपको उसके पास जाने से रोक नहीं सकी। उसके पास जा कर उसने उसका हाथ पकड़ लिया और बोली — "मेरे

प्यारे नागरे। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मुझे माफ कर दो और फिर से मेरे साथ आ कर रहो।"

नागरे यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गया। वह बोला — "अफसोस मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।"

हीमाल बोली — "मुझे देखो तो। इन ऑखों को देखो। क्या मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ।"

तब नागरे को उस पर प्यार आ गया और उसने उसको पहचान लिया पर अब वह उसके साथ रह नहीं सकता था। उसने कहा कि उसकी सॉप पत्नियॉ अब उसे कहीं जाने नहीं देंगी। अभी तुम यहॉ से जाओ और एक महीने बाद मैं तुमसे मिलने फिर आऊँगा।"

लेकिन हीमाल बोली — "नहीं कभी नहीं। मैं तुम्हें अब नहीं छोड़ सकती। अगर तुम मेरे साथ नहीं आओगे तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।"

सो नागरे को इस बात पर राजी होना पड़ा। पर वह अपनी पत्नी को अपने साथ कैसे ले जाये यह वह नहीं जानता था। यह उसके लिये बहुत मुश्किल काम था।

आखिर बहुत सोचने के बाद उसने निश्चय किया कि वह उसको एक छोटे से पत्थर[53] में बदल देगा और उस पत्थर को वह अपनी जेब में रख कर ले जायेगा। वह केवल इसी तरीके से उस

[53] Little stone. Translated for the word "Pebble".

सोते में उसके घर जा पायेगी और उसकी दूसरी पत्नियों के हमले से बची रहेगी।

उसने ऐसा ही किया। हीमाल को उसने एक छोटे से पत्थर में बदला और अपने घर चला गया। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी सॉप पत्नियॉ और उसका परिवार उसके स्वागत के लिये आया। पर उसको लगा कि कुछ गलत था। वे अपने मन में कोई भेद छिपाये हुए थीं।

उसने पूछा कि क्या मामला था तो उसे मालूम हुआ कि उन्होंने उसके ऊपर किसी धरती के आदमी की खुशबू पहचान ली थी और उणको शक था कि वह बाहर की दुनियॉ से किसी बाहर के आदमी को अपने साथ सोते में ले कर आया है।

नागरे बोला कि उनका शक सही था और अगर वह यह वायदा करें कि वे उस आदमी को कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगी तो वह उस आदमी को उन्हें दिखायेगा। उन्होंने वायदा किया कि वे उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगी।

उसने वह छोटा पत्थर अपनी छिपी हुई जगह से निकाला और उसे उसका असली रूप दे दिया। जब उसकी सॉप पत्नियों ने एक बहुत सुन्दर लड़की को देखा तो वे उससे जलने लगीं। उन्होंने तुरन्त ही अपने मन में यह तय कर लिया कि वे उसको एक मामूली नौकरानी बना कर रखेंगी।

उसको यह काम दिया गया कि वह परिवार के अनगिनत बच्चों के लिये दूध उबाले। तरीका यह था कि जब दूध तैयार हो जाये तो वह एक बर्तन बजा दे। बच्चे उस बर्तन के बजने की आवाज सुन कर जान जायेंगे कि उनका खाना तैयार है और वे हीमाल के पास आ जायेंगे।

पर हीमाल अपने काम में कुछ बहुत ज़्यादा अच्छी नहीं थी सो एक दिन उसने तभी बर्तन बजा दिया जबकि दूध थोड़ा गर्म था। सॉप के छोटे छोटे बच्चों ने सोचा कि दूध पीने के लिये तैयार होगा तुरन्त ही दौड़े दौड़े रसोईघर में आये और सारा दूध पी गये।

लेकिन सॉप गर्म दूध नहीं पी सकते तो वह गर्म दूध पी कर वे सारे बच्चे मर गये। दुखी मॉओं को बहुत दुख हुआ। सारे घर में से रोने पीटने की आवाजें आने लगीं।

जब बड़े सॉपों को पता चला कि हीमाल की भूल से उनके बच्चे मर गये तो वे गये और उसको इतना काटा इतना काटा कि वह मर गयी। नागरे को भी यह जल्दी ही पता चला तो वह बहुत दुख में डूब गया।

जब उसे समय मिला तो उसने हीमाल की लाश के लिये एक छोटा सा बिस्तर बनाया और उसको सोते के पानी से बाहर निकाल कर एक पेड़ पर रख दिया। रोज वह उसको देखने के लिये बाहर आता और फिर सोते में वापस चला जाता।

एक सुबह एक पवित्र आदमी उधर से गुजर रहा था तो उसने एक पेड़ के ऊपर एक बिस्तर लगा देखा। वह यह देखने के लिये उस बिस्तर में क्या था पेड़ के ऊपर चढ़ गया। वहॉ उसने देखा कि एक बहुत सुन्दर लड़की वहॉ सोयी हुई थी।

उसने उस लाश को नीचे उतारा तो उसका दिल उस सुन्दर लड़की के लिये दर्द से भर गया। उसने नारायण की प्रार्थना की कि वह उसे ज़िन्दा कर दे। उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई और हीमाल ज़िन्दा हो गयी। वह उस पवित्र आदमी के साथ उसके घर चली गयी।

जब नागरे अगली बार उस लाश को देखने के लिये धरती पर गया तो उसने देखा कि उसका छोटा सा बिस्तर और वह लाश दोनों ही वहॉ से गायब थीं। उसने सोचा "क्या किसी ने उसकी लाश चुरा ली? या हीमाल खुद ही ज़िन्दा हो गयी और मुझे छोड़ कर चली गयी?"

सो उसने उसकी खोज शुरू कर दी। वह अपनी पत्नी को ढूँढने के लिये सब जगह घूमता फिरा। आखिर में वह उस पवित्र आदमी के घर पहुँचा। जब वह वहॉ पहुँचा तो हीमाल सो रही थी सो उसने अपने आपको एक सॉप में बदला और चुपचाप से उसके बिस्तर पर कुंडली बना कर बैठ गया।

जब वे लोग इस तरह बिस्तर पर एक साथ लेटे हुए थे कि इत्तफाक से उस पवित्र आदमी का बेटा वहॉ आ गया। उसको

हीमाल बहुत पसन्द थी और वह उससे शादी करना चाहता था। जब उसने हीमाल के पास एक सॉप कुंडली मारे बैठा देखा तो वह बहुत डर गया कि कहीं वह उसको काट न खाये। उसने तुरन्त ही अपना चाकू खोला और उस सॉप के दो टुकड़े कर दिये।

इससे जो शोर हुआ उससे हीमाल की ऑख खुल गयी और वह चिल्ला पड़ी — "ओह यह तुमने क्या किया। तुमने मेरे पति को मार दिया। मेरा प्यारा नागरे अब नहीं रहा।"

उसी शाम को सॉप की लाश को चन्दन की लकड़ी के ढेर पर रख कर जला दिया गया। उस समय की सती प्रथा के अनुसार हीमाल भी उसी के साथ जल कर मर गयी।

वह पवित्र आदमी इस दुख भरे दृश्य को देख कर बहुत दुखी हुआ। वह जहॉ वे दोनों लाशें जली थीं वहॉ गया और दोनों लाशों की राख उठायी और उनको अपने सामने रख कर दिन रात रोता रहा। उसको किसी तरह भी तसल्ली नहीं दी जा सकी।

खुशकिस्मती से उस दिन शिव जी और पार्वती जी[54] एक चिड़िया के रूप में उसी पेड़ की एक शाख पर बैठे थे जिसके नीचे वह पवित्र आदमी बैठा रो रहा था। उन्होंने उस पवित्र आदमी के रोने की आवाज सुनी तो उन्होंने उसकी सहायता करने की सोची।

[54] Shiv Ji is one of the three main gods of Hindus – Brahmaa Vishnu and Shiv. Paarvatee Jee is Shiv's wife.

शिव जी ने अपनी पत्नी से कहा — "ज़रा इस आदमी का दुख तो देखो। काश वह यह जान पाता कि इस राख की क्या ताकत है। अगर यह इस राख को इस सोते में फेंक दे तो दोनों फिर से ज़िन्दा हो जायेंगे।"

पवित्र आदमी ने चिड़ियों की यह बातचीत सुनी और तुरन्त ही उस राख को सोते के पानी में फेंक दिया। जैसे ही उसने यह किया कि नागरे और हीमाल दोनों फिर से ज़िन्दा और तन्दुरुस्त प्रगट हो गये।

इसके बाद तो सब खुशी खुशी रहने लगे। वे उस सोते के पास ही एक छोटा सा मकान बना कर रहने लगे। वह पवित्र आदमी भी उनके पास ही रहने लगा।

उसकी सहानुभूति के लिये अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये वे उस आदमी को कहीं और जाने ही नहीं देते थे। उसको उन्होंने उसके मरते दम तक सेवा की। भगवान ने उनको अच्छे काम करने का आशीर्वाद दिया।

10 हीरामन की कहानी[55]

जब जानवरों ने रास्ता दिखाया की लोक कथाओं के इस संग्रह में यह लोक कथा भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक बहेलिया[56] था जो जंगली चिड़ियों का शिकार कर के अपना और अपनी पत्नी का पेट भरता था। उसके पास कभी खाने को पूरा नहीं पड़ता था।

एक दिन उसकी पत्नी ने उससे कहा — "प्रिय मैं बताती हूँ कि हम लोगों के पास हमेशा ही खाने की कमी क्यों रहती है। क्योंकि तुम हमेशा ही अपने जाल में पकड़ी सारी चिड़ियें बेच देते हो।

जबकि अगर हम जो चिड़ियें तुम पकड़ते हो उनमें से कभी कभी कुछ खा लें तो शायद हमारी किस्मत ज़्यादा अच्छी हो जाये। मेरी सलाह यह है कि आज तुम जो चिड़ियें पकड़ कर ले कर आओ हम उन सबको बेचेंगे नहीं बल्कि उन्हें खा लेंगे।"

बहेलिया अपनी पत्नी की सलाह से राजी हो गया और चिड़ियें पकड़ने चला गया। वह अपनी पत्नी के साथ अपना चिड़ियॉ पकड़ने वाला जाल ले कर जंगल जंगल घूमा पर सब बेकार। उस दिन

---

[55] The Story of a Hiraman – a folktale from India, Asia. Taken from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. Hindi translation of this book has been published by NBT, Delhi. 2020.

[56] Translated for the word "Fowler"

इत्तफाक से उससे सूरज डूबने तक एक भी चिड़िया नहीं पकड़ी गयी।

बस जब वे नाउम्मीद हो कर घर की तरफ लौट रहे थे तो उन्होंने सुन्दर सा एक हीरामन[57] पकड़ लिया। बहेलिये की पत्नी ने उसको अपने हाथ में ले लिया और उसको चारों तरफ से सहलाते हुए बोली — "ओह यह कितनी छोटी सी चिड़िया है। इस बेचारी में से कितना मॉस निकलेगा। इसको मारने से क्या फायदा।"

हीरामन बोला — "मॉ मुझे मारना नहीं। मुझे तुम राजा के पास ले चलो वहॉ तुमको मुझे उसे बेचने पर बहुत सारे पैसे मिल जायेंगे।"

बहेलिया और उसकी पत्नी तो उस चिड़िया को बोलते सुन कर ही दंग रह गये। उन्होंने चिड़िया से ही पूछा कि वे राजा से उसकी क्या कीमत मॉगें।

हीरामन बोला — "वह तुम मुझ पर छोड़ दो। बस तुम मुझे राजा के पास ले चलो और कहो कि तुम इस चिड़िया को उसे बेचने के लिये ले कर आये हो।

और जब राजा तुमसे मेरी कीमत पूछे तो उससे कहना कि "चिड़िया अपनी कीमत अपने आप ही बतायेगी।" और फिर मैं उसको अपनी बहुत बड़ी कीमत बताऊॅगा।"

---

[57] A parrot is often called Hiraman (pronounced as Heeraaman) in India. See its picture above.

अगले दिन बहेलिया उस चिड़िया को ले कर राजा के पास गया और वहॉ जा कर बोला कि वह वह चिड़िया बेचने के लिये लाया है। चिड़िया बहुत सुन्दर थी। राजा उसकी सुन्दरता देख कर बहुत खुश हुआ और उसने बहेलिये से पूछा कि वह उसकी क्या कीमत चाहता है।

बहेलिया बोला कि यह चिड़िया अपनी कीमत अपने आप ही बतायेगी। राजा ने कहा एक चिड़िया भला क्या बोल सकती है।

बहेलिया बोला — "आप इस चिड़िया से ही इसकी कीमत पूछ कर तो देखिये न।"

राजा ने कुछ मजाक में और कुछ गम्भीरता से उस चिड़िया से कहा — "तो हीरामन बोलो तुम्हारी कीमत क्या है।"

हीरामन बोला — "योर मैजेस्टी, मेरी कीमत केवल दस हजार रुपये है। आप यह न सोचें कि यह कीमत बहुत ज़्यादा है आप बस यह पैसे गिन कर इस बहेलिये को दे दें क्योंकि मैं आपके बहुत काम आने वाला हूँ।"

राजा ने फिर हॅस कर पूछा — "तुम मेरे किस काम आने वाले हो हीरामन?"

हीरामन बोला — "यह तो हुजूर समय आने पर ही देख पायेंगे।"

राजा तो पहले ही हीरामन को बोलते सुन कर बहुत प्रभावित हो चुका था और केवल बोलते हुए ही नहीं बल्कि ढंग से और

होशियारी से बोलते हुए सुन कर तो वह उससे और भी ज़्यादा प्रभावित हो गया।

सो उसने अपने शाही खजांची से दस हजार रुपये निकलवा कर उस बहेलिये को दिलवा कर उससे हीरामन खरीद लिया। बहेलिया उतने पैसे ले कर खुशी खुशी घर चला गया।

राजा के छह रानियॉ थीं पर राजा को वह चिड़िया इतनी अच्छी लगी कि वह यह भूल ही गया कि उसकी रानियॉ भी महल में रहती थीं। उसके दिन और रात तो बस अब हीरामन के साथ ही बीतने लगे न कि अपनी रानियों के साथ।

राजा जो भी सवाल हीरामन से पूछता हीरामन उसकी बातों का न केवल इतनी अक्लमन्दी से जवाब देता था कि राजा उससे बहुत खुश होता बल्कि वह तैंतीस करोड़ देवताओं[58] के नाम भी उसको गा कर सुनाता। और इनके नाम सुनना तो बहुत ही पुन्य का काम था।

रानियों को लगा कि राजा तो उनसे अब बात ही नहीं करता वह केवल हीरामन से ही बात करता है सो वे उस चिड़िया से जलने लगीं। उन्होंने तय किया कि वे उसको मार देंगीं।

काफी समय बाद उनको उसको मारने का मौका मिला क्योंकि राजा हमेशा ही उसको अपने साथ रखता था।

[58] Names of 33 Crores (33,00,00,000), or 330 million Hindu gods. Hindus believe in 330 million gods. Hiraman could recite the names of all the gods.

एक दिन राजा शिकार के लिये गया और उसको वहॉ महल से दो दिन के लिये बाहर रहना था सो छहों रानियों ने इस मौके का फायदा उठाने का और उसको मारने का निश्चय किया।

उन्होंने आपस में बात की — "चलो चल कर उस चिड़िया से यह पूछते हैं कि हममें से सबसे बदसूरत कौन है। और जिस रानी को भी वह चिड़िया बदसूरत बतायेगी वही उसको गला घोट कर मार देगी।"

ऐसा सोच कर वे उस कमरे में गयीं जिसमें हीरामन था पर इससे पहले कि वे उससे कोई सवाल पूछतीं उसने बहुत ही मीठी और भक्ति भरी आवाज में तैंतीस करोड़ देवताओं के नाम बोलने शुरू कर दिये।

वे नाम सुन कर उनका दिल उसके लिये बहुत नम्र हो गया और वे बिना अपना काम पूरा किये वहॉ से चली आयीं।

पर अगले दिन उनकी बुरी अक्ल ने फिर से काम किया और उन्होंने अपने आपको हजार गालियॉ दीं कि उसके देवताओं के नाम बोलने ने उनका ध्यान उनके काम से क्यों बॅटा दिया।

सो उस दिन उन्होंने सोचा कि आज वे अपना दिल लोहे की तरह से मजबूत रखेंगी और उस चिड़िया पर बिल्कुल भी दया नहीं दिखायेंगी। उस दिन वह उसको जल्दी से जल्दी भी मार देंगी।

ऐसा सोच कर वे फिर उसके कमरे में जा पहुॅचीं और उससे बोलीं — "हीरामन, तुम एक बहुत ही अक्लमन्द चिड़िया हो और

तुम्हारा फैसला भी ठीक होता है। तुम हमें यह बताओ कि हममें से कौन सी रानी सबसे सुन्दर है और कौन सी रानी सबसे बदसूरत।"

हीरामन जान गया कि वे रानियॉ उसके पास बुरे इरादे से आयी हैं। वह बोला — "मैं आपके इस सवाल का जवाब इस पिंजरे में बन्द रह कर कैसे दे सकता हूँ।

अगर आपको मेरा सही फैसला जानना है तो मुझे आप सबके शरीर के हर हिस्से को बारीकी से देखना पड़ेगा – सामने से भी और पीछे से भी। और अगर आपको वाकई मेरी राय जाननी है तो पहले मुझे इस पिंजरे से मुझे आजाद भी करना पड़ेगा।"

रानियॉ पहले तो चिड़िया को पिंजरे में से निकालने में डरती रहीं कि कहीं ऐसा न हो कि चिड़िया उड़ जाये पर बाद में कुछ सोच कर उन्होंने उस कमरे के दरवाजे खिड़कियॉ सब बन्द किये और उसे पिंजरे में से बाहर निकाल दिया।

हीरामन ने कमरे में चारों तरफ निगाह दौड़ायी और देखा कि उस कमरे में पानी जाने का एक रास्ता था जिससे जरूरत पड़ने पर वह वहॉ से भाग सकता था।

जब रानियों ने अपना सवाल कई बार पूछा तो हीरामन बोला — "तुममें से किसी की भी सुन्दरता की उस लड़की की छोटी उंगली से भी तुलना नहीं की जा सकती जो सात समुद्र और तेरह नदियों के उस पार रहती है।"

रानियॉ अपनी सुन्दरता के बारे में इस तरह का जवाब सुन कर बहुत गुस्सा हुई और चिड़िया के टुकड़े टुकड़े करने के लिये दौड़ीं पर चिड़िया ने तो अपने भागने का रास्ता पहले से ही ढूँढ रखा था सो वह उस पानी के रास्ते से निकल कर उनसे बच कर भाग गयी और पास में बनी एक लकड़हारे की कुटिया में जा कर शरण ले ली।

अगले दिन राजा शिकार से घर वापस आ गया। आ कर उसने हीरामन को उसके पिंजरे में ढूँढा पर वह उसे जब वहॉ नहीं मिला तो वह दुख से पागल सा हो गया।

उसने अपनी रानियों से पूछा पर उन्होंने कहा कि उन्हें उसके बारे में कुछ नहीं पता। राजा बेचारा अपनी चिड़िया के लिये दिन रात रोता रहा क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था।

उसके मन्त्री लोग बहुत परेशान थे। उनको डर था कि इस दुख की वजह से कहीं राजा का दिमाग ही खराब न हो जाये क्योंकि वह सारा दिन रोता रहता था — "ओ हीरामन ओ हीरामन। तुम कहॉ गये।"

उसने फिर ढोल बजवा कर सारे शहर में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी आदमी उसकी पालतू चिड़िया हीरामन को ला कर उसे देगा उसको वह दस हजार रुपये देगा।

लकड़हारा यह मुनादी सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने सोचा कि अगर वह उस चिड़िया को राजा को दे देगा तो उसको

इनाम मिल जायेगा और वह ज़िन्दगी भर के लिये आजादी से रह पायेगा। बस वह हीरामन को राजा को दे आया और अपने इनाम के दस हजार रुपये उससे ले आया।

जब हीरामन ने राजा को बताया कि उसकी रानियों ने उसको मारने की कोशिश की थी तब तो वह तो गुस्से से पागल सा ही हो गया।

उसने उन सबको महल से बाहर निकालने का हुक्म दे दिया और उनको एक अकेली जगह में जहॉ खाना भी नहीं मिलता था रहने के लिये भेज दिया। राजा के हुक्म का पालन किया गया। कुछ ही दिनों में उसकी सब रानियों को जंगली जानवरों ने खा लिया।

कुछ दिनों बाद राजा ने हीरामन से कहा — "हीरामन तुमने रानियों से कहा कि उनमें से किसी की भी सुन्दरता की उस लड़की की छोटी उॅगली से भी तुलना नहीं की जा सकती थी जो सात समुद्र और तेरह नदियों के उस पार रहती है। क्या तुम्हें पता है कि मैं उस लड़की तक कैसे पहुॅच सकता हूॅ।"

हीरामन बोला — "हॉ हॉ बिल्कुल। मैं योर मैजेस्टी को उसके महल के दरवाजे तक ले जा सकता हूॅ जिसमें वह रहती है। और अगर योर मैजेस्टी मेरी सलाह मानें तो मैं यह जिम्मेदारी भी लेता हूॅ कि वह लड़की आपकी बॉहों में होगी।"

राजा बोला — "तुम जो कहोगे मैं वह करूँगा। बताओ तुम क्या चाहते हो कि मैं क्या करूँ ताकि मुझे वह लड़की मिल जाये।"

हीरामन बोला — "इस काम के लिये पक्षीराज नस्ल[59] के घोड़े की जरूरत है। अगर आप कोई पक्षीराज नस्ल का घोड़ा ला सकते हैं तो आप उस पर सवार हो कर बहुत ही थोड़े समय में सात समुद्र और तेरह नदियाँ पार पहुँच जायेंगे और उस लड़की के महल के दरवाजे पर भी पहुँच जायेंगे।"

राजा बोला — "तुम्हें तो मालूम है कि मेरे पास बहुत सारे घोड़े हैं। चलो हम चल कर देखते हैं कि उनमें कोई पक्षीराज नस्ल का घोड़ा है या नहीं।"

सो राजा और हीरामन दोनों घुड़साल में घोड़े देखने गये। हीरामन उन सब घोड़ों के सामने से गुजरा जो बहुत अच्छे घोड़े थे और जो ऊँची नस्ल के थे पर फिर वह एक छोटे से और नीची सी नस्ल वाले पतले से घोड़े के सामने जा कर रुक गया।

वहाँ रुक कर वह राजा से बोला — "यह है वह घोड़ा जो मुझे चाहिये। यह घोड़ा असली पक्षीराज नस्ल का घोड़ा है। पर इसको पूरे छह महीने तक खूब अच्छा खाना खिलाना होगा ताकि यह हमारा काम कर सके। अभी यह कमजोर है।"

राजा ने उस घोड़े को घुड़साल में एक तरफ को रख दिया और वह खुद अपनी निगरानी में उसको छह महीने तक उसके राज्य में

[59] Winged horse. It literally means the king of birds.

मिलने वाला सबसे अच्छा दाना खिलाता रहा। इस तरह का खाना खाने से वह घोड़ा जल्दी ही शक्ल सूरत में अच्छा होने लगा।

छह महीने बाद हीरामन ने कहा कि अब वह घोड़ा उनका काम करने के लिये तैयार है। फिर उसने शाही चॉदी का काम करने वाले से कहा कि वह चॉदी की कुछ खाई[60] बनाये। बहुत थोड़े समय में ही बहुत सारी खाई बन गयीं।

जब वे अपनी यात्रा शुरू करने वाले थे तो हीरामन ने राजा से कहा — "मुझे आपसे एक प्रार्थना करनी है। जब हम लोग इस पर सवार हो कर जायेंगे तब आप इस घोड़े को शुरू में ही केवल एक बार ही चाबुक मारेंगे।

क्योंकि अगर आप इसको एक बार से ज़्यादा बार चाबुक मारेंगे तो हम लोग उस लड़की के महल के रास्ते के बीच तक ही पहुॅच पायेंगे और फिर वहीं रुक जायेंगे।

और जब हम उस लड़की को ले कर घर लौटेंगे तभी भी आपको उसको शुरू में ही केवल एक ही बार चाबुक मारना है। अगर आप इसको एक बार से ज़्यादा बार चाबुक मारेंगे तो हम लोग फिर रास्ते के बीच तक ही पहुॅच पायेंगे और फिर वहीं रुक जायेंगे।"

[60] Khai is fried paddy.

"ठीक है।" कह कर राजा हीरामन और चॉदी की खाइयों के साथ पक्षीराज पर बैठ गया और उसने घोड़े को धीरे से एक बार चाबुक मारा। घोड़ा बिजली की गति से हवा में उड़ चला।

उसने कई देश पार किये, कई राज्य पार किये, कई समुद्र पार किये और फिर तेरह नदियॉ पार कीं। शाम को वह एक सुन्दर महल के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

महल के दरवाजे के पास एक बहुत ही बड़ा पेड़ खड़ा हुआ था। हीरामन ने राजा से कहा कि वह अपना घोड़ा पास में बनी घुड़साल में बॉध दे। फिर वह उस पेड़ पर चढ़ जाये और वहॉ छिप कर बैठ जाये।

हीरामन ने चॉदी की खाइयॉ लीं और पेड़ की जड़ के पास से उनको अपनी चोंच से एक एक कर के महल के सारे बरामदों और रास्तों पर जो उस लड़की के सोने के कमरे तक जाते थे गिराना शुरू कर दिया।

इसके बाद हीरामन जहॉ राजा छिपा बैठा था वहीं पेड़ पर जा कर बैठ गया।

आधी रात के कुछ घंटे बाद लड़की की दासी ने जो उसी के कमरे में सोती थी बाहर निकलने के लिये दरवाजा खोला तो देखा कि रास्तों पर चॉदी की खाइयॉ पड़ी हुई हैं। उसने उनमें से कुछ उठा लीं और यह न जानते हुए कि वे क्या थीं उसने उनको उस लड़की को दिखाया।

उस लड़की को लगा कि वे छोटी छोटी चॉदी की बन्दूक की गोलियॉ थीं पर उसको यह आश्चर्य हुआ कि वे वहॉ आयीं कहॉ से और कैसे।

वह भी अपने कमरे से बाहर निकल आयी और चारों तरफ देखा तो देखा कि वे उसके सोने के कमरे के दरवाजे के पास से ही लगातार आ रही थीं और पता नहीं कितनी दूर जा रही थीं।

उसको वे गोलियॉ बहुत अच्छी लगीं सो उसने वे चमकीली खाइयॉ सब रास्तों और बरामदों से उठा कर एक टोकरी में रख लीं।

खाइयॉ उठाते उठाते वह उस पेड़ की जड़ तक आ पहुॅची जिसके ऊपर राजा छिपा बैठा था। हीरामन ने राजा को पहले ही बता रखा था सो जैसे ही वह लड़की पेड़ के नीचे तक आयी वह पेड़ के ऊपर अपने छिपने की जगह से नीचे कूद गया और उसने उस लड़की को पकड़ लिया।

उसको उसने घोड़े पर बिठा लिया और फिर खुद भी बैठ गया। उस समय हीरामन राजा के कन्धे पर बैठा हुआ था। तुरन्त ही उसने घोड़े को बहुत ही धीरे से एक चाबुक मारा और उसका घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

अपने इस कीमती इनाम के साथ राजा अपने घर बहुत जल्दी पहुॅचना चाहता था सो वह हीरामन की बात बिल्कुल ही भूल गया कि उसको घोड़े को केवल एक ही बार चाबुक मारना है।

घर पहुँचने की जल्दी में उसने घोड़े को दोबारा चाबुक मार दिया। दूसरा चाबुक खाते ही वह घोड़ा तुरन्त ही शहर के बाहर एक जंगल में उतर गया।

हीरामन चिल्लाया — "योर मैजेस्टी यह आपने क्या किया? क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि इस घोड़े को केवल एक बार ही चाबुक मारना है और आपने इसको दो बार चाबुक मार दिया। बस अब यह और आगे नहीं जायेगा। अब हम लोग शायद यहीं मर जायेंगे।"

पर जो कुछ होना था वह तो हो चुका था। अब इसको बदला नहीं जा सकता था। पक्षीराज की ताकत दूसरी बार चाबुक मारने से अब खत्म हो चुकी थी और अब वे लोग घर नहीं लौट सकते थे।

वे सब उस घोड़े से उतर गये पर उनको कहीं किसी आदमी के रहने की जगह नहीं दिखायी नहीं दी। वहाँ उन्होंने कुछ फल और जड़ें खायीं और रात जमीन पर सो कर गुजारी।

अगली सुबह कुछ ऐसा हुआ कि उस देश का राजा उधर शिकार खेलने के लिये आया। वह एक बारहसिंगे का पीछा कर रहा था।

उसने उसको एक तीर मारा और उसके पीछे भागा तभी उसने उस राजा और उसके साथ एक बहुत सुन्दर लड़की को देखा। वह उस लड़की को देखता का देखता रह गया और सोचा कि वह

उसको पकड़ ले। उसने सीटी बजायी तो उसके सारे नौकर चाकर उसके चारों तरफ आ गये।

उन्होंने उस लड़की को पकड़ लिया और उसका प्रेमी जो उसको सात समुद्र और तेरह नदियों के पार से उसके महल से यहाँ तक लाया था उसने उसको मारा तो नहीं पर उसकी आँखें निकाल कर उसको अन्धा कर के वहीं जंगल में अकेला छोड़ दिया।

अकेला? नहीं नहीं बिल्कुल अकेला नहीं। क्योंकि अपना भला हीरामन तो उसके साथ था ही न।

उस देश का राजा उस सुन्दर लड़की को और उसके प्रेमी के घोड़े को अपने महल ले गया।

वहाँ जा कर लड़की ने राजा से कहा कि उसने एक कसम खा रखी है जो छह महीने में पूरी हो जायेगी इसलिये उसको उसके पास छह महीने तक नहीं आना चाहिये।

उसने यह छह महीने का समय उसको इसलिये दिया था कि पक्षीराज घोड़े को अपनी ताकत वापस लाने में छह महीने लगते। वह लड़की अब रोज ही किसी न किसी पूजा में लगी रहती।

उसकी इस कसम की वजह से उसको एक दूसरा घर दे दिया गया। वह वहाँ पक्षीराज घोड़े को भी ले गयी। वह वहाँ उसको सबसे अच्छा दाना खिलाती रही।

पर उसकी यह सब मेहनत बेकार जाती अगर वह हीरामन से न मिलती। पर वह उससे कैसे मिले? उसको एक तरकीब सूझी।

उसने अपने नौकरों को चिड़ियों के खाने के लिये अपने घर की छत पर बहुत सारा धान दाना दाल आदि बिखरा देने का हुक्म दिया। सो बहुत सारी चिड़ियें वहॉ खाना खाने आने लगीं। अब वह लड़की रोज उन चिड़ियों में रोज हीरामन को ढूँढती।

उधर हीरामन जंगल में रह कर बहुत परेशान था। उसको न केवल अपनी देखभाल करनी होती थी बल्कि नये अन्धे हुए राजा की भी देखभाल करने होती थी।

वह उसके लिये जंगल से कुछ पके फल तोड़ता। उनमें से कुछ वह राजा को खाने के लिये देता और कुछ वह खुद खाता।

इस तरह से हीरामन अपनी ज़िन्दगी गुजार रहा था कि एक दिन उस जंगल की दूसरी चिड़ियों ने उससे कहा — "ओ हीरामन तुम यहॉ जंगल में बड़ी खराब ज़िन्दगी गुजार रहे हो। तुम हमारे साथ बहुत बड़ी दावत खाने क्यों नहीं चलते।

वहॉ एक धार्मिक स्त्री हम लोगों के लिये अपने घर की छत पर बहुत सारा धान दाना दाल डालती है। हम लोग तो वहॉ सुबह सुबह ही चले जाते हैं और फिर हजारों चिड़ियों के साथ पेट भर कर वह दाना खा कर शाम को ही घर लौटते हैं।"

यह सुन कर हीरामन ने भी निश्चय किया कि वह भी अगले दिन उनके साथ जायेगा। उसको देख कर हीरामन को लगा कि वह स्त्री चिड़ियों के लिये दान ज़्यादा दे रही थी बजाय इसके कि वे चिड़ियॉ उस दाने में अपने लिये जो कुछ सोच रहीं थीं।

हीरामन ने उस लड़की को देखा तो वह उसको पहचान गया और उसने उससे राजा के बारे में बहुत सारी बातें कीं – उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में, उसके अन्धेपन को दूर करने के बारे में, उस लड़की के अपने वहॉ से बच कर निकल भागने के बारे में।

सब सोच विचार के बाद यह प्लान बनाया गया।

घोड़ा कुछ ही दिनों में राजा के महल जाने के लायक हो जायेगा क्योंकि छह महीने में से काफी दिन तो गुजर ही चुके थे।

उधर राजा का अन्धापन भी दूर हो जायेगा अगर हीरामन बिहंगम और बिहंगामी चिड़ियों के बच्चों की बीट ले आये जिनका घोंसला उस लड़की के सात समुद्र और तेरह नदियों के उस पार वाले घर के दरवाजे के पास वाले पेड़ पर था।

उनकी गर्म ताजा बीट राजा की ऑखों की पुतलियों के ऊपर लगाने से उसकी देखने की ताकत वापस आ जायेगी।

सो अगली सुबह हीरामन अपने काम पर चल दिया। रात को वह उस लड़की के महल के पास वाले पेड़ पर रहा। अगले दिन सुबह को उसने अपनी चोंच में एक पत्ता ले कर बिहंगम और बिहंगमी के घोंसले के नीचे उनके बच्चों की बीट का इन्तजार किया।

जब उनके बच्चों ने उस पत्ते में बीट कर ली तो वह उसको ले कर वापस उसी जंगल की तरफ उड़ चला जहॉ राजा रहता था।

जैसे ही वह समुद्र और नदियॉ पार कर के जंगल में आया और उसने वह कीमती दवा राजा की ऑखों में लगायी तो राजा की देखने की ताकत तुरन्त ही वापस आ गयी। राजा ने अपनी ऑखें खोलीं और देखने लगा।

कुछ दिनों में पक्षीराज की ताकत भी वापस आ गयी। वह लड़की भी वहॉ के देश के राजा के महल से बच कर जंगल में आ गयी। पक्षीराज ने राजा और लड़की और हीरामन को अपने ऊपर बिठाया और वे सब राजा के देश आ गये।

राजा ने अपने देश आ कर उस लड़की से शादी कर ली। वे लोग बहुत साल तक खुशी खुशी रहे और उनके कई लड़के और लड़कियॉ हुए।

हीरामन हमेशा ही उन सबको तैंतीस करोड़ देवताओं के नाम सुनाता रहा।

12 बहादुर राजकुमारी[61]

एक बार की बात है कि एक जगह दो राजा राज्य करते थे। उनमें से एक राजा के बहुत सुन्दर बेटा था और दूसरे राजा के बहुत सुन्दर बेटी थी। दोनों राजाओं के बच्चे शादी के लायक थे इसलिये दोनों राजा अपने अपने बच्चों के लिये जीवन साथी ढूँढने के लिये लोगों को भेज रहे थे।

किस्मत की बात कि दोनों राजाओं के दूत आपस में मिले और बातचीत के बीच उन्होंने एक दूसरे को अपने अपने उद्देश्य बताये। उन दोनों को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ जब उनको यह पता चला कि दोनों के बाहर निकलने का उद्देश्य एक ही था और दोनों राजा भी आपस में एक दूसरे की टक्कर के थे। इस तरह राजकुमार और राजकुमारी का जोड़ा बहुत अच्छा बनता था।

जब राजाओं ने अपने अपने दूतों से उनकी बात सुनी तो उन्होंने आपस में बात की और उन दोनों की शादी तय हो गयी।

एक दिन तय किया गया और दुलहा दुलहिन के घर पहुँच गया। शादी की रस्में सब बहुत शानदार तरीके से पूरी की गयीं।

---

[61] Brave Princess. a folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 1887.
Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

लेकिन उनकी खुशियों पर एक बादल छा गया। उनकी खुशी कितने कम समय के लिये थी। जब दुलहा अपनी दुलहिन को ले कर घर लौट रहा था तो रात को वह एक बागीचे में रुका। इत्तफाक से वह बागीचा परियों का था।

ये परियॉ रात को वहॉ आती थीं। उस रात जब वे वहॉ आयीं तो वहॉ राजकुमार को देख कर वे उससे प्रेम कर बैठीं। उन्होंने उसको अपना बनाने का सोच लिया। उन्होंने उस पर ऐसा जादू डाला कि वह मौत जैसी गहरी नींद सो गया।

अगली सुबह राजकुमारी और दूसरे लोगों ने उसको उठाने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। उन सबको लगा कि वह मर गया था सो उन्होंने उसका दुख मनाया और उसके लिये रोये जैसे कि लोग किसी मरे आदमी के लिये रोते हैं जिससे वे अब कभी बात नहीं कर पायेंगे। यह उनके लिये बड़ी मुश्किल की घड़ी थी।

तभी वहॉ पर सूडाब्रोर और बूडाब्रोर[62] दो चिड़ियें आयीं और जहॉ लोग राजकुमार के लिये रो रहे थे उस जगह के पास ही एक पेड़ की शाख पर आ कर बैठ गयीं और आपस में बातें करने लगीं।

सूडाब्रोर बोला — "इन लोगों को इस राजकुमार को दफन नहीं करना चाहिये।"

बूडाब्रोर बोला — "क्यों?"

[62] Sudabror and Budabror birds

सूडाब्रोर बोला — "क्योंकि यह अभी मरा नहीं है। शायद कुछ दिन में ही यह ज़िन्दा हो जायेगा।"

उनके ये शब्द राजकुमारी के कानों में अमृत की तरह से पड़े। उसने तुरन्त ही यह हुक्म दिया कि राजकुमार के शरीर को वहीं पड़ा रहने दिया जाये जहॉ वह था। उसने उन सबसे यह वायदा किया कि वह इस हुक्म की वजह उनको बाद में बतायेगी।

इस हुक्म के अनुसार राजकुमार के शरीर को उसी बागीचे में छोड़ दिया गया और बाकी सब लोग अपने अपने घरों को चले गये। दुखी दुलहिन और उसकी तरफ के लोग एक तरफ चले गये दुलहे की तरफ के लोग दूसरी तरफ चले गये।

राजकुमारी के माता पिता को अपनी बदनसीब बेटी की बदकिस्मती की बात सुन कर बहुत दुख हुआ। राजकुमारी भी दिन रात रोती रहती। कोई चीज़ उसको कोई आराम नहीं दे पाती। हर पल वह राजकुमार के लौटने की बाट तकती रहती पर वह तो आया ही नहीं।

आखिर जब उससे अपना दुख और नहीं सहा जा सका तो उसने अपने पिता से महल छोड़ कर इधर उधर घूमने की इजाज़त मॉगी जहॉ भी उसकी इच्छा होती।

हालॉकि राजा उसको इस तरीके से कहीं जाने देना नहीं चाहता था पर अपने मन्त्रियों की सलाह पर उसने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

मन्त्रियों का विचार था कि अगर राजकुमारी इसी तरह से यहॉ कुछ दिन और रही तो कहीं वह पागल न हो जाये। सो उनकी सलाह पा कर राजकुमारी बाहर घूमने चल दी। वह दुखी सी चारों तरफ घूमने लगी। हर आने जाने वाले वह पूछती रहती "क्या तुमने राजकुमार को कहीं देखा है?" "क्या तुमने राजकुमार को कहीं देखा है?"[63]

इस तरह घूमते घूमते और राजकुमार के बारे में पूछते पूछते उसको कई दिन बीत गये पर कोई भी उसको राजकुमार के बारे में कुछ न बता सका।

आखिर उसको एक बूढ़ा मिला। उसने उससे भी यही पूछा "क्या तुमने राजकुमार को कहीं देखा है?"

बूढ़ा बोला — "मैं एक बागीचे के पास से गुजर रहा था कि मैंने वहॉ जमीन पर एक बहुत सुन्दर लड़के को सोते हुए देखा। मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस नौजवान ने आराम करने के लिये ऐसी जगह क्यों चुनी सो मैं वहॉ रुक गया।

लो कुछ पल बाद ही मैंने कुछ परियॉ वहॉ आती देखीं। उन्होंने उसके सिर के नीचे एक जादू की छड़ी रखी तो वह तो उठ कर बैठा हो गया और उनसे बातें करने लगा। कुछ देर बाद उन परियों ने

[63] [My Note : there is an anomaly here. When the princess left the Prince herself there in the garden and then ordered her people to leave his body there then why she was asking other people that where was the Prince.]

वह जादू की छड़ी उसके पैरों के नीचे रखी तो वह फिर से लेट गया और सो गया।

मैंने बस यही देखा। मेरी तो समझ में आया नहीं कि इस सबका मतलब क्या था।"

राजकुमारी बोली — "आश्चर्य। क्या तुम मुझे उस बागीचे तक ले जा सकते हो जहॉ वह नौजवान सोया हुआ था।"[64]

बूढ़ा बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।" कह कर वह उसको उस बागीचे की तरफ ले गया जहॉ वह राजकुमार सोया हुआ था। जब वे वहॉ पहुँचे तो राजकुमार का शरीर वहॉ दिखने में बेजान जैसा पड़ा हुआ था।

राजकुमारी ने देखा कि जादू की छड़ी अभी भी राजकुमार के पैरों के नीचे रखी हुई थी। उसने तुरन्त ही वह छड़ी उसके पैरों के नीचे से निकाल ली और उसके सिर के नीचे रख दी। जैसा कि उस बूढ़े ने उसे बताया था वह राजकुमार उठ कर बैठा हो गया।

उठते ही उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम कौन हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। क्या तुम मुझे नहीं जानते?"

राजकुमार ने पूछा — "तुम यहॉ आयीं कैसे?"

[64] [My Note : the same anomaly is here too. When the Princess left the Prince in the garden then why the Princess asked the old man to take her there in that garden.

राजकुमारी बोली — "इन बूढ़े बाबा की सहायता से।" कह कर उसने उस बूढ़े की तरफ इशारा कर दिया जो डर के मारे कुछ दूरी पर खड़ा था। वह फिर बोली — "आओ उठो और जल्दी से इस भयानक जगह से कहीं दूर चलो।"

राजकुमार बोला — "अफसोस। मैं नहीं जा सकता। परियों को मेरे यहॉ न होने का बहुत जल्दी ही पता चल जायेगा। वे मेरे पीछे पीछे आ कर मुझे ढूँढ लेंगी और मुझे मार देंगीं। अगर तुम मुझे प्यार करती हो तो यह छड़ी तुम मेरे पैरों के नीचे रख दो और यहॉ से चली जाओ।"

"नहीं कभी नहीं। ऐसा नहीं हो सकता।"

राजकुमार बोला — "तो फिर ऐसा करो कि तुम इस पेड़ के खोखले तने में छिप जाओ क्योंकि तुम यहॉ सुरक्षित नहीं हो। परियॉ यहॉ कभी भी आ सकती हैं।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया। जैसे ही वह पेड़ के खोखले तने में जा कर छिपी परियॉ वहॉ आयीं।

उनमें से एक बोली — "उॅह यहॉ किसी आदमी की खुशबू आ रही है।"

दूसरी बोली — "लगता है यहॉ कोई आदमी आया है।"

कह कर दो तीन परियॉ उस आदमी की खोज में इधर उधर गयीं जो उनकी जगह देख गया था पर उनको कोई मिला नहीं।

उसके बाद उन्होंने राजकुमार को जगाया और उससे पूछा कि क्या वह किसी आदमी को जानता था जो उसके आस पास घूम रहा हो। राजकुमार ने साफ मना कर दिया कि उसने किसी आदमी को वहॉ आस पास घूमते नहीं देखा।

वे बोलीं — "पर हमारा पक्का विश्वास है कि यहॉ कोई आदमी आया था क्योंकि आदमी की खुशबू हवा में फैली हुई है। कोई बात नहीं हम लोग कल यह जगह छोड़ कर किसी दूसरी जगह चले जायेंगे।"

सो अगली सुबह परियों ने सारा बागीचा देखा क्योंकि वह बागीचा बहुत बड़ा था और अपने लिये कोई दूसरी जगह ढूँढ ली जहॉ उनको लगा कि वहॉ कोई आदमी नहीं आ पायेगा।

जब वे वहॉ नहीं थीं तो राजकुमार ने राजकुमारी से कहा — "प्रिये अब तुम क्या करोगी। वे मुझे किसी दूसरी जगह ले जायेंगी और मैं फिर तुम्हें कभी भी नहीं देख पाऊँगा।"

बहादुर राजकुमारी बोली — "नहीं ऐसा कभी नहीं होगा। तुम देखना मैं कुछ फूल इकट्ठा करूँगी। तुम जब यहॉ से जाओ तो इन फूलों को अपने पीछे पीछे बिखेरते जाना जिससे मुझे पता चल जायेगा कि तुम कहॉ गये हो।"

कह कर राजकुमारी ने राजकुमार को एक खास किस्म के फूलों का एक गुलदस्ता ला कर दिया। राजकुमार ने उन फूलों को अपने

कपड़ों में छिपा लिया और राजकुमारी फिर से अपने उसी पेड़ के खोखले तने में जा कर छिप गयी।

कुछ देर बाद परियॉ फिर वहॉ आयीं और राजकुमार को उन्होंने अपने पीछे पीछे आने के लिये कहा। जब राजकुमार उनके पीछे जा रहा था तो वह फूल अपने पीछे फेंकता जा रहा था।

अगले दिन राजकुमारी उन फूलों के सहारे चलती गयी जब तक कि वह एक बहुत बड़ी और शानदार बिल्डिंग के पास नहीं आ गयी जो एक महल की तरह लग रही थी। यह एक देव का घर था जिसने परियों को भी बहुत तरह के जादू सिखा रखे थे।

राजकुमारी बिना किसी डर के उस महल में अन्दर चली गयी। उसने देखा कि वहॉ अन्दर तो कोई भी नहीं था तो वह सुस्ताने के लिये एक नीचे से स्टूल पर बैठ गयी।

करीब एक घंटे के बाद देव आया। राजकुमारी को देख कर उसने सोचा कि शायद वह उसकी बेटी है जिसको एक दूसरा देव जबरदस्ती उठा कर ले गया था।

वह उसकी तरफ दौड़ता हुआ बोला — ओह मेरी प्यारी बेटी। तुम वापस कैसे आयीं। उस नीच से तुम कैसे बच पायीं।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही हालात का अन्दाजा लगा लिया वह बोली — "जब वह सो रहा था पिता जी तब मैं वहॉ से भाग निकली।"

कुछ समय तक राजकुमारी देव के पास रही। वहॉ उसको देव और परियॉ देव की बेटी ही समझते रहे। वह वहॉ जो चाहती वह करती थी और जहॉ चाहती वहॉ जाती थी।

उसकी प्रार्थना पर देव ने उसको कई जादू भी सिखा दिये थे जैसे किसी आदमी को मरा हुआ कैसे दिखाना फिर कैसे उसे ज़िन्दा करना छिपी हुई चीज़ों का पता लगाना आदि आदि।

एक दिन उसने अपनी ताकत से यह पता लगा लिया कि राजकुमार एक परी के कान के बुन्दे[65] में छिपा हुआ है।

उसने यह बहाना बनाया कि वह बुन्दा उसको बहुत पसन्द था इसलिये वह उसको पहनने के लिये दे दिया जाये। पहले तो परी ने कुछ ना नुकुर की पर फिर उसको देव की बेटी होने के नाते उस बुन्दे को दे देना पड़ा लेकिन इस शर्त पर कि वह बुन्दा वह उसको अगले दिन दे दगी।

राजकुमारी इस बात पर राजी हो गयी। जैसे ही परी ने उसको अपना बुन्दा दिया और वह वहॉ से चली गयी तो राजकुमारी ने अपने जादू से राजकुमार को उसमें से बाहर निकाल लिया।

राजकुमार ने बाहर आते ही इधर उधर देखा तो राजकुमारी ने उससे पूछा — "क्या तुम मुझे पहचानते हो? या तुम मुझे अभी भी नहीं जानते? मैं तुम्हारी पत्नी हूॅ।

[65] Translated for the word "Earrings". See its picture above.

तुम्हारे लिये मैंने अपने पिता का घर छोड़ा। तुम्हारे लिये मैंने उस बागीचे में जाने की हिम्मत की जिसमें तुम लेटे हुए थे। तुम्हारे लिये मैंने देव के मकान में घुसने की जुर्रत की। क्या तुम मुझे नहीं पहचानते?"

तब राजकुमार को कुछ होश आया। उसने उसको पहचान लिया और खुशी से रो पड़ा।

राजकुमारी बोली — "आओ चलें। मैं तुम्हें अब बताऊँगी कि तुम्हें क्या करना है। देव और उसके सब आदमी यह समझते हैं कि मैं उसकी बेटी हूँ जिसे कोई दूसरा देव उससे जबरदस्ती छीन कर ले गया था।

अब मैं तुम्हें अपने पिता देव के पास ले जाऊँगी और उससे कहूँगी कि जब मैं उस भगाने वाले देव से बचने की कोशिश में भाग रही थी तो तुम मुझे मिल गये। तुम्हारी सुन्दरता देख कर मैं तुम्हारे ऊपर रीझ गयी और मैंने तुमसे शादी कर ली।

मैं उसको यह भी बताऊँगी कि तुम एक शाही खानदान के हो इसलिये वह हमारी शादी को मान लें। जब वह यह सुनेगा तो वह बहुत खुश होगा। तुम डरना नहीं। आओ और देखो कि क्या क्या होता है।"

राजकुमारी की बात ठीक निकली। पिता देव अपनी बेटी की शादी की बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी बेटी की

शादी की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी जिसमें उसने सारी परियों को बुलाया।

राजकुमार और राजकुमारी देव के पास कुछ हफ्तों तक आनन्द से रहे। फिर राजकुमार ने देव से अपने माता पिता से मिलने की और राजकुमारी को भी उनसे मिलवाने की इच्छा प्रगट की।

हालॉकि देव उन दोनों को अपने पास ही रखना चाहता था पर फिर उसको राजकुमार को घर जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी। उसने उनके लिये बहुत सारी भेंटें इकट्ठी कर के उनके साथ रख दीं और उनसे जल्दी वापस आने के लिये कहा।

और बहुत सारी चीज़ों के अलावा उसने उनको एक पीठ[66] भी दिया जिस पर जो कोई बैठ जाता था वह उसको उसकी मनचाही जगह पहुॅचा देता था। यह राजकुमार और राजकुमारी के लिये तो बहुत ही काम की चीज़ थी।

उन्होंने उस पीठ में अपना खजाना भरा और उसके ऊपर बैठ कर देव और सारी परियों को विदा कह कर राजकुमारी के पिता के राज्य चले गये। वे जल्दी ही वहॉ पहुॅच गये।

क्योंकि राजा की बेटी घर वापस लौट आयी थी और उसका पति भी मरा नहीं था ज़िन्दा था और ठीक था और उसके साथ था

[66] Peeth means stool

सो उस दिन महल में ही नहीं बल्कि सारे शहर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

13 जादूगरनी और सूरज की बहिन[67]

एक दूर देश के एक राज्य में एक ज़ार और एक ज़ारिट्सा रहते थे। उनके एक बेटा था जिसका नाम था – इवान जारेविच।[68] वह जन्म से ही गूँगा था बोल नहीं सकता था।

जब वह बारह साल का हो गया तो एक दिन वह अपनी घुड़साल में अपने एक घोड़े को देखने भालने गया जिसको वह बहुत प्यार करता था। वह हमेशा उसको कहानियॉ सुनाया करता था। पर इस बार उसने उसको कोई कहानी नहीं सुनायी।

घोड़ा बोला — "इवान ज़ारेविच तुम्हारी मॉ को जल्दी ही एक बेटी होगी और तुम्हारे एक बहिन आ जायेगी। वह एक बहुत भयंकर जादूगरनी होगी और वह तुम्हारे माता पिता और जनता सबको खा जायेगी।

तुम घर जाओ और अपने पिता से कहो कि वह तुमको अपना सबसे अच्छा घोड़ा दें। तुम उस पर चढ़ कर यहॉ से निकल जाओ और देखो कि तुम अपनी इस बदकिस्मती से बच सकते हो या नहीं।"

---

[67] The Witch and the Sister of the Sun – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

[68] Tzar, or Tsar is the title of King in Russia till 1917. Tzaritsa is the wife of the Tzar, and Tzarevich is the son of a Tzar.

इवान ज़ारेविच तुरन्त ही अपने पिता के पास दौड़ा गया और ज़िन्दगी में पहली बार बोला। ज़ार ने जब उसके बोलते हुए सुना तो वह तो इतना खुश हुआ कि उसने उससे यह भी नहीं पूछा कि उसको घोड़ा क्यों चाहिये था। बस उसने अपना सबसे अच्छा घोड़ा तैयार करवाया और उसको दे दिया।

इवान ज़ारेविच उस पर सवार हुआ और वहॉ से भाग लिया जहॉ भी उसकी नजर गयी। वह बहुत देर तक चलता रहा बहुत दूर पहुँच गया।

चलते चलते वह दो बूढ़े दर्जियों के पास आया और उनसे पूछा कि क्या वह उनके साथ रह सकता है।

वे बोले — "हमको तुमको अपने पास रखने में बहुत खुशी होती इवान ज़ारेविच पर हमारे साथ एक समस्या है। और वह यह कि अभी तो हम अपनी सुइयों से यह बक्सा तोड़ रहे हैं। इसके बाद हम इसको फिर से सिलेंगे तब तक हमारी उम्र खत्म हो जायेगी।"

इवान ज़ारेविच यह सुन कर रो पड़ा और वहॉ से आगे चल दिया। चलते चलते वह वरतोडूब[69] के पास आया और उससे पूछा कि क्या वह उसको अपना बेटा बनाना पसन्द करेगा।

वरतोडूब भी बोला कि वह उसे अपना बेटा बनाना जरूर पसन्द करता पर जैसे ही उसने ये सारे ओक के पेड़ उनकी जड़ों सहित घुमा दिये उसके मरने का समय आ जायेगा।

[69] Vertodub

इवान जारेविच उसके लिये भी बहुत रोया पर फिर अपने घोड़े पर सवार हुआ और फिर आगे चल दिया। चलते चलते आगे उसको वरतोगोर[70] मिला तो उसने उससे भी यही प्रार्थना की।

वह बोला — "मैं तुम्हें अपने पास रख कर बहुत खुश होता इवान ज़ारेविच पर मुझे बहुत अफसोस है कि मेरी ज़िन्दगी बहुत नहीं है। मुझे यहॉ इन पहाड़ों का मुँह इधर से उधर फेरने के लिये रखा गया है। जैसे ही मैंने आखिरी पहाड़ का मुँह दूसरी तरफ किया कि मैं मर जाऊँगा।"

इवान यह सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़ा पर फिर और आगे बढ़ा। आखिर वह सूरज की बहिन के पास आया। उसने उसे मॉस खिलाया शराब पिलायी और उसको अपना बेटा बनाया। ज़ारेविच का समय वहॉ बहुत अच्छा बीत रहा था पर वह सन्तुष्ट नहीं था।

क्योंकि वह इस बात से बिल्कुल अनजान था कि उसके घर में क्या हो रहा था सो एक दिन वह एक बहुत बड़े से पहाड़ पर चढ़ा और वहॉ से अपने घर की तरफ देखा तो उसने देखा कि वहॉ तो सब कुछ खाया जा चुका है। केवल घर की दीवारें ही खड़ी थीं। वह लम्बी लम्बी उसॉसें ले ले कर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

जब वह पहाड़ पर से नीचे उतर आया तो उसको सूरज की बहिन मिली और उससे पूछा — "इवान ज़ारेविच तुम क्यों रोते हो?"

---

[70] Vertogor

इवान ज़ारेविच बोला — "वहॉ हवा थी जो मेरी ऑखों में कुछ डाल रही थी।" और उसने फिर रोना शुरू कर दिया।

वह पहाड़ पर दोबारा गया और देखा कि उसके मकान की केवल दीवारें ही रह गयी हैं। वह फिर बहुत रोया और घर वापस आ गया।

सूरज की बहिन उसे फिर मिली और उसने उससे फिर पूछा — "इवान ज़ारेविच तुम क्यों रो रहे हो?"

उसने उसको फिर वही जवाब दिया — "वहॉ हवा थी जो मेरी ऑखों में कुछ डाल रही थी।"

वह तीसरी बार पहाड़ पर चढ़ा पर इस बार उसे सूरज की बहिन को मजबूरन सच बताना ही पड़ा। उसने उससे प्रार्थना की वह उसको वहॉ से उसके घर जाने दे ताकि वह यह देख सके कि उसके घर में क्या हो रहा है।

उसने उसको एक ब्रश दिया एक कंघी दी और दो सेब दिये और उसे जाने की इजाज़त दे दी। उसने उसको बताया कि कोई आदमी चाहे कितना भी बूढ़ा क्यों न हो अगर उसके सेबों में से एक सेब खायेगा तो तुरन्त ही जवान हो जायेगा।

यह सब ले कर वह तुरन्त ही वहॉ से भाग लिया।

वह वरतोगोर के पास पहुँचा। उसके पास हटाने के लिये अब केवल एक ही पहाड़ रह गया था। सो इवान ने अपना ब्रश निकाला और उसको मैदान में फेंक दिया।

अचानक ही चारों तरफ पहाड़ उठने लगे और उनकी चोटियॉ आसमान तक पहुॅच गयीं। और वे इतनी सारी थीं कि उनको कोई गिन नहीं सकता था।

यह देख कर वरतोगोर बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी काम करने लगा। इवान आगे चला तो उसे वरतोडूब मिला। अब उसके पास ओक के केवल तीन पेड़ रह गये थे सो उसने अपनी कंघी निकाली और उसको मैदान में फेंक दी।

तुरन्त ही वहॉ पर ओक के पेड़ों का एक बहुत बड़ा जंगल खड़ा हो गया। हर पेड़ पहले पेड़ से ज़्यादा मोटा था। वरतोडूब यह देख कर बहुत खुश हो गया और अपने काम में लग गया।

उसके बाद इवान दूर चला या पास चला और दोनों बुढ़ियों के पास आया। उसने दोनों बुढ़ियों को एक एक सेब दिया। सेब खा कर तो वे फिर से जवान हो गयीं।

यह देख कर वे बहुत खुश हुईं और उन्होंने उसको एक रूमाल दिया और कहा कि उसके बस हिलाने पर ही एक बहुत बड़ी झील प्रगट हो जायेगी। उस रूमाल को ले कर इवान ज़ारेविच अब अपने घर की तरफ चल दिया।

उसकी बहिन दौड़ी हुई उसके पास आयी और उसको प्यार से सहलाने लगी और बोली — "मेरे भाई अब तुम थोड़ा बैठ जाओ।

मैं जब तक तुम्हारे लिये खाना तैयार करती हूँ तब तक तुम हार्प[71] बजाओ।"

इवान ज़ारेविच वहीं बैठ गया और हार्प के तार कसने लगा कि कमरे के कोने के एक छोटे से छेद से एक बहुत छोटा चूहे का बच्चा बाहर निकल आया और आदमी की आवाज में बोला — "ज़ारेविच तुम यहाँ से जितनी जल्दी हो सके भाग जाओ। तुम्हारी बहिन अपने दाँत तेज़ कर रही है।"

इवान ज़ारेविच तुरन्त ही कमरे से बाहर निकल गया अपने घोड़े पर बैठा और सूरज के पास वापस चल दिया। वह चूहे का बच्चा हार्प के तारों पर ऊपर नीचे घूमता रहा जिससे हार्प में से आवाज निकलती रही और इवान की बहिन को पता भी नहीं चला कि उसका भाई वहाँ से चला गया है।

जब उसने अपने दाँत तेज़ कर लिये तो वह दौड़ी दौड़ी कमरे में आयी पर वहाँ तो कोई था ही नहीं। चूहे का बच्चा भी वहाँ से भाग कर अपने बिल में छिप गया था।

अब वह जादूगरनी तो बहुत गुस्सा थी सो वह इवान का पीछा करने के लिये तैयार हुई।

इवान ज़ारेविच ने अपने पीछे शोर सुना तो पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि उसकी बहिन उसको पकड़ने वाली हो रही है उसने

[71] Harp is a western stringed musical instrument. See its picture above.

तुरन्त ही बुढ़ियों का दिया हुआ रूमाल हिला दिया। उसके पीछे एक बहुत ही गहरी झील पैदा हो गयी।

जादूगरनी ने उसे तैर कर पार करने का फैसला किया। जब वह उसे तैर कर पार कर रही थी इवान वहाँ से बहुत दूर भाग लिया। पर जादूगरनी बहुत तेज़ थी सो वह फिर से उसके पास तक आ पहुँची।

वरतोडूब को लगा कि इवान अपनी बहिन से बच कर भागा जा रहा है सो उसने उसकी सहायता करने के लिये उस जादूगरनी के रास्ते में बहुत सारे ओक के पेड़ रख दिये और उनको उसके रास्ते में चक्कर बना कर घुमा दिया। सो पहले उसको सड़क साफ करनी पड़ी उसके बाद ही वह आगे बढ़ सकी।

इस बीच इवान ज़ारेविच फिर से काफी आगे भाग गया मगर जादूगरनी ने उसे फिर से पकड़ लिया। इस बार वरतोगोर ने कई बड़े बड़े पहाड़ उठा कर उसके रास्ते में रख दिये।

यह देख कर जादूगरनी बहुत गुस्सा हुई पर उसने इवान का पीछा करना नहीं छोड़ा। वह पहाड़ों पर चढ़ गयी और एक बार फिर वह इवान के पास तक पहुँच गयी।

वह चिल्लायी — "तुम इस बार मेरे हाथों से नहीं बच सकते।"

अब तक वह सूरज की बहिन के महल में आ चुका था।

वह चिल्लाया — "सूरज सूरज अपनी बड़ी बड़ी खिड़कियाँ खोलो।"

सूरज ने अपनी बड़ी खिड़की खोली और इवान अपने घोड़े से उसकी खिड़की में कूद गया। जादूगरनी बहिन ने सूरज से उसको अपना भाई देने के लिये कहा पर सूरज ने उसे नहीं दिया।

तब जादूगरनी ने कहा — "इवान ज़ारेविच को तराजू के एक पलड़े पर खड़े हो जाना चाहिये और मैं उसके दूसरे पलड़े पर खड़ी हो जाऊँगी। अगर मैं उससे भारी निकली तो मैं उसे खा जाऊँगी और अगर वह मुझसे भारी निकले तो वह मुझे खा जाये।"

सो एक तराजू रखवायी गयी। पहले उसके एक तरफ इवान ज़ारेविच बैठा और फिर दूसरी तरफ जादूगरनी बैठी। जैसे ही उसने तराजू के दूसरे पलड़े पर अपना पैर रखा कि इवान को एक झटका लगा और वह आसमान में उड़ गया और सूरज के कमरे में जा गिरा। जबकि जादूगरनी जमीन पर ही रह गयी।

14 नहीं जानता[72]

यह कहानी शुरू होती है एक भूरे घोड़े एक कत्थई घोड़े और एक अक्लमन्द फैलोब[73] से। बूयान टापू[74] के समुद्र के किनारे एक भुना हुआ बैल खड़ा था और उसके पीछे थी कुटी हुई लहसुन। उसके एक तरफ मॉस काटो और दूसरी तरफ चटनी में डुबो कर खा लो।

एक बार की बात है कि एक सौदागर रहता था उसके एक बेटा था। जब वह बड़ा हो गया तब वह उसको दूकान ले जाने लगा। अब एक दिन हुआ यह कि उस सौदागर की पहली पत्नी मर गयी तो उसने दूसरी शादी कर ली।

शादी के कुछ महीने बाद सौदागर ने विदेश यात्रा का प्रोग्राम बनाया उसने जहाज़ों में अपना सामान भरा अपने बेटे को घर की देखभाल करने के लिये और अपनी दूकान सॅभालने के लिये कहा तो बेटे ने कहा — "पिता जी जब आप जायें तब मेरे लिये मेरी किस्मत ले कर आइयेगा।"

सौदागर बोला — "मेरे प्यारे बेटे वह मुझे कहॉ मिलेगी?"

बेटा बोला — "उसको ढूँढने के लिये आपको दूर नहीं जाना पड़ेगा। जब आप कल सुबह उठें तो दरवाजे पर खड़े हो जाइयेगा

---

[72] Donotknow – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[73] Wise Fallow-Bay

[74] Buyan Island – a mythical Island. This name is mentioned in Norse mythology too.

और जो भी सबसे पहली चीज़ आपको दिखायी दे जाये वही चीज़ मेरे लिये खरीद लीजियेगा और मुझे दे दीजियेगा।"

"ठीक है बेटा।"

अगले दिन पिता सुबह सवेरे जल्दी ही उठा और दरवाजे के बाहर जा कर खड़ा हो गया। अब पहली चीज़ उसको क्या दिखायी दी? वह था एक किसान जो एक दुखी से खुजली वाले घोड़े के बच्चे को बेचने के लिये लिये जा रहा था।

सौदागर ने उसका सौदा कर लिया और एक चॉदी के रूबल[75] में उसे खरीद लिया। वह उसको मकान के ऑगन में ले गया और उसको अस्तबल में रख दिया।

उसके बेटे ने उससे पूछा — "पिता जी आपको मेरी किस्मत से क्या मिला।"

पिता दुखी आवाज में बोला — "बेटा मुझे तुम्हारी किस्मत से एक बहुत ही नीची चीज़ मिली।"

"ऐसा ही होना था। जो भगवान ने हमारी किस्मत में लिखा है हमको वही भुगतना होता है।"

उसके बाद उसका पिता अपने जहाज़ ले कर विदेश चला गया और उसका बेटा दूकान पर बैठ कर अपना काम करने लगा। उसकी यह आदत पड़ गयी थी कि वह घर से दूकान जाते समय

[75] Rouble is a Russian currency

और दूकान से घर जाते समय एक बार उस घोड़े के बच्चे को जरूर देखता जाता था।

उसकी सौतेली माँ अपने सौतेले बेटे को बिल्कुल प्यार नहीं करती थी और यह जानने के लिये ज्योतिषियों के चक्कर में पड़ी रहती कि वह उससे कैसे छुटकारा पाये।

आखिर उसको एक अक्लमन्द बुढ़िया मिल गयी जिसने उसको एक जहर दिया और उससे कहा कि वह उसे दरवाजे की देहरी के नीचे तब रख दे जब उसका सौतेला बेटा घर आये।

सो जब उसका बेटा दूकान से घर लौटा तो पहले वह अपने घोड़े के बच्चे को देखने के लिये अस्तबल में गया। आज उसने देखा कि उसका घोड़ा रो रहा था। उसने उसको सहलाया पुचकारा और उससे पूछा — "क्या बात है मेरे प्यारे घोड़े तुम क्यों रोते हो?"

घोड़ा बोला — "ओ सौदागर के बेटे इवान, मेरे प्यारे मालिक। मैं क्यों न रोऊँ? तुम्हारी सौतेली माँ तुमको मारने की सोच रही है। जब तुम घर में घुसो तो तुम्हारे पास जो कुत्ता है तुम उसे पहले अन्दर घुसाना तब तुम्हें पता चलेगा कि तुम पर क्या गुजरने वाली थी।"

सौदागर के बेटे ने उसकी यह बात सुनी और अपने कुत्ते को अपने से पहले घर में घुसाया जैसे ही उसने घर की देहरी पार की उसके तो चिथड़े चिथड़े हो गये।

सौदागर के बेटे ने अपनी सौतेली मॉ को यह बिल्कुल पता नहीं चलने दिया कि घर के दरवाजे पर क्या हुआ था और अगले दिन अपनी दूकान पर चला गया।

सौतेली मॉ फिर से उस बुढ़िया के पास गयी तो उस बुढ़िया ने एक और जहर बनाया और उसे देते हुए उससे कहा कि वह उसे जानवरों की पानी पीने वाली टंकी में डाल दे।

शाम को जब सौदागर का बेटा घर लौटा तो वह फिर से अपने घोड़े को देखने के लिये गया तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि घोड़ा आज भी ऑसू बहा रहा था। उसने उसकी कमर थपथपा कर पूछा — "ओ मेरे अच्छे घोड़े आज तुम क्यों रोते हो?"

घोड़े ने रोते हुए जवाब दिया — "ओ मेरे प्यारे इवान, सौदागर के बेटे, मैं क्यों न रोऊॅ। मैंने आज बहुत ही बदकिस्मती की बात सुनी है कि तुम्हारी सौतेली मॉ तुम्हें मारना चाहती है।

देखना जब तुम अपने कमरे में जाओगे और खाना खाने के लिये मेज पर बैठोगे तो तुम्हारी मॉ तुम्हारे लिये एक गिलास में पानी लायेगी। तुम उसको पीना मत बल्कि उसको खिड़की से बाहर फेंक देना। जब तुम उसको बाहर देखोगे तो तुम्हें अपने आप पता चल जायेगा कि तुम्हारा क्या होना था।"

सौदागर के इवान के बेटे ने वैसा ही किया जैसा उसके घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। उसने बाहर देखा तो उसने देखा कि जहॉ जहॉ पानी पड़ा था वहॉ वहॉ धरती फट गयी थी।

उसने अपनी मॉ से इस बारे में कुछ भी नहीं कहा सो उसने सोचा कि इवान को उसके बारे में कुछ भी नहीं पता।

तीसरे दिन सुबह वह फिर से अपनी दूकान चला गया और उसकी सौतेली मॉ फिर से उस बुढ़िया के पास चली गयी। इस बार बुढ़िया ने उसको एक जादुई कमीज दी।

शाम को जब वह दूकान से बाहर निकला तो हमेशा की तरह से वह अपने घोड़े से मिलने गया तो उसने देखा कि उसका अच्छा घोड़ा उससे मिलने के लिये तैयार खड़ा है पर रो रहा है। उसने फिर पूछा — "मेरे प्यारे घोड़े अब तुम क्यों रोते हो?"

घोड़ा बोला — "इवान मैं न रोऊॅ तो क्या करूॅ। क्या मुझे मालूम नहीं है कि तुम्हारी सौतेली मॉ तुमको मारना चाहती है। अब तुम मेरी सुनो जो मैं तुमसे कहने जा रहा हूॅ।

जब तुम घर जाओगे तो तुम्हारी मॉ तुमसे नहाने के लिये कहेगी। फिर वह एक लड़के को तुम्हारे लिये एक कमीज भेजेगी। तुम उसको खुद मत पहनना बल्कि उसे लड़के के ऊपर ही डाल देना और फिर देखना कि क्या होता है।"

सो सौदागर का बेटा ऐटिक[76] तक गया तो वहॉ उसकी सौतेली मॉ आयी और बोली — "क्या तुम आज भाप नहान लेना पसन्द करोगे। उसके लिये सब तैयार है।"

[76] Attic is the room in a house at its highest level. See its picture above.

इवान बोला "ठीक है।" और वह नहाने वाले कमरे में चला गया। उसके जल्दी ही बाद एक लड़का उसके लिये एक कमीज ले कर आ गया। घोड़े की सलाह के अनुसार जैसे ही सौदागर के बेटे ने उस लड़के को वह कमीज पहनायी उसी पल उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और वह नीचे गिर पड़ा।

सौदागर के बेटे ने उसके ऊपर से कमीज उतारी और उसको ऑगीठी में फेंक दिया। बच्चा तो ज़िन्दा हो गया पर उस ऑगीठी के टुकड़े टुकड़े हो गये।

सौतेली मॉ को लगा कि उसका कोई काम बन नहीं रहा है सो वह फिर से उस बुढ़िया के पास गयी और उससे कोई अच्छी सलाह मॉगी जिससे वह अपने सौतेले बेटे को मार सके।

बुढ़िया बोली — "जब तक उसका घोड़ा ज़िन्दा है तब तक कुछ नहीं किया जा सकता। तुम एक काम करो कि तुम बीमार पड़ने का बहाना करो और जब तुम्हारे पति आ जायें तब तुम उनसे कहना कि "मैंने एक सपना देखा है कि इस घोड़ी की गर्दन कटवा दी जाये और इसका जिगर निकाल कर मेरे शरीर पर मलवा दिया जाये तभी मेरी यह बीमारी जायेगी।"

कुछ समय बाद सौदागर अपने विदेशी व्यापार से वापस आया तो उसका बेटा उससे मिलने बाहर गया।

पिता ने पूछा — "कैसे हो मेरे बेटे? घर पर सब ठीक है?"

बेटा बोला — "बाकी तो सब ठीक है बस मॉ थोड़ी बीमार है।"

सो सौदागर ने अपना सामान उतारा और घर में घुसा। वहॉ उसने देखा कि उसकी पत्नी बिस्तर में लेटी कराह रही है। पूछने पर उसने कहा मैं तभी ठीक हो सकती हूॅ जब तुम मेरा सपना पूरा करो।"

सौदागर तुरन्त ही उसका सपना पूरा करने पर राजी हो गया। उसने अपने बेटे को तुरन्त बुलवाया और उससे कहा — "बेटे मुझे अब तुम्हारे घोड़े का गला काटना पड़ेगा क्योंकि मुझे अपनी पत्नी को ठीक करना है।"

यह सुन कर सौदागर का बेटा इवान बहुत ज़ोर से रो पड़ा और बोला — "पिता जी क्या आप मेरी अखिरी किस्मत भी ले लेना चाहते है?" इतना कह कर वह अस्तबल में चला गया।

घोड़े ने उसे देखा तो बोला — "मेरे प्यारे मास्टर। मैंने तुमको तीन बार मरने से बचाया है। मेहरबानी कर के अपने पिता से कहो कि मेरे मारे जाने से पहले तुम मुझ पर आखिरी बार सवारी कर के मैदान में अपने साथियों के साथ खेलना चाहते हो।"

सो बेटे ने अपने पिता से पूछा कि वह उस घोड़े पर सवार हो कर मैदान में अपने साथियों के साथ खेलना चाहता है। पिता ने इजाज़त दे दी। वह घोड़े पर चढ़ा मैदान की तरफ चला और अपने साथियों की तरफ चला गया।

उसके बाद उसने अपने पिता को एक इस तरह की चिट्ठी भेजी — "आप मेरी सौतेली मॉ को बारह रस्सियों के कोड़े से मारें तभी उनका इलाज कर पायेंगे। यही उनके इलाज का सबसे अच्छा तरीका है।"

यह चिट्ठी तो उसने अपने एक साथी के हाथ अपने पिता को भेज दी और खुद वह विदेश चला गया।

सौदागर ने बेटे की भेजी चिट्ठी पढ़ी और अपनी पत्नी को बारह रस्सी वाले कोड़े से ठीक करना शुरू कर दिया। वह बहुत जल्दी ठीक हो गयी।

सौदागर का बेटा मैदान में पहुॅचा तो उसने देखा कि वहॉ तो बहुत सारे सींगों वाले जानवर चर रहे हैं। यह देख कर भला घोड़ा बोला — "इवान अब मुझे अपने रास्ते जाने दो। तुम मेरी पूॅछ से तीन बाल तोड़ लो। जब भी तुम्हें मेरी सेवा की जरूरत पड़े तो तुम उन तीनों बालों में से एक बाल जला देना। मैं तुम्हारे सामने तुरन्त ही ऐसे प्रगट हो जाऊॅगा जैसे घास के सामने पत्ती।

पर ओ भले नौजवान तुम अभी तो किसी चरवाहे के पास जाओ और उससे एक बैल खरीद लो। उसको तुम काट डालो और उसकी खाल पहन लो। ब्लैडर[77] अपने सिर पर पहन लो। और फिर तुम जहॉ भी जाओगे वहीं तुमसे लोग सवाल पूछेंगे तो तुम उन सब सवालों का एक ही जवाब देना "नहीं जानता"।

[77] Bladder is a part of the body in which urine gets collected to be evacuated later.

सौदागर के बेटे इवान ने अपने घोड़े को आजाद छोड़ दिया। खुद उसने बैल की खाल ओढ़ ली एक ब्लैडर अपने सिर पर रख लिया और समुद्र के पार चल दिया।

नीले समुद्र पर एक जहाज़ चल रहा था। जहाज़ के ऊपर काम करने वालों ने इस नयी सी चीज़ को देखा – एक जानवर जो जानवर नहीं था और एक आदमी जो एक आदमी भी नहीं था। उसके सिर पर एक ब्लैडर रखा था और उसने बालों वाली खाल ओढ़ रखी थी।

सो वे किनारे की तरफ आ गये। वे एक छोटी नाव खे कर किनारे तक आये थे उन्होंने वहॉ आ कर उसके बारे में पूछताछ करनी शुरू की पर सौदागर के बेटे इवान ने केवल एक ही जवाब दिया "नहीं जानता"।

"अगर ऐसा है तो इसका मतलब यह है कि तुम्हारा नाम भी "नहीं जानता" होगा।"

उन लोगों ने उसको उठा लिया और अपने जहाज़ में बिठा कर अपने राजा के पास ले चले। शायद वे ज़्यादा दूर चले या फिर कम दूर चले आखिर वे एक बड़े शहर पहुँच गये। वहॉ पहुँच कर जहाज़ वालों ने उस "नहीं जानता" के बारे में राजा को बताया।

राजा ने उसको अपने सामने पेश होने का हुक्म दिया। सो वे उसे राजा के महल में ले कर आये तो लोग जानी और अनजानी सारी जगहों से उसके देखने के लिये वहॉ आये।

राजा ने उससे पूछा — "तुम किस तरह के आदमी हो?"

"नहीं जानता"

"तुम किस देश से आये हो?"

"नहीं जानता"

"तुम किस जाति को हो और तुम किस जगह के हो?"

"नहीं जानता"

सो राजा ने उस "नहीं जानता" को अपने बागीचे में पुतले की जगह खड़ा कर दिया। और अपने नौकरों को कह दिया कि वे उसको उसकी शाही रसोई से खाना खिलायें।

इस राजा की तीन बेटियॉ थीं। उसकी दोनों बड़ी बेटियॉ सुन्दर थीं पर तीसरी बेटी बहुत सुन्दर थी। बहुत जल्दी ही अरब के राजा के बेटे ने उसकी तीसरी बेटी का हाथ मॉगना शुरू कर दिया। उसने राजा को धमकियों भरी कुछ चिट्ठियॉ भी लिखीं।

जैसे "अगर तुम मुझे अपनी तीसरी बेटी राजी से नहीं दोगे तो मैं उसे जबरदस्ती ले जाऊॅगा।"

राजा को यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी सो उसने अरब के राजकुमार को यह जवाब दिया — "तुम लड़ाई के लिये तैयार हो जाओ फिर जो होगा देखा जायेगा।" सो राजकुमार ने एक बहुत बड़ी सेना इकट्ठी की और लड़ने चल दिया।

"मैं नहीं जानता" ने अपनी बैल की खाल को झटक कर उतारा अपने सिर पर से ब्लैडर उतारा और मैदान में गया। अपने घोड़े का एक बाल निकाला और आग में फेंक दिया।

फिर नाइट[78] जैसी एक सीटी बजायी और घोड़े को बुलाया। पता नहीं कहॉ से एक घोड़ा उसके सामने प्रगट हो गया। उसके प्रगट होने से धरती कॉप उठी।

"कहो बहादुर नौजवान। तुम मुझे इतनी जल्दी क्यों बुलाना चाहते थे?"

इवान बोला — "जाओ लड़ाई की तैयारी करो।"

सो "नहीं जानता" उस अच्छे घोड़े पर बैठा तो घोड़े ने पूछा — "मैं तुम्हें कहॉ ले जाऊॅ – घुमाने, पेड़ों के नीचे और जंगल के ऊपर?"

"तुम मुझे जंगलों के ऊपर ले चलो।"

सो घोड़ा जमीन से ऊपर उठा और जंगल के ऊपर उड़ चला। "नहीं जानता" ने दुश्मन से एक तलवार ली किसी का सुनहरा हैल्मैट लिया।

ढक्कन से अपना चेहरा ढक लिया और दुश्मनों की सेना को तहस नहस करने लगा। उसने दुश्मन की सेना के सिर ऐसे काटने शुरू कर दिये जैसे भूसा काटते हैं।

राजा और राजकुमार दोनों उसको बड़े आश्चर्य से देख रहे थे।

[78] Knight is a high rank in Imperial army.

"यह कितना ताकतवर हीरो है। यह कहॉ से आया। क्या यह बहादुर इगोरी[79] है जो हमारी सहायता करने आया है।"

पर वे यह सोच ही नहीं सके कि यह "मैं नहीं जानता" है जिसको राजा ने पुतले की जगह अपने बागीचे में खड़ा कर रखा था। "नहीं जानता" ने बहुत सारे दुश्मन मार दिये। और जितने उसने मारे उससे कहीं ज़्यादा उसके घोड़े के नीचे आ कर कुचले गये।

उसने केवल अरब राजकुमार को ही ज़िन्दा छोड़ा बाकी सबको मार दिया। दस आदमी और छोड़ दिये ताकि वे उसको घर ले जा सकें। इस भयानक लड़ाई के बाद वह शहर की दीवार की तरफ लौटा और राजा से बोला — "योर मैजेस्टी क्या आप मेरी सेवा से खुश हुए?"

राजा ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसको मेहमान की तरह बुलाया पर "नहीं जानता" घर के अन्दर नहीं आया। वह मैदान की तरफ भाग गया और अपने भले घोड़े को वापस भेज दिया। खुद वह घर चला गया।

उसने अपनी बैल की खाल फिर से ओढ़ ली ब्लैडर फिर से सिर पर रख लिया। और जैसे पहले घूम रहा था उसी तरह से फिर से बागीचे में जा कर घूमने लगा।

[79] Egori is the name of a brave warrior

कुछ दिन गुजर गये – बहुत ज्यादा नहीं तो बहुत कम भी नहीं कि अरब के राजकुमार ने राजा को फिर से लिखा कि अगर वह अपनी सबसे छोटी बेटी को उसे नहीं देंगे तो वह उसका सारा राज्य जला देगा और राजकुमारी को बन्दी बना कर ले जायेगा।

राजा इससे भी खुश नहीं था। उसने उसे लिखा कि वह उसका अपने लड़ाई के मैदान में इन्तजार करेगा। सो एक बार फिर से अरब के राजकुमार ने बहुत सारी सेना इकट्ठी की और राजकुमारी के पिता को चारों तरफ से घेर लिया। तीन ताकतवर नाइट्स उसके सामने खड़े थे।

"नहीं जानता" को जब इस बात का पता चला तो उसने अपनी बैल की खाल उतार फेंकी ब्लैडर अपने सिर से उतार दिया और घोड़े का एक बाल आग में फेंक दिया और अपने भले घोड़े को बुलाया।

पता नहीं कहॉ से उसका घोड़ा तुरन्त ही वहॉ आ कर खड़ा हो गया। वह उसको मैदान की तरफ ले गया।

एक नाइट उससे लड़ने के लिये आया तो वे दोनों अपने भालों से लड़ने के लिये तैयार हो गये। नाइट ने "नहीं जानता" को इतनी ज़ोर से मारा कि वह मुश्किल से खड़ा रह सका।

फिर वह दौड़ा और एक नौजवान की तरह से भागा। उसने नाइट का सिर काट दिया और उसको यह कहते हुए ऊपर फेंक दिया — "तुम सबके सिर ऐसे ही उड़ जायेंगे।"

फिर दूसरा नाइट आया तो उसके साथ भी ऐसा ही हुआ।

इसके बाद तीसरा नाइट आया तो "मैं नहीं जानता" उसके साथ पूरे एक घंटे तक लड़ता रहा। इस नाइट ने इसका एक हाथ काट कर खून निकाल दिया पर "मैं नहीं जानता" ने उसका सिर ही काट दिया और उसको दूसरे सिरों के साथ फेंक दिया।

यह देख कर अरब राजकुमार की सारी सेना कॉप गयी और मैदान छोड़ कर भाग गयी।

उसी समय राजा और उसकी बेटी शहर की दीवार पर आये तो राजकुमारी ने देखा कि उस बहादुर नौजवान के सिर से बहुत खून बह रहा है तो उसने अपनी गर्दन से एक स्कार्फ निकाला और उसके घाव पर खुद ही बॉध दिया।

राजा ने उसको फिर से अपने मेहमान की तरह बुलाया तो "मैं नहीं जानता" यह कह कर वहॉ से मैदान की तरफ चला गया कि "एक दिन मैं आऊॅगा पर अभी नहीं।"

उसने अपने घोड़े को वापस भेज दिया अपनी बैल की खाल ओढ़ ली ब्लैडर सिर पर पहन लिया और बागीचे फिर से पुतला बन कर घूमने लगा।

फिर से कुछ समय गुजर गया – बहुत ज़्यादा नहीं तो बहुत कम भी नहीं। राजा की दोनों बड़ी बेटियों की शादी अच्छे ज़ारेविचों से हो गयी थी। अब वह एक बड़ी तैयारी में था। मेहमान लोग बागीचे

में घूमने आने लगे थे। उन्होंने वहॉ "नहीं जानता" को देखा तो उनके मुॅह से निकला यह किस तरह का भयानक आदमी है।

तो राजा बोला — "यह "नहीं जानता" है। मैं इसको बागीचे में पुतले के रूप में इस्तेमाल कर रहा हूॅ। यह मेरे सेब के पेड़ों को चिड़ियों से बचाता है।"

इतने में राजकुमारी ने "नहीं जानता" के हाथ की तरफ देखा तो उसे वहॉ उसके घाव पर अपना स्कार्फ नजर आया। उसका चेहरा उसे देख कर लाल हो गया पर वह बोली एक शब्द भी नहीं।

उस दिन के बाद से वह बागीचे में सैर के लिये और "नहीं जानता" को देखने के लिये आने लगी। उसने खुशियों और त्यौहार पर कोई ध्यान नहीं दिया।

उसके पिता ने पूछा — "बेटी तुम यह रोज कहॉ जाती हो।"

राजकुमारी बोली — "पिता जी मैं आपके साथ तो बहुत दिन रही हूॅ और मैं अक्सर ही बागीचे में घूमती रही हूॅ पर मैंने इतनी सुन्दर चिड़िया यहॉ कभी नहीं देखी जितनी कि आज देखी है।"

फिर उसने अपने पिता से विनती की कि वह उसकी शादी "नहीं जानता" से कर दें। उसने कहा कि अगर वह उसकी शादी उससे नहीं करेंगे तो वह फिर किसी और से शादी नहीं करेगी और ज़िन्दगी भर कुॅआरी ही रहेगी।

सो उसका पिता राजी हो गया और उसने उसकी शादी "नहीं जानता" से पक्की कर दी।

कुछ दिन बाद अरब के राजकुमार ने राजा को तीसरी बार लिखा कि वह अपनी तीसरी बेटी की शादी उससे कर दें वरना वह उनका सारा राज्य नष्ट कर देगा और राजकुमारी को भगा कर ले जायेगा।

राजा ने कहलवाया कि उसने अपनी बेटी की शादी तो पहले से ही पक्की कर दी है। अगर तुम्हारी इच्छा है तो तुम आओ और आ कर देख लो।

सो राजकुमार वहॉ आया आर जब उसने देखा कि उसकी शादी कैसे भयानक आदमी से पक्की की गयी है तो उसने सोचा कि वह उस "नहीं जानता" का कत्ल कर देगा। सो उसने उसको लड़ाई के लिये ललकारा।

"नहीं जानता" ने अपनी बैल वाली खाल उतार दी ब्लैडर अपने सिर से उतार दिया अैर अपने घोड़े का आखिरी बाल आग में फेंक कर उसको आवाज लगायी। घोड़ा भी तुरन्त ही वहॉ आ गया।

लो उस पर बैठा सवार तो इतना सुन्दर राजकुमार था कि जिसकी सुन्दरता के बारे में न कोई कलम लिख सकती है और न किसी किताब में उसके बारे में लिखा मिल सकता है।

दोनों एक खुले मैदान में इकट्ठा हुए। सौदागर के बेटे ने राजकुमार को मार दिया। उसके बाद राजा को पता चला कि "नहीं

जानता" कोई भयानक आदमी नहीं था बल्कि एक शानदार बहादुर नाइट था।

उसके बाद राजा ने अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दी और उसको अपना वारिस घोषित कर दिया। सौदागर का बेटा इवान अपनी पत्नी के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहा। वह अपने पिता को अपने साथ रहने के लिये ले गया पर अपनी सौतेली मॉ को सजा दी।

List of Stories of “When Animals Guided”

1. The Green Knight
2. The Enchanted Snake
3. The Snake Prince
4. Rushen Coatie
5. A Pretty Girl and Seven Jealous Women
6. The Story of Swet-Basanta
7. The Story of the Prince Sobur
8. The Lame Dog
9. The Unjust King and Wicked Goldsmith
10. Nagray and Himal
11. The Story of a Hiraman
12. Brave Princess
13. The Witch and the Sister of the Sun
14. Donotknow

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

पुस्तक सूची प्राप्त करने के लिये इस पते पर लिखें hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022